अंकुर

संयुक्तांक - 10 व 11
वर्ष - 2016 व 2017

गृह पत्रिका

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था
अणुशक्तिनगर मुंबई

विश्व हिंदी दिवस-2017 कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ करते डॉ. दामोदर खडसे, हिंदी विद्वान, श्री रजनीश प्रकाश, अध्यक्ष, प.ऊ.शि.सं., श्री स्वप्नेश कुमार मल्होत्रा, सचिव, प.ऊ.शि.सं., श्री अचलेश्वर सिंह, संयुक्त निदेशक, प.ऊ.वि. और श्री जी. एस. आर. के. वी. शर्मा, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, प.ऊ.शि.सं.

हिंदी प्रशिक्षण पारंगत पाठ्यक्रम वर्ष 2017 के शुभारंभ अवसर पर प.ऊ.शि.सं. के अध्यक्ष, सचिव, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, प्रधानाचार्य एवं प्रमुख, शैक्षणिक इकाई और राजभाषा विभाग के हिंदी प्राध्यापक

अनुक्रमणिका

क्र. स.	विषय	रचनाकार का नाम	पृ. सं.
1.	संरक्षक की कलम से...		iii
2.	संरक्षक की कलम से...		iv
3.	संपादकीय मार्गदर्शक की कलम से...		v
4.	संपादकीय मार्गदर्शक की कलम से...		vi
5.	संपादकीय...		vii
6.	गांधी जी: एक बहुआयामी महापुरुष	श्री गिरेन्द्र पाल शर्मा	01
7.	मोबाइल का मायाजाल	श्री दीपक कुमार	03
8.	कुछ सीखने योग्य बातें	श्री डी. आर. सोनिया	04
9.	मन बदला	श्रीमती मिता साहा	05
10.	मासूम सी जिद कवि बनने की	श्री दीपक जॉन	05
11.	काश ! मुझे अमृत मिल गया होता	ज्योति अविनाश पेंटे	06
12.	पद्यात्मक समास	डॉ. धनुर्धर झा	07
13.	तड़प	श्रीमती सुनीता सुचारी	08
14.	शुभकामना	श्री मिथिलेश कुमार झा	08
15.	मैं एक औरत हूँ	श्री रामवीर सिंह	09
16.	ये जिंदगी	श्री रामवीर सिंह	09
17.	गुलामी और आज़ादी	श्री आर. एस. सिंह	10
18.	मेहनत करना सीखो	श्रीमती मायादेवी	10
19.	गुरू	श्री संजीत	11
20.	डिजिटल इंडिया	श्री संजीत	11
21.	कुछ कर के तो देखो, कुछ करके देखो	श्री अनिल कुमार श्रीवास्तव	12
22.	कल, आज और कल	श्री राहुल सोनी	13
23.	कल, आज और कल	श्रीमती मुदिता बाजपेई	15
24.	कल, आज और कल	श्रीमती अमृत मल्होत्रा	15
25.	सामाजिक भारत - सांस्कृतिक भारत	श्रीमती चैताली लोहार	17
26.	सामाजिक भारत - सांस्कृतिक भारत	श्रीमती आमला पंडित	17
27.	सामाजिक भारत - सांस्कृतिक भारत	श्री विश्वास माने	19
28.	सबसे बड़ा रुपैया	श्रीमती भारती एस.	20
29.	सबसे बड़ा रुपैया	श्रीमती मालती मुरुगन	21
30.	सबसे बड़ा रुपैया	सुश्री सरीफा पिनेरो	22

क्र. स.	विषय	रचनाकार का नाम	पृ. सं.
31.	हमसे ना टकराना - भारत-चीन डोकलाम विवाद	श्री राहुल सोनी	23
32.	हमसे ना टकराना - भारत-चीन डोकलाम विवाद	श्रीमती सुनीता रानी कुलपति	24
33.	हमसे ना टकराना - भारत-चीन डोकलाम विवाद	श्रीमती अंजना माझी	25
34.	एकता और सद्भाव	श्रीमती चैताली लोहार	26
35.	एकता और सद्भाव	श्री विश्वास माने	27
36.	एकता और सद्भाव	श्रीमती आमला पंडित	27
37.	बेटियाँ	श्रीमती भारती एस.	29
38.	बेटियाँ	श्रीमती शोभना डी. पनीकर	29
39.	बेटियाँ	सुश्री सरीफा पिनेरो	30
40.	प्रदूषण समस्याएँ एवं समाधान	श्रीमती अमृत मल्होत्रा	31
41.	प्रदूषण समस्याएँ एवं समाधान	श्रीमती सिसेलिया नेरुलकर	34
42.	प्रदूषण समस्याएँ एवं समाधान	श्रीमती अपर्णा टी. बालाजी	36
43.	आधुनिक भारत की नारी	श्रीमती रूपा मंगेश सावंत	37
44.	आधुनिक भारत की नारी	श्रीमती संध्या आंब्रे	38
45.	आधुनिक भारत की नारी	श्रीमती पुष्पा भास्कर चन्दन	40
46.	विमुद्रीकरण (नोटबंदी) - कालाधन पर लगाम हेतु कितना कारगर	श्री योगेन्द्र कुमार शास्त्री	41
47.	विमुद्रीकरण (नोटबंदी) - कालाधन पर लगाम हेतु कितना कारगर	श्रीमती ममता मिश्रा	43
48.	विमुद्रीकरण (नोटबंदी) - कालाधन पर लगाम हेतु कितना कारगर	श्रीमती भारती एस. कुमार	44
49.	स्वच्छ भारत	श्रीमती रूपा सावंत	45
50.	स्वच्छ भारत	श्री किरण सुतार	46
51.	स्वच्छ भारत	श्रीमती शोभना डी. पनीकर	47
52.	हिंदी पखवाड़ा आयोजन -2016		48
53.	हिंदी पखवाड़ा आयोजन -2017		53
54.	हिंदी प्रशिक्षण / हिंदी कार्यशाला		57-60
55.	ऑनलाइन हिंदी प्रश्नोत्तरी		61
56.	राजभाषा निदेश		62
57.	उपाधियाँ और डिप्लोमा/ वाक्यांश और अभिव्यक्तियां		64-67
58.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति		68

रजनीश प्रकाश
अध्यक्ष
Rajnish Prakash
Chairman

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था
(परमाणु ऊर्जा विभाग का स्वायत्त निकाय, भारत सरकार)
ATOMIC ENERGY EDUCATION SOCIETY
(An autonomous body under Department of Atomic Energy, Govt. of India)

केंद्रीय कार्यालय,
वेस्टर्न सेक्टर,
अणुशक्तिनगर,
मुंबई–400 094.
Central Office,
Western Sector,
Anushaktinagar,
Mumbai - 400 094.

संरक्षक की कलम से...

मन हर्षित है कि परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की गृह-पत्रिका 'अंकुर' के दसवें अंक का प्रकाशन हो रहा है। संस्था में पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा नीति और आदेशों के कार्यान्वयन में एक साक्ष्य स्वरूप दस्तावेज है और इस बात का द्योतक है कि विगत वर्षों में संस्था के विद्यालयों में विद्यार्थी प्रवेश प्रक्रिया, शिक्षण शुल्क भुगतान प्रक्रिया और भर्ती प्रक्रिया जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में समयानुरूप परिवर्तन और डिजीटलीकरण होने के साथ-साथ हिंदी कार्यान्वयन कार्य भी निर्बाध गति से अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर है।

सांविधानिक दायित्व के साथ-साथ, हिंदी हमारी भाषाई और सांस्कृतिक एकता की भी परिचायक है। अत: हमारा सांविधानिक और नैतिक कर्तव्य है कि हम हिंदी का प्रयोग स्वयं करें और दूसरों को प्रोत्साहित करें।

इस अंक में अधिकारियों, शिक्षकों, कर्मचारियों के मन और मस्तिष्क में उमड़ते-घुमड़ते विचारों-सवालों का रचनाओं के रूप में रंग-बिरंगा संकलन किया गया है। रचनाओं में सरल-सहज भाषा और सामान्य बोलचाल के हिंदी शब्दों का प्रयोग किया गया है जिसका मैं प्रबल समर्थक हूँ।

'अंकुर' पत्रिका के इस अंक को अपने शब्द रंगों से आलोकित करने के लिए सभी रचनाकारों और संपादन मंडल को बधाई एवं सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ !

रजनीश प्रकाश

अध्यक्ष,
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

दूरभाष/Telephone: 91-22-2550 9730 (D), 25565049 फैक्स/Fax : 91-22-25556923
ई-मेल/E-mail: chairman-aees@nic.in
Website: http://www.aees.gov.in

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

(परमाणु ऊर्जा विभाग का स्वायत्त निकाय, भारत सरकार)

ATOMIC ENERGY EDUCATION SOCIETY

(An Autonomous Body under Department of Atomic Energy, Government of India)

स्वप्नेश कुमार मल्होत्रा
सचिव एवम्
राजा रमन्ना फैलो, प.ऊ.वि.

Swapnesh Kumar Malhotra
Secretary &
Raja Ramanna Fellow, D.A.E.

संरक्षक की कलम से ...

यह हर्ष का विषय है कि परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की गृह पत्रिका 'अंकुर' के दसवें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की श्रृंखला में यह एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इस प्रकार के प्रयासों से संस्था के अधिकारियों / शिक्षकों / कर्मचारियों को अपने दायित्वों के अतिरिक्त व्यक्तिगत रचनात्मकता प्रदर्शित करने का सुअवसर मिलता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अंकुर का यह अंक भी पिछले अंकों की भांति उन प्रतिभाओं को हमारे समक्ष प्रस्तुत करने में सफल रहेगा जिनकी हमें पूर्व जानकारी नहीं होती।

मुझे पूरी आशा है कि आने वाले समय में भी संस्था के अधिकारी व कर्मचारी गण इसी उत्साह के साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार का कार्य और अधिक उत्साह से करेंगे साथ ही मुझे इस बात में कोई शंका नहीं है कि अंकुर का प्रस्तुत अंक सभी पाठकों को रुचिकर, ज्ञानवर्धक व प्रेरणा दायक लगेगा सभी रचनाकारों, सम्पादक मंडल सदस्यों व समस्त पाठकों को मेरी शुभकामनाएँ

(स्वप्नेश कुमार मल्होत्रा)

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था, केंद्रीय कार्यालय, वेस्टर्न सेक्टर, अणुशक्तिनगर, मुंबई – 400 094.
Central Office, Western Sector, Anushaktinagar, Mumbai - 400 094.
दूरभाष/Telephone: 91-22-25556468, फैक्स/Fax: 91-22-25506093, ई–मेल/E-Mail: secretary-aees@nic.in

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

(परमाणु ऊर्जा विभाग का स्वायत्त निकाय, भारत सरकार)

केन्द्रीय कार्यालय, वेस्टर्न सेक्टर, प.ऊ.कें.वि.-6, अणुशक्तिनगर, मुंबई-400094

ATOMIC ENERGY EDUCATION SOCIETY

(An Autonomous Body under Department of Atomic Energy, Govt. of India)

Central Officer, Western Sector, AECS-6, Anushaktinagar, Mumbai-400094

मार्गदर्शक की कलम से ...

मुझे यह जानकार अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की गृह पत्रिका 'अंकुर' का प्रकाशन हो रहा है। जैसा कि विद्यालय को शिक्षा का मंदिर उपमा दी गई है। विद्यालय परिसर में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति स्वत: ही ज्ञान का भागीदार होता है। परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था में पठन-पाठन से लेकर सामान्य बोल-चाल में हिंदी की महत्ता सर्वत्र पुष्पित हो रही है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की गतिविधियों में समग्र रूप बृद्धि हुई है। परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था द्वारा प्रकाशित 'अुंकर' पत्रिका इस तथ्य को पृष्ठांकित करती है।

'अंकुर' के इस अंक में प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों को बधाईयां जिन्होंने अपनी लेखन प्रतिभा से राजभाषा हिंदी की समृद्धि में अपना योगदान दिया है।

मैं 'अंकुर' पत्रिका के सफल एवं सार्थक प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(श्रीकृष्ण शर्मा के.जे.वी.वी)

प्रधानाचार्य एवं प्रमुख शै. इ.

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

(परमाणु ऊर्जा विभाग का स्वायत्त निकाय, भारत सरकार)

केन्द्रीय कार्यालय, वेस्टर्न सेक्टर, प.ऊ.कें.वि.-6, अणुशक्तिनगर, मुंबई-400094

ATOMIC ENERGY EDUCATION SOCIETY

(An Autonomous Body under Department of Atomic Energy, Govt. of India)

Central Officer, Western Sector, AECS-6, Anushaktinagar, Mumbai-400094

मार्गदर्शक की कलम से ...

यह बड़ी खुशी की बात है कि परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की गृह पत्रिका 'अंकुर' के संयुक्तांक का प्रकाशन किया जा रहा है। गृहपत्रिका किसी भी केन्द्र के कर्मचारियों के भावों व विचारों को प्रस्तुत करने का एक सरल माध्यम होती है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था के केंद्रीय कार्यालय, केंद्रीय विद्यालयों व कनिष्ठ महाविद्यालयों के अधिकारियों, शिक्षकों, कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति सहज रुचि जागृत होगी तथा वे सृजनात्मक रूप में राजभाषा नीति के अनुपालन के उत्तरदायित्व का निर्वाहन करेंगे।

'अंकुर' पत्रिका के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं !

जी॰ एस॰ आर॰ के॰ वी॰ शर्मा॰

(जी.एस.आर.के.वी. शर्मा)
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था,
एवं
सदस्य सचिव, रा.भा.का.स.

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

(परमाणु ऊर्जा विभाग का स्वायत्त निकाय, भारत सरकार)

केन्द्रीय कार्यालय, वेस्टर्न सेक्टर, प.ऊ.कें.वि.-6, अणुशक्तिनगर, मुंबई-400094

ATOMIC ENERGY EDUCATION SOCIETY

(An Autonomous Body under Department of Atomic Energy, Govt. of India)

Central Officer, Western Sector, AECS-6, Anushaktinagar, Mumbai-400094

संपादकीय

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की वार्षिक गृह पत्रिका "अंकुर" का संयुक्त अंक 10 व 11 सुधी पाठकों को सौंपते हुए हमें अपार हर्ष एवं गौरव की अनुभूति हो रही है। प्रस्तुत अंक में परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था के शिक्षकों व पदाधिकारियों की रोचक एवं महत्वपूर्ण रचनाओं को कविता, लेख, कहानी आदि के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इन सभी कर्मठ रचनाकारों को हम हृदय से धन्यवाद देते हैं।

देखा जाए तो यह अंक साहित्यिक तथा सामाजिक विधाओं का मिला-जुला रूप है। इस अंक में राजभाषा नीति की मूल भावना- प्रोत्साहन व प्रेरणा द्वारा राजभाषा का कार्यान्वयन को केंद्र में रखते हुए प्रयास किया गया है कि ज्यादा से ज्यादा लेखों को इस पत्रिका में स्थान दिया जाए ताकि पाठकों के लिए उपयुक्त एवं लाभकारी होने के साथ-साथ कार्मिकों के बीच हिंदी लेखन में रुचि बढ़े। अधिक से अधिक मूल लेखन हिंदी में होने से राजभाषा के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति में निश्चय ही सफलता मिलेगी।

यद्यपि परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था के विद्यालय राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं विकास को दृष्टिगत रखते हुए अपने स्तर पर अपनी-अपनी गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन करते हैं, तथापि अपने सभी कार्मिकों को लेखन प्रतिभा प्रदर्षित करने और निखारने के लिए अंकुर सहज मंच प्रदान करता है। प्रस्तुत अंक प्रकाशन के लिए मैं संस्था के समस्त पदाधिकारीगण तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े प्रत्येक कार्मिक का सहृदय धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिनके भरपूर सहयोग से इस अंक का प्रकाशन संभव हो पाया है। "अंकुर" पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामनाओं सहित!

(श्याम बाबू)

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक एवं

संपादक, अंकुर

संरक्षक

श्री रजनीश प्रकाश
अध्यक्ष, प.ऊ.शि.सं.

श्री स्वप्नेश कुमार मल्होत्रा
सचिव, प.ऊ.शि.सं. एवं अध्यक्ष, रा.भा.का.स.

मार्गदर्शक

श्री कृष्ण शर्मा के.जे.वी.वी
प्रधानाचार्य एवं प्रमुख शै. इ.
एवं सदस्य, रा.भा.का.स.

श्री जी.एस.आर.के.वी.शर्मा
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी
एवं सदस्य सचिव, रा.भा.का.स.

संपादन

श्री श्याम बाबू
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक एवं
सदस्य, रा.भा.का.स.
प.ऊ.शि.सं., मुंबई

श्री दिलीप कुमार दास
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक एवं
सदस्य, रा.भा.का.स.
प.ऊ.शि.सं., मुंबई

श्री सी. एल. शर्मा
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक
प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई

श्रीमती मंगला खंडीझोड़
प्राथमिक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई

नोट - प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं । यह आवश्यक नहीं कि उनसे संपादक मंडल की सहमति हो ।

गांधी जी : एक बहुआयामी महापुरुष

श्री गिरेन्द्र पाल शर्मा
स्नातकोत्तर अध्यापक,
प.ऊ.क.म.वि., मुंबई

शब्द नहीं कर पाते हैं, समुचित सम्मान तुम्हारा,
भाव मूक हो जाते हैं, रुक जाती है स्वर धारा।
उठ-उठ कर गिर जाता, मेरी वीणा का कंपन,
किस भाषा में करूं, देव, मैं आज तुम्हारा बंधन।

बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी महात्मा गांधी आधुनिक युग के एक असाधारण महापुरुष थे। गांधी जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व विराट था। वे पंचतत्वों से निर्मित मानव शरीर मात्र नहीं थे बल्कि वे एक श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक, परम देशभक्त, सत्य अहिंसा के पुजारी, नैतिकता के पक्षधर, अत्यधिक मानवतावादी, सत्याग्रही, स्वतंत्रता के एकनिष्ठ साधक, जन्मजात लोकतंत्रवादी, स्वावलंबी, त्याग, संयम एवं सादगी की साक्षात मूर्ति थे। उनके जीवन का उद्देश्य था, सन्मार्ग पर चलकर मानव मात्र का कल्याण करना। वे जानते थे कि राष्ट्र रूपी पौधा तभी पल्लवित एवं पुष्पित होगा जब उस देश के नागरिक अपने परिश्रम रूपी खाद-पानी से उसे सिंचित करेंगे। वे समझने लगेंगे कि राष्ट्र ही उनका सुरक्षा कवच है। कवच मजबूत होगा तो उनकी सुरक्षा भी मजबूत होगी। गांधी जी का एक-एक पल राष्ट्र के लिए समर्पित था। वे सदैव अपने आचरण से नागरिकों को राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने के लिए प्रेरित करते रहते थे।

मानव जाति अनादि काल से ही सुख-शांति तथा समृद्धि के लिए प्रयत्न करती रही है, परन्तु वह अपने उद्देश्य में आजतक सफल नहीं हो सकी क्योंकि उन्होंने सत्य, अहिंसा, संयम जैसे गुणों का दृढ़तापूर्वक पालन नहीं किया। केवल भौतिक उन्नति पर जोर देते रहे। गांधी जी इतिहास में पहले व्यक्ति थे जिन्होंने आध्यात्मिकता के सिद्धांतों का सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन में सफलता पूर्वक प्रयोग किया। गांधी जी के दार्शनिक विचारों का निर्माण अचानक ही नहीं हुआ, इसके लिए उन्हें अनेक कष्ट उठाने पड़े। इन विचारो के निर्माण तथा विकास में इतिहास की अपनी परंपराएं रही हैं। वे परंपराएं हैं- गांधी जी का अपना जीवन और अनुभव तथा भारत व विश्व की स्थिति जिसमें गांधी जी ने अपनी भूमिका निभाई है।

गांधी जी एक कुशल राजनीतिज्ञ थे। गांधी जी ने अहिंसात्मक असहयोग आंदोलन चलाकर भारत के इतिहास का रुख ही बदल दिया । उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को क्रांतिकारी बनाकर स्वतंत्रता के लक्ष्य की ओर बढ़ना सिखाया। ब्रिटिश सरकार के ऊपर अहिंसात्मक शक्ति का संवैधानिक दबाव डाला तथा आंदोलन को लोकप्रिय बनाया। अंग्रेजो भारत छोड़ो तथा देश वासियों के लिए 'करो' या 'मरो' का संदेश दिया। गांधी जी की ललकार सारे देश में प्रतिध्वनित हुई। अभी तक जो आंदोलन शहर के केवल बुद्धिजीवी वर्ग तक ही सीमित था अब वह आंदोलन गांवों की आम जनता तक पहुंच गया और जागृति पैदा करने लगा। गांधी जी का अहिंसा विभिन्न रूपा थी, विरोधात्मक थी, इसमें सत्य का आग्रह था, आत्मा की आवाज़ थी। इसलिए चौरी-चौरा सत्याग्रह के समय मामूली हिंसा के प्रति विरोध प्रकट करते हुए गांधी जी ने आंदोलन वापस ले लिया था। इसलिए उन्होंने कहा था कि अहिंसा का मार्ग इतना आसान नहीं है। वह तलवार की धार पर चलने के समान है, जरा-सी गफलत हुई कि नीचे गिरे। अहिंसा मन में शांति, हृदय में उत्साह और जीवन में सफलता का पथ प्रशस्त करती है। राष्ट्र को सुखी, समृद्ध और विकासवान बनाती है।

गांधी जी सर्वधर्म समभाव में विश्वास रखते थे। देश विभाजन के समय अंग्रेजों की कूटनीति के कारण साम्प्रदायिक तनाव बढ़ गया था। परिणामस्वरूप हिंदू-मुसलमान दंगे होने लगे, चारों तरफ खून खराबा होने लगा। मार-काट, चोरी-डकैती की घटनाएं बढ़ गईं। ऐसे समय में गांधी जी ने हिंदू-मुस्लिम एकता का श्रीगणेश किया। उन्होंने उपवास

रखकर दंगे रोकने पर लोगों को मजबूर किया। मुसलमानों को राष्ट्रीय आंदोलन प्रवाह में प्रवाहित होने के लिए प्रेरित किया। हिंदुओं ने अपनी हठ धर्मिता छोड़ी और मुस्लिम सुविधाओं के लिए अपनी धार्मिक, सामाजिक सिद्धांतों की बलि चढ़ाई। परिणामस्वरूप राष्ट्र भक्त अनेक मुसलमान कांग्रेस के कंठहार बने जैसे मौलाना अबुल कलाम आजाद, खान अब्दुल गफ्फार खां, शौकत अली बुंध आदि। इस प्रकार गांधी जी ने हिंदू-मुस्लिम एकता का पाठ पढ़ाया। गांधी जी पर मुस्लिम तुष्टिकरण के अनेक आरोप लगने लगे, फिर भी वे विचलित नहीं हुए। उन्होंने यहां तक कहा कि मैं गाय की पूजा करता हूँ लेकिन गाय को बचाने के लिए मैं किसी मुसलमान भाई का कत्ल नहीं कर सकता।

गांधी जी मशीनी संस्कृति में विश्वास नहीं रखते थे। वे स्वदेश निर्मित वस्तुओं के पक्षधर थे। कुटीर एवं लघु उद्योगों को बढ़ावा देकर ग्राम्य जीवन को महत्व देते थे। गांधी जी अद्भुत नेतृत्व शक्ति के परिचायक थे। आत्मबल उनमें कूट-कूट कर भरा था। गांधी जी के आह्वान पर लोग तन-मन-धन से देश सेवा में लीन हो जाते थे। यही कारण था कि विद्यार्थियों ने स्कूल-कॉलेज छोड़ दिए, वकीलों ने वकालत छोड़ दी, लोगों ने विदेशी वस्तुओं की होली जला डाली, खद्दर को राष्ट्रीयता की पहचान बना दिया। रवीन्द्र नाथ ठाकुर जैसे महापुरुष ने 'सर' की उपाधि लौटा दी। गांधी जी अहिंसा, सदाचार, भाई-चारे का पाठ पढ़ाकर समाज में व्याप्त विषमताओं को दूर करना चाहते थे। शराब को आत्मा का शत्रु बताकर लोगों को सचेत करते थे। वे नशा मुक्त समाज देखना चाहते थे।

गांधी जी अस्पृश्यता निवारण के लिए अत्यंत आतुर थे। उनका कहना था कि यदि कोई यह सिद्ध कर दे कि अस्पृश्यता हिंदू धर्म का अनिवार्य अंग है तो मैं हिंदू धर्म ही छोड़ दूँगा। दलित जनों के प्रति उनके हृदय में प्रगाढ़ प्रेम था। वे अपना अगला जन्म अति दलित जन के रूप में पाना चाहते थे। वे मानव सेवा को परम धर्म मानते थे। उन्होंने स्वयं हरिजन बस्ती में रहकर अछूतोद्धार के कार्यक्रम शुरू किए। भारत की वर्तमान दयनीय स्थिति में गांधी जी के विचारों की आवश्यकता है। गांधी जी जो सुधार दूसरों को सिखाते थे, उन सुधारों की कीमत पहले वे स्वयं चुकाते थे और एक आदर्श प्रस्तुत करते थे। आज देश के लोगों को अपनी पार्टी की चिंता है देश की नहीं। गांधी जी के लिए राष्ट्र का हर व्यक्ति अहम है। उनका विचार था कि यदि आप यह जानना चाहते हैं कि आप के द्वारा उठाया गया कदम राष्ट्र हित में है या नहीं, तो वे कहते थे कि यदि आपके द्वारा उठाया गया कदम समाज के उस छोटे से छोटे व्यक्ति के हित में है तो समझ लीजिए कि आपके द्वारा उठाया गया कदम उचित है। अगर भारत का हर व्यक्ति गांधी जी के विचारों पर चले, सत्य अहिंसा का आचरण करे, आपसी भाई-चारे से रहकर एक दूसरे के धर्मों का आदर करे, मां-बहनों का सम्मान करे, स्वार्थ भावना को त्याग कर राष्ट्र हित को सर्वोपरि समझे तो निश्चित रूप से राष्ट्र रूपी बगीचे में शांति एवं उन्नति के फूल खिल उठेंगे। उसकी सुगंध से हर नागरिक महक उठेगा, सुवासित हो सकेगा। गांधी जी आशावादी थे। वे शांतिप्रिय भारत की कल्पना करते थे। उनकी चाहत थी कि-

रक्त-रंजित धरा, न गगन चाहिए,
प्राण लेवा न हमको, पवन चाहिए।
फूल खुशियों के, घर-घर महकते रहें,
ऐसा प्यारा ये, मेरा वतन चाहिए।

मोबाइल का मायाजाल

श्री दीपक कुमार
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक
शै.इ., केंद्रीय कार्यालय,
प.ऊ.शि.सं., मुंबई

आजकल मोबाइल जीवन का अभिन्य अंग बन गया है। मोबाइल के बिना जीवन सूना-सूना सा लगता है। हर वस्तु के उपयोग के दो पहलू होते हैं। ऐसा कहना गलत न होगा कि जीवन दर्शन मोबाइल आने के बाद कुछ बदल गया है। घर में लोग साथ होकर भी अपने में ही गुम-सुम रहते हैं। चारों ओर लोग मोबाइल पर मैसेज भेजते नज़र आते हैं । छोटे बच्चे मोबाइल पर कार्टून वीडियो देखे बिना खाना नही खा रहे और स्कूल जाने वाले बच्चे मोबाइल पर गेम्स खेले बिना कुछ भी करने के लिए राज़ी नही हैं। यह सीधे तौर पर बचपन पर हमला है और हम सब इस से अंजान बने हुए हैं और आँखे मूंद रखी हैं क्योंकि हम खुद इस मोबाइल की गुलामी कर रहे हैं।

आज के समय में मोबाइल लगभग सभी की पहुंच में है, पर इसको कैसे, कब, कहाँ और कितना उपयोग करना है यह कुछ विरले ही जानते हैं। संक्षिप्त में बस इतना समझ लीजिए कि इस गुलामी की तुलना उस हाथी से की जा सकती है जहाँ हाथी को बचपन से रस्सी से बाँध कर रखा जाता है और जब हाथी बड़ा हो जाता है तब भी वह यही मानकर चलता है कि वह रस्सी से खुद को कभी मुक्त नहीं कर सकता।

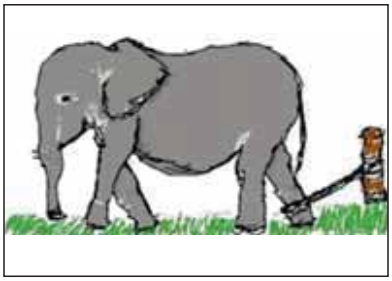

कुछ ध्यान देने योग्य बातें जो मोबाइल की इस गुलामी से आपकी आजादी में सहायक सिद्ध हो सकते हैं-

1. अपना WhatsApp नंबर अपने प्राइमरी मोबाइल नंबर से अलग रखें और सीमित लोगों के साथ ही सांझा करें।

2. घर में छोटे बच्चों के साथ खेल कूद में भाग लें और मोबाइल पर कार्टून देखने के बजाए छुट्टी वाले दिन उनके साथ बैठकर टीवी पर कार्टून सीमित अवधि में देखें।
3. बिना बात की सेल्फी, स्टेटस और मैसेज फारवर्डिंग से बचें। मत भूलें कि बच्चे आपका अनुसरण करते हैं।
4. रात को 9 बजे के बाद मोबाइल का इंटरनेट कनैक्शन बंद कर दें।
5. मोबाइल आपकी सहायता के लिए है। ईमानदारी से इसका उपयोग करें तथा इसे अपने पर हावी न होने दें।
6. किसी भी चीज की अति बुरी होती है और जब बात आपके अपने परिवार के स्वास्थ्य की हो, तो सावधानी ही सबसे बड़ा बचाव है।

कुछ सीखने योग्य बातें

श्री डी. आर. सोनिया
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक,
प.ऊ.कें.वि.-1, जादूगुड़ा

* दोस्तों ! छाता बारिश नहीं रोक सकता, परंतु बारिश में खड़े रहने का साहस अवश्य देता है। ठीक उसी प्रकार आत्मविश्वास सफलता की गारंटी नहीं है, किंतु संघर्ष करने की प्रेरणा अवश्य देता है।

* कोई भी व्यक्ति तुम्हारे पास तीन कारणों से आता है-भाव से, अभाव से, प्रभाव से। यदि भाव से आता है तो उसे प्रेम दो, अभाव में आता है तो उसकी मदद करो और यदि प्रभाव से आता है तो प्रसन्न हो जाओ कि ईश्वर ने तुम्हें इतनी क्षमता दी है।

* दीपक बोलता नहीं, उसका प्रकाश परिचय देता है, ठीक उसी प्रकार आप अपने बारे में कुछ मत बोलो, अच्छे कर्म करते रहो, वही आपका परिचय देगा।

* मैं श्रेष्ठ हूँ यह आत्मविश्वास है लेकिन केवल मैं ही श्रेष्ठ हूँ यह अहंकार है। दो हाथों से हम पचास लोगों को नहीं मार सकते हैं, किंतु दो हाथ जोड़कर करोड़ों लोगों के दिलों को अवश्य जीत सकते हैं।

* लोग चाहते हैं आप बेहतर करें, लेकिन यह भी सत्य है कि वे कभी नहीं चाहते कि आप उनसे बेहतर करें।

* रिश्तों की सिलाई यदि भावनाओं से हुई है, तो टूटना मुश्किल है और यदि स्वार्थ से हुई है तो टिकना मुश्किल है।

* अगर आपकी अच्छाई को लोग आपकी कमजोरी समझते हैं, तो यह उनकी समस्या है, आपकी नहीं। आप आइना हो, आइना बने रहो, फिक्र वो करें जिनकी शक्लें खराब हैं।

* नेत्र केवल दृष्टि प्रदान करते हैं, किंतु हम कहाँ क्या देखते हैं, यह हमारे मन की भावना पर निर्भर है।

* कितना अजीब है-चौरासी लाख जीव प्रजातियों में केवल मानव ही धन कमाता है फिर भी कोई जीव भूखा नहीं मरता। लेकिन मानव का कभी पेट नहीं भरता है।

* रेस में जीतने वाले घोड़े को यह पता नहीं कि जीत क्या होती है ? वह तो अपने मालिक द्वारा दी गई तकलीफ के कारण दौड़ता है, यदि आपके जीवन में कोई तकलीफ आए तो यह समझ लेना कि आपका मालिक आपको जिताना चाहता है।

* जीवन में जो बात खाली जेब, खाली पेट सिखाती है, वह बात कोई शिक्षक, कोई विश्वविद्यालय भी नहीं सिखा सकता।

* जिंदगी के लिए अच्छी सोच रखो, हर एक की सुनो और हर एक से कुछ न कुछ सीखो क्योंकि हर कोई सब कुछ नहीं जानता, लेकिन हर एक कुछ न कुछ अवश्य जानता है।

* मन का खोट कुएं के पानी की तरह होता है, जितना भी चाहो निकाल लो, किंतु कभी खत्म नहीं होता है।

* कभी किसी का कुछ करने का मौका मिले तो छोड़ना मत दोस्तों ! बड़े नसीब वाले होते हैं जो किसी के चेहरे पर मुस्कुराहट दे पाते हैं।

* श्रद्धा जान देती है, नम्रता मान देती है और योग्यता स्थान देती है। यदि तीनों मिल जाएं तो व्यक्ति को हर जगह सम्मान दिलाते हैं।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है वह कभी उन्नत नहीं हो सकता।

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

मन बदला

श्रीमती मिता साहा
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-2, जादूगुड़ा

मेरा क्या हुआ .... तबादला
सबका देखो मन बदला
जो थे मेरे करीब
अब वो, मुंह बनाएं अजीब

इससे तो अच्छे दुश्मन
जो बनाए रखे अपना मन,
राह चलते लोगों ने भी लिया मज़ा,
अरे! किसने दी आपको सज़ा?

जो कर सकते थे कुछ .....
वो सब भी बैठे थे चुप
जब मन में बसा हो दुख
तब बस इंतजार होता है कब आयेगा सुख

सबने उड़ाई खूब खिल्ली
मेरे मन में भी ..... खिलेगी कली
लोगों की हुई परख
अब देखें कुछ और ..... ये आंखें

मेरा क्या हुआ ..... तबादला
सबका देखो मन बदला ... मन बदला।

मासूम सी जिद कवि बनने की

श्री दीपक जॉन
स्नातकोत्तर अध्यापक,
प.ऊ.कें.वि.-1, जादूगुड़ा

कवि नहीं हूं
नहीं है मुझमें वह काव्य-प्रतिभा
कि बैठ सकूं शब्द के अंतर्मन में,

कोशिशें बहुत कीं कि उड़ सकूं मैं भी
कल्पना के उन्मुक्त गगन में,
मगर ये हो न सका।

जब भी कोई गहरे सदमे में होता है
या फिर आंसुओं के सैलाब में
अपने होने का अर्थ ढूंढ़ता है

तो एक मासूम सी जिद
लेने लगती है हिलोरे
और शब्द हृदय में जगह बनाने के लिए
आतुर हो जाते हैं।

हिंदी द्वारा ही सारे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

- स्वामी दयानंद सरस्वती

काश ! मुझे अमृत मिल गया होता

ज्योति अविनाश पेंटे
लेखा अधिकारी,
प.ऊ.शि.सं., मुंबई

तुम्हारे दिल की धड़कन,
सबसे पहले मैंने महसूस की
तुम्हारे दर्द का आगाज,
सबसे पहले मैंने महसूस किया

तुम्हारे सासों की खुशबु,
सबसे पहले मैंने महसूस की
तुम्हारा धुंधला सा मुस्कुराता चेहरा,
सबसे पहले मैंने देखा

तुम्हारे लबों को हिलते देख,
तुमसे बातें सबसे पहले मैंने की
तुम्हारी साद को आवाज,
सबसे पहले मैंने दी

मुझे गुनगुनाना सिखाया सबसे पहले
तुम्हारे सुरों ने ही
तुम्हारा ही हाथ थामकर धरती पर पाँव,
सबसे पहले मैंने रखा

तुमसे ही वो कहानियाँ,
सबसे पहले मैंने सुनी
देव दानवों का संघर्ष,
उन्ही में से एक वो कहानी

सारा अमृत एक ओर,
विष का प्याला लिए शिवजी
काश ! मैं भी वहां होती,
दो अमृत की बूँदे मुझे मिल गयी होतीं....,

एक मैं पी लेती और दूजी तुम्हें पिला देती।
ओ माँ ! काश तू आज भी मेरे पास होती।

हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और दृढ़ करती है। देश का कोई भी सच्चा प्रेमी हिन्दी का तिरस्कार नहीं कर सकता। दुनिया से कह दो गाँधी अंग्रेजी नहीं जानता।

- महात्मा गाँधी

पद्यात्मक समास

डॉ. धनुर्धर झा
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक,
प.ऊ.कें.वि.-1, जादूगुड़ा

समस्त जनों के बीच मिलन,
जैसे समाज में होता है।
वैसे एकाधिक पद मिलकर
नित समास बन जाता है ।। 1।।

समस्त पदों में दो पद होते,
पहला पूर्व पद कहलाता।
दूसरा उत्तरपद बन जाता,
मिलकर समास तो हो जाता ।। 2।।

पूर्वपद हो या उत्तरपद हो,
या दोनों पद प्रधान हो।
अथवा अन्य पद प्रधान होते,
समासभेद यह जान लो ।। 3।।

प्राय: पूर्व पद अव्यय रहकर,
प्रधान पद भी है होता।
क्रियाविशेषण समस्त बनता,
अव्ययीभाव है कहलाता ।। 4।।

यथासमय, प्रतिदिन, हर-क्षण,
बेखटक हर काम करें।
यथाशक्ति, प्रत्यक्ष, यथोचित, भरपूर,
निडर हो याद करें ।। 5।।

उत्तरपद की प्रधानता में,
तत्पुरुष नाम उपयुक्त है।
कारक चिह्न विग्रह में होता,
पर समास में लुप्त है ।। 6।।

स्वर्ग प्राप्त तो कष्टसाध्य है,
सदिरालय कर्महीन है।
लखपति आनंदमग्न हो,
धनार्जन में तल्लीन है ।। 7।।

विशेष्य-विशेषण, उपमान-उपमेय को,
कर्मधारय ही कहते हैं।
महापुरुष, सज्जन, महात्मा,
ग्रन्थरत्न को पढ़ते हैं ।। 8।।

संख्यापूर्वक द्विगु कहलाता,
समाहार अर्थ को रखता है।
पंचपात्र में त्रिफला लेकर,
चौराहे पर खाता है ।। 9।।

अनादि, अनंत, अनश्वर जो हैं,
अज्ञान, अनाथ न होते हैं।
नहीं अर्थ होने के कारण,
नञ् समास बन जाते हैं ।। 10।।

दोनों पद प्रधान द्वंद्व में,
बाल-वृद्ध सब के तन-मन।
राजा-रंक हो या नर-नारी,
राम-रहीम के हैं भक्तन ।। 11।।

अन्य पदप्रधान बहुव्रीहि में होता,
अत: धनुर्धर अर्जुन है।
चतुरानन ब्रह्मा को कहते,
श्रीकृष्ण तो निश्चय गिरिधर है।। 12।।

तड़प

श्रीमती सुनीता सुचारी
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-1, जादूगुड़ा

वो बारिश की बूंदे, वो गरजन वो तड़पन।
वो मन के मयूरा का रह-रह के नर्तन।।

मैं चलती थी जब, रास्ते झूमते थे।
जो नज़रें उठाती, तो नभ चूमते थे।।

एहसास का जो समन्दर था दिल में,
रवानी थी उसमें ज़वानी थी उसमें।

चली दो कदम, तो लगी ऐसी ठोकर।
हुए पांव घायल, मची दिल में हलचल।

है घायल वो पायल की छम-छम सुहानी
जिसे ढूंढ़ती हूं मैं बनके दीवानी

कहीं जो वो मिल जाए, बागों के झूलों में
सावन की रिमझिम में, गलियों में कूचों में

पूछूंगी रिश्ता क्या, पतझड़ का सावन से।
सावन का इस मन से, इस मन का तड़पन से।

इस मन का इस मन से, इस मन का तड़पन से।।

शुभकामना

श्री मिथिलेश कुमार झा
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक,
प.ऊ.कें.वि.-1, जादूगुड़ा

ऐसी ज्योति जगा दो, प्रभुवर!
सद्भाव उमड़ जाए,
काम-क्रोध व लोभ-मोह का
गर्त बड़ा-सा खुद जाए।

स्वार्थ-दृष्टि ओझल हो, प्रभुवर!
परमार्थ-निकेतन बन जाए,
हृदय सभी का पावन होकर
जन-मन संगम बन जाए ।

धैर्य धरा पर ला दो, प्रभुवर!
पग-डगमग न हो पाएं,
सबकी आशा पूरी कर दो
निर्बल कोई न रह जाए।

सबका ज्ञान जगा दो, प्रभुवर!
अज्ञान कहीं न रुक पाए,
भूख-प्यास से व्याकुल मन
कभी, कहीं न दिख पाए।

ऐसी झलक दिखा दो, प्रभुवर!
हर पल तुम पर ध्यान रहे
नजरों से कभी न ओझल होना
हर पल ये सद्ज्ञान रहे।

अपने घट से अमृत ले, प्रभुवर!
किंचित अमृत छलका देना
हम भी थोड़ा वितरित करलें
ऐसा निर्मल भाव जगा देना।

मैं एक औरत हूँ

श्री रामवीर सिंह
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक,
प.ऊ.कें.वि., अणुपुरम

मैं सबके जागने से पहले जागती हूँ,
मैं दिनभर काम करती हूँ,
मैं सबके सोने के बाद सोती हूँ,
क्योंकि मैं एक औरत हूँ।
इसलिए कभी थकती नहीं
तीनों वक्त का खाना बनाकर समय काट लेती हूँ।
सुबह से गृहस्थी में सिमट जाती हूँ,
सभी मौसमों की मार सहती हुई,
आधी रात जाग-जाग कर भी
बच्चों को कम्बल ओढ़ाती हूँ।
देखकर घर का सारा हाल
कभी-कभी उदासी को गले लगा लेती हूँ
सिमट जाती है सारी दुनिया मुझमें
कभी मैं दुनिया में बिखर जाती हूँ।
आए दिन छल-कपट, धोखा-धड़ी,
अपहरण की भुक्त भोगी बन जाती हूँ,
क्योंकि मैं एक औरत हूँ।
यह सब देखकर असहाय हो जाती हूँ।
लोग इज्ज़त आबरू की बात कर
हमें क्यूं सदा अपमानित करते हैं।
पैदा होकर नफ़रत की आंधी साथ लाई हूँ।
सारी बातें सुनकर हर दर्द को गले लगाती हूँ
क्योंकि मैं एक औरत हूँ।

ये जिंदगी

ये जिंदगी बड़ी निराली है,
कभी रुलाती है कभी हंसाती है।
कभी सपने दिखाती है
तो कभी सपने सच कराती है।
ये हमें यथार्थ के दर्शन कराती है,
तो कभी वास्तविकता से दूर ले जाती है।
ये जिंदगी बड़ी निराली है।

ये हमें कभी अपनों से दूर कराती है,
तो कभी दूसरों से गले मिलवाती है।
कभी यश दिलाती है तो कभी अपयश,
कभी गम देती है तो कभी खुशी।
कभी कुमार्ग देती है तो कभी सुमार्ग,
ये जिंदगी बड़ी निराली है।

कभी जीने का तरीका बताती है,
तो कभी सोच बदलवा देती है।
कभी आंधी-तूफान बन जाती है,
तो कभी सागर की लहरें बन कर,
जिंदगी किनारे लगा देती है।
ये जिंदगी बड़ी निराली है।

कभी भावनाओं के वेग में ले जाती है,
तो कभी पत्थर के समान कठोर बनाती है।
ये कभी साथ देती है तो कभी साथ छोड़ देती है।
ये जिंदगी बड़ी अपरंपार है,
जो समझ गए वे जी गए,
जो ना समझे वे चले गए।
ये जिंदगी बड़ी निराली है।

गुलामी और आज़ादी

श्री आर. एस. सिंह
प्राथमिक अध्यापक,
प.ऊ.कें.वि., अणुपुरम

जब थे गुलाम हम भारतवासी,
था मेल सभी में अच्छा खासा।
हिंदू-मुस्लिम का भेद नहीं था,
सभी भूमि थी मथुरा काशी।

पहले थे सोने की चिड़िया,
देश मेरा सबसे ज्ञानी।
जगत गुरू के नाम से था यह,
सारे जग में जाना पहचाना।

सोने की चिड़िया अब उड़ गई,
अब न रहा यह सबसे ज्ञानी।
पहले लूटा विदेशियों ने,
अब लूट रहे खुद हिंदुस्तानी।

वाह री आज़ादी! तेरी कीमत
हमने बहुत ही बड़ी चुकाई।
भाईचारा और शांति कहीं खो गये,
बात प्रतिष्ठा पर बन आई।

मेहनत करना सीखो

श्रीमती मायादेवी
प्राथमिक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि., अणुपुरम

जरूरी नहीं की सफलता एक बार में हासिल हो,
पहले तुम देखो, तुम कितने उसके काबिल हो।

बार-बार असफल होने पर भी न हो कभी निराश,
कड़ी मेहनत करते जाओ, और मन में रखो आस।

जब तुम सफलता पाने के हो जाओगे काबिल,
तब तुम जो चाहोगे, तुम्हें होगा हासिल।

जो व्यक्ति है आज आसमान की बुलंदियों पर,
वो भी कभी कठिन परिस्थितियों से लड़ा है
तब जाकर आज वो इस मुकाम पर खड़ा है।

जो करेगा कड़ी मेहनत उसके पीछे दुनिया घूमेगी,
हर तरफ होगा उसका नाम और सफलता उसके कदम चूमेगी।

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

गुरू

श्री संजीत
प्राथमिक अध्यापक,
प.ऊ.कें.वि., अणुपुरम

ये जहां कहता है गुरू ज्ञान देते हैं।
बेज़ान शरीर में ज्ञान रूपी प्राण देते हैं।

मैं कहता हूँ हां गुरू ज्ञान देते हैं।
गुरू के कारण ही लोग शिष्य को सम्मान देते हैं।

जीवन होता है मगर जीने का अंदाज देते हैं।
पंख होते हैं मगर उड़ने का आकाश देते हैं।

जीवन उजागर करने के लिए मार्ग देते हैं।
व्यक्तित्व बनाने के लिए संस्कार देते हैं।

सच ही है गुरू ज्ञान देते हैं।
पर सच तो यह भी है कि गुरू का ना कोई सार है,
क्योंकि गुरू की महिमा अपरंपार है।

जैसे रोशन होती है दीयों में प्रज्ज्वलित ज्योति
वैसे ही है गुरू की शख्सियत कुदरत की असीम शक्ति

अंतरात्मा की आवाज है गुरू,
खुदा की सल्तनत में खास है गुरू!

डिजिटल इंडिया

डिजिटल इंडिया भारत का एक नया चेहरा,
हो साकार सर्व शिक्षित समाज का सपना,
उज्ज्वल हो हर गांव और शहर अपना।

तकनीक की उपलब्धता का हो सही उपयोग,
रोजगार, सुधार, सूचनाएं पहुंचें हर आंगन द्वार,
सभी समस्याओं में डिजिटलाइजेशन का हो सही उपयोग।

ना दूर कहीं अब जाना हो घर बैठे इसे अपनाना हो,
क्या साक्षर, क्या निरक्षर इंटरनेट की सेवा से पूरा हो सबका सपना,
उज्ज्वल हो हर गांव और शहर अपना।

वक्ता के विकास और चरित्र का वास्तविक प्रतिबिंब "भाषा" है।

- महात्मा गांधी

कुछ कर के तो देखो, कुछ करके देखो

श्री अनिल कुमार श्रीवास्तव
स्नातकोत्तर अध्यापक,
प.ऊ.क.म.वि., मुंबई

सुबह थोड़ा जल्दी उठकर के तो देखो,
सूर्योदय से पहले जगकर तो देखो।

पांव को जमीन से लगा कर देखो,
योगासन व कसरत करके तो देखो।

गम में तो हर कोई है यहां,
तुम जरा मुस्करा के तो देखो।

हर कोई बंदा किसी का बंदा है यहां,
तुम ज़रा खुदा का बंदा बनकर तो देखो।

बोझ तो बनना आसान है अनिल,
कभी किसी का बोझ उठाकर तो देखो।

खिल्ली चाहे कितनी उड़ा लो किसी की,
आंसू किसी के पोंछ कर तो देखो।

बंद पड़ गई है जिंदगी चार दीवारी में,
तुम जरा खुले जग में आकर तो देखो।

क्यों सजा दे रहे हो तुम ऐसे,
खुलकर जियो और मस्त रहकर तो देखो।

अकेलेपन से क्यों दुखी हो ऐसे,
दुनियादारी निभाकर तो देखो।

सोशल मीडिया में तो छाए हो जमकर,
जिंदगी में रिश्ते निभाकर तो देखो।

आलस मक्कारी बहुत हो चुकी अब,
मेहनत की जिंदगी जीकर तो देखो।

चोटी तक पहुंच जाओगे एक दिन,
चढ़ाई की शुरूआत करके तो देखो।

दुखों के पल सब गुजर जायेंगे एक दिन,
कुछ पल जिंदगी में हंसकर तो देखो।

न जाने कब टूट जाए नाता जिंदगी से,
जो मिले पल उनमें खुश रहकर तो देखो।

अँग्रेजी आम जनता की समझ के बिल्कुल बाहर है। हमें उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करना चाहिए जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती है, यानि वह हिंदी है।

- विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर

'कविता लेखन प्रतियोगिता - 2016'

कल, आज और कल

प्रथम पुरस्कार ('क' वर्ग)
श्री राहुल सोनी,
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक,
प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई

कल (अतीत) का भारत-

सभ्यताओं का संचार रहा है।
मेरा समृद्ध इतिहास रहा है।
राम, रहीम और केशव जैसे
अवतारों का भंडार रहा है।

मेरी पावन धरती पर ही
प्रथम सृष्टि का विस्तार रहा है।
गांधी, गौतम की शिक्षा पर
सारी दुनिया को नाज रहा है।

सर्वधर्म की संस्कृति का
कण-कण में प्रचार रहा है।
मेरी धरा पर मानों जैसे
सब ऋतुओं का श्रृंगार रहा है।

तानसेन की वाणी में भी
मेघों का मलहार रहा है।
मेरा हृदय पावन पर्व है
मेरे आंसू गंगाजल हैं।

मैं अतीत में पुलकित होता
ब्रह्मांड का सूरज हूँ
जग को गिनती सिखलाने वाला
विश्व शांति का अग्रदूत हूँ
मैं अतीत का भारत हूँ। हां मैं भारत हूँ

मुगलों और अंग्रेजों ने
मुझे बहुत आघात दिया है।
किसी देश पर आक्रमण का
मेरा नहीं इतिहास रहा है।

आज (वर्तमान) का भारत-

वर्तमान के हालातों ने
मुझको जर्जर बना दिया है
मेरी धरा की पावन कुटिया को
'अपनों' ने खंडहर बना दिया है
भ्रष्टाचार व सांप्रदायिकता ने
मेरा 'सीना' काट दिया है।
शहीदों को भी बांट दिया है।
नेताओं ने स्वार्थ की खातिर
मुझको बौना बना दिया है।
लोकतंत्र का उपहास बनाकर
मुझे 'खिलौना' बना दिया है।
मैं वर्तमान का भारत हूँ। हां, मैं भारत हूँ

किसानों का हाल देखकर
खेतों में अकाल देखकर
नाली में नवजात देखकर
लाशों का अंबार देखकर
रोज रावण हंसता है
भगवान राम की हार देखकर
दासता की जंजीरों से निकला
कैसा हिंदुस्तान कहोगे
मैं वर्तमान का भारत हूँ। हां, मैं भारत हूँ

नारी का सम्मान खो गया
धर्म, कर्म, ईमान खो गया
तिरंगे की शान कहां है
भारत माँ की आन कहां हैं
'वंदेमातरम्' का मान कहां है।
मज़हब के लिए लड़ने वालो
कैसे धर्म निरपेक्ष रहोगे
कैसा हिंदुस्तान कहोगे
मैं वर्तमान का भारत हूँ। हां, मैं भारत हूँ

घर भरते ईमान बेचकर
अबला का सम्मान बेचकर
घिरी चारों दिशा कोहरों से
राजा डरता है 'मोहरों' से
बेईमान के सर तख्तोताज है
भूखा गरीब रोटी का मोहताज है।
कैसे तुम व्यथा को सहोगे
कैसा हिंदुस्तान कहोगे
मैं वर्तमान का भारत हूँ। हां, मैं भारत हूँ

कल (भविष्य) का भारत-

मैं भारत गुरुओं का देश हूँ
देता नित सुख संदेश हूँ
नदियां मेरी अमृत की धार हैं
सारे मज़हब गीता का सार हैं।
मैं भारत हूँ उत्थान मांगता
अमर शहीदों का सम्मान मांगता
निज स्वार्थ न्यौंछावर कर दो
मुझे अपने प्राणों में भर लो
फिर से मुझको महान बना दो
ऐसा हिंदुस्तान बना दो
मैं भविष्य का भारत हूँ। हां, मैं भारत हूँ

दीमक खोखली करती बुनियादों को
मेरी कटी-फटी यादों को
फूटी किस्मत कोसने वालों की
भाग्य का रोना रोने वालो
कर्महीनता का त्याग करो तुम
सत्य, समर्पण निष्ठा अपनाकर
फिर से नयी मशाल जला दो
ऐसा हिंदुस्तान बना दो
मैं भविष्य का भारत हूँ। हां, मैं भारत हूँ

मेरी पावन धरा पर केवल
श्रम को ही सम्मान मिलेगा
व्यर्थ पसीना नहीं बहेगा
कोई खेत सूखा नहीं रहेगा
कोई पेट भूखा नहीं रहेगा
कोई आंसू नहीं बहेगा
खुशबू फैलाते फूल खिलाकर
मेरी बगिया के 'बबूल' हटा दो
ऐसा हिंदुस्तान बना दो
मैं भविष्य का भारत हूँ। हां, मैं भारत हूँ

मेरी यह अभिलाषा है "क्षितिज"
मैं फिर से गुड़िया बन जांऊ
सोने की चिड़िया बन जांऊ
खेल, चिकित्सा और खगोल में
पूरी दुनिया से लोहा मनवाकर
अपना परचम फिर से लहरांऊ
फिर से मुझको महान बना दो
मुझको शक्तिमान बना दो
ऐसा हिंदुस्तान बना दो
मैं भविष्य का भारत हूँ। हां, मैं भारत हूँ

'कविता लेखन प्रतियोगिता - 2016'

कल, आज और कल

द्वितीय पुरस्कार ('क' वर्ग)
श्रीमती मुदिता बाजपेई,
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका,
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

हम जीते हैं अतीत के मुर्दा क्षणों में,
यादों में खोकर,
या फिर अजन्मा क्षण, सपने सजाकर।

ख्वाहिशों की ऊंची उड़ानें उड़कर,
या फिर यादों की किताबों से मिट्टी हटाकर।

हाथ में रहती वर्तमान की बूंद फिसल जाती है,
देखते-देखते जिंदगी निकल जाती है।

इस कल, आज और कल की खाई को भरने,
मैं सुबह मशीन बन पेट का ईंधन जुटाती हूँ,
और रात, कविता कर इंसान बन जाती हूँ।

मैं तोड़ देती हूँ हर उस विचार-बंधन को,
जो रोकता है एहसासों को पन्नों पर सजाने से,
मन की गांठें सुलझती हैं, बस, शब्दों को सहलाने से।

हम सभी भारतवासियों का यह अनिवार्य कर्तव्य है कि हम हिंदी को अपनी भाषा के रूप में अपनाएँ।

- डॉ. आंबेडकर

तृतीय पुरस्कार ('क' वर्ग)
श्रीमती अमृत मल्होत्रा,
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई

कल था आज है,
कल भूतकाल था।
आज वर्तमान है।
कल भविष्य होगा।।
बीता हुआ कल सपना, आज केवल अपना,
आने वाला कल कल्पना

बीता हुआ कल, इतिहास बनकर रह जायेगा।
आने वाला कल, पता नहीं क्या गुल खिलायेगा ?
आज को सुधार लो, कल स्वयं सुधर जायेगा। क्योंकि-
बीता हुआ कल सपना, आज केवल अपना,
आने वाला कल कल्पना

कल की चिंता में खाक छानते रह जाओगे।
बीते कल को कुरेदने में, खाक में मिल जाओगे।
आज को अनदेखा करने पर, बाद में पछताओगे। क्योंकि-
बीता हुआ कल सपना, आज केवल अपना,
आने वाला कल कल्पना

समय का एक-एक पल, न कल रुका था।
न आज रुका है और न कल रुकेगा।
ये समय का चक्र है, चलता है चलता ही रहेगा। क्योंकि-
बीता हुआ कल सपना, आज केवल अपना,
आने वाला कल कल्पना

बीता हुआ कल- बचपन की नादानी कहलायेगा।
आज - जवानी के जोश को दिखलायेगा।
आने वाला कल - बुढ़ापे की हकीकत बतलायेगा। क्योंकि-
बीता हुआ कल सपना, आज केवल अपना,
आने वाला कल कल्पना

अगर बीते हुए कल को परख नहीं पाओगे।
तो आने वाले कल को क्या खाक जान पाओगे?
कल की सोचते-सोचते यूं ही वक्त गंवाओगे। क्योंकि-
बीता हुआ कल सपना, आज केवल अपना,
आने वाला कल कल्पना

कल की अनुभूतियों को, तुम भूल नहीं सकते।
आज की चुनौतियों से, तुम भाग नहीं सकते।
आने वाले कल को, तुम भांप नहीं सकते। क्योंकि-
बीता हुआ कल सपना, आज केवल अपना,
आने वाला कल कल्पना

कल जो हो गया, उसे बदल नहीं पाओगे।
कल क्या होगा? उसे सोच नहीं पाओगे।
आज प्रयास कर लो, सफल हो जाओगे। क्योंकि-
बीता हुआ कल सपना, आज केवल अपना,
आने वाला कल कल्पना

कल की पुरानी पीढ़ी से अवश्य सीख पाओगे।
तभी अपने वर्तमान को भली-भांति सींच पाओगे।
अन्ततः भावी पीढ़ी को विरासत में कुछ दे पाओगे। क्योंकि-
बीता हुआ कल सपना, आज केवल अपना,
आने वाला कल कल्पना

कल का दौर बीता, तो आज का दौर आयेगा।
आज का दौर बीतेगा, तो कल का दौर आयेगा।
और आने वाला कल, अच्छे सुनहरे दिन लायेगा। क्योंकि-
बीता हुआ कल सपना, आज केवल अपना,
आने वाला कल कल्पना

कल क्या हुआ होगा? उसे लेकर रोए क्यों?
आज सबसे बड़ा यथार्थ, उसे व्यर्थ गंवाए क्यों?
कल क्या होगा? किसने देखा, फिर आज की हंसी खोए क्यों?
क्योंकि-
बीता हुआ कल सपना, आज केवल अपना,
आने वाला कल कल्पना

भुला दो बीते हुए कल को।
दिल में बसा लो, आने वाले कल को।
जी भर के जी लो, आज के हर पल हो । क्योंकि-
कल तो कल था। आज तो आज है। कल तो कल ही रहेगा।

जापानियों ने जिस ढंग से विदेशी भाषाएँ सीखकर अपनी मातृभाषा को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया है उसी प्रकार हमें भी मातृभाषा का भक्त होना चाहिए।

- श्यामसुंदर दास

'कविता लेखन प्रतियोगिता - 2016'

सामाजिक भारत - सांस्कृतिक भारत

प्रथम पुरस्कार ('ख' वर्ग)
श्रीमती चैताली लोहार,
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई

आओ अतिथियो हम तुमको अपना देश दिखायेंगे।
भारत की सभ्यता, संस्कृति आज तुम्हें बतायेंगे।।

वेद-व्यास जैसे ऋषियों ने महाभारत और ऋग्वेद लिखे,
चाणक्य, पाणिनी, आर्यभट्ट, भास्कराचार्य जैसे विद्वान दिखे,
गार्गी, मैत्रेयी सी विदुषियां हर लड़की में दिखेंगे।।
भारत की सभ्यता, संस्कृति आज तुम्हें बतायेंगे।

ये देश वीरों की भूमि जिन्होंने आजादी में प्राण दिये।
आज भी सैनिक डटे सीमा पर अपने हाथ में प्राण लिए।
भारत मां के सपूत हैं हम अभिमान से बतायेंगे।।
भारत की सभ्यता, संस्कृति आज तुम्हें बतायेंगे।

किसान यहां पर खेतों में हरा-भरा धान उगाते हैं।
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सब हर त्योहार मनाते हैं।
मानवता ही धर्म हमारा, यही वचन दोहरायेंगे।।
भारत की सभ्यता, संस्कृति आज तुम्हें बतायेंगे।

व्यवहार से नहीं हम दिल से रिश्ते निभाते हैं।
गरबा, लावणी, कथक, भांगड़ा सब में शामिल होते हैं।
इडली, ढोकला, रसम, तंदूरी, पुरणपोली खिलायेंगे।।
भारत की सभ्यता, संस्कृति आज तुम्हें बतायेंगे।

ताजमहल, स्वर्ण मंदिर, कोणार्क, अजंता शान हैं।
सचिन, आनंद, सिंधु, साक्षी पर हमें अभिमान है।
जगदीश चंद्र, भाभा, कलाम जैसे वैज्ञानिक बढ़ते जायेंगे।
भारत की सभ्यता, संस्कृति आज तुम्हें बतायेंगे।

आओ अतिथियो हम तुमको अपना देश दिखायेंगे।
भारत की सभ्यता, संस्कृति आज तुम्हें बतायेंगे।।

द्वितीय पुरस्कार ('ख' वर्ग)
श्रीमती आमला पंडित,
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई

"निज सभ्यता संस्कृति उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज सभ्यता संस्कृति के, मिटे न हिय को सूल।।"
समाज-संस्कृति, संस्कृति-समाज,
एक दूजे के परिपूरक हैं।
उन्नत सभ्यता और संस्कृति ही
आदर्श समाज के द्योतक हैं।।

सिंधु घाटी में जन्म लिया था
पावन करे जिसे गंगा का पानी।
सींचे जिसे गीता के तराने,
भारत की संस्कृति बहुत पुरानी।।

राम - कृष्ण की तपोभूमि ने,
रिश्ते - नातों का पाठ पढ़ाया।
कूटनीति और राजनीति भी,
इस भूमि को बहुत सुहाया।।

वसुधैव कुटुम्बकम का नारा भी,
है इसी भारत की सौगात
'अतिथि देवो भव' का नारा
गूंजे यहां दिन और रात।।

मंदिर में बजते घड़ियाल यहां पर,
मुस्लिम भी करते यहीं अजान।
'सर्वधर्म' समन्वय का है नमूना,
बाइबल का भी होता है पाठ।।

वेद यहीं उपनिषद यहीं,
यही है भोले शिव का वास।
बुद्ध के उपदेशों का भी
जम कर होता है उच्चार।।

ऐसी पावन संस्कृति ने जब
आधुनिक युग में ली अंगड़ाई।
बदली सामाजिक तस्वीरें,
करें आज उसकी भरपाई।।

वेद कहें, नारी देवी है
पर कन्या हमको आज क्यूं लगे भार
पत्नी की हम रखें लालसा
बेटी फूटी आंख क्यूं न सुहाए।।

प्यार का दंभ भरने वाले,
नित दिन अक्सर लड़ते रहते
राम रहीम के नामों पर,
कालिख प्रतिदिन मलते रहते।।

राजनीति की विसात पर
गंदी चालें चलती जाती।
जाति, भाषा क्षेत्रों के नाम पर,
प्रजातंत्र की बोटी नोंची जातीं।।

मूल्यों का हो रहा पतन हैं,
रिश्तों का भी नाम कहां ?
लालसा, वासना करते तांडव,
भारत आज जा रहा कहां ?

तभी मेरे अंतर्मन ने खोली आंखे,
कहा: पगली, इतना भी बुरा नहीं है भारत,
खोल लें अपनी मन की आंखे।
यही तो है तेरा, सामाजिक भारत।।

माना बेटी आज बोझ है।
दहेज सुरसा सा पांव पसारे
सिंधु, दीपा, कल्पना इस भू की
देश का मान ऊंचा करतीं।।

माना भ्रष्टाचार बहुत है,
थोड़ा सा अत्याचार भी है।
फिर भी सब जन मिल कर रहते,
भाई-बहन का प्यार भी है।।

मूल्य विहीन नहीं है मानव
गांधी, कलाम आज भी बसते।
अनगिनत सितारे इस भारत के
अंतर्राष्ट्रीय गगन पर सजते।।

पाश्चात्य संगीत का गर है बोल-बाला
मुरली की मधुर तान भी बजती।
विविध संस्कृति का ये अद्भुत संगम,
हर देवों की है आत्मा बसती।।

श्लोक यहीं, कविता यहीं है।
यहीं है कुरान की पावन आयत,
हां, कुछ ऐसा ही है मेरा,
सामाजिक भारत, सांस्कृतिक भारत।।

विश्व के सारे महान धर्म मानवजाति की समानता, भाईचारे और सहिष्णुता का संदेश देते हैं।

- महात्मा गांधी

'कविता लेखन प्रतियोगिता - 2016'

सामाजिक भारत - सांस्कृतिक भारत

तृतीय पुरस्कार ('ख' वर्ग)
श्री विश्वास माने,
प्राथमिक अध्यापक,
प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई

एक दिन भारत-माता मेरे सपने में आई,
रो रही थी बेचारी

मैंने पूछा, क्यों रो रही हो ?
उसने कहा, "मेरी बेटियां खो गई हैं"।
मैंने पूछा, कौन हैं तुम्हारी बेटियां ?
वह बोली, "समता, संस्कृति और एकता"।
मैंने कहा, रोओं नहीं,
मैं खोज कर लाऊंगा।

पहले मैं मंदिर गया,
अमीर और गरीब की दो कतारें लगी थीं वहां।
वहां समता, संस्कृति और एकता न मिली।

फिर मैं पहुंचा एक विद्यालय में,
वहां पर भी दो कतारें।
एक पेमेंट सीट, एक गुण के अनुसार,
वहां पर भी वे न मिलीं।

फिर मैं पहुंचा एक नेता की सभा में,
वहां उनके भाषण में,
मैंने एकता, समता और संस्कृति को पाया।
मैं बहुत खुश हुआ।
ज्यों ही मैंने उनको बुलाया,
वह अदृश्य हुईं।

मैं निराश होकर भारत-माता के पास आया
और बोला-
एकता, संस्कृति और समता सिर्फ भाषणों में रही हैं।
मज़हबी इमारतें आज भी हैं।

"विभिन्नता में एकता भारत की विशेषता"।
यह स्वतंत्र दिवस का बस नारा रह गया है।
फिर भी हमें इस देश को आगे बढ़ाना होगा,
मज़हबी इमारतों को तोड़ना होगा।
दिल से दिल को जोड़ना होगा।
आपस में 'भाईचारा' रखना होगा।

तभी विकसित होगा भारत।
तभी विश्व-शांति फैलाएगा भारत।

विचारों का परिपक्व होना भी उसी समय संभव होता है, जब शिक्षा का माध्यम प्रकृतिसिद्ध मातृभाषा हो और हमारी प्रकृति सिद्ध भाषा हिन्दी ही है।

- पं. गिरधर शर्मा

सबसे बड़ा रुपैया

प्रथम पुरस्कार ('ग' वर्ग)
श्रीमती भारती एस.,
प्राथमिक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई

कागज की बनी यह चंचल छाया है
यह एक पहेली है या कोई माया है
नहीं - नहीं यह तो जीवन धारा है
इसके बिना सब कुछ नीरस आधा है।
अरे भाई, इसलिए तो कहते हैं
बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया।

गज़ब है दुनियां पैसों की
भागते हैं सब इसकी होड़ में
पैसों का है खेल निराला
भ्रष्टाचार का है बोलबाला।
अरे भाई, इसलिए तो कहते हैं
बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया।

हर माल बिकाऊ है चीज़ न कोई टिकाऊ है
हर तरफ पैसों की झनकार है
काला बाज़ारी का व्यापार है।
अरे भाई, इसलिए तो कहते हैं
बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया।

रिश्ते नातों में मनमुटाव है
भाई-भाई में खटास है
पति-पत्नी में अलगाव है
बाप बेटे में टकराव है।
अरे भाई, इसलिए तो कहते हैं
बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया।

भगवान के नाम पर खोट चले
पूजा में भी नोट चले
मिलती है जिसको 'वोट"
'वोटर' को जो दे नोट।
अरे भाई, इसलिए तो कहते हैं
बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया।

गरीबों को मिलता न्याय कहां
कानून हमारा अंधा है
पैसों से मिलता न्याय यहां
इसी से चलता सारा धंधा है।
अरे भाई, इसलिए तो कहते हैं
बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया।

इससे क्या-क्या खरीद सकते हो तुम?
क्या सुकून की नींद पा सकते हो?
क्या बेटा-बेटियों का साथ पा सकते हो?
मैं तो कहती हूँ कि इस मोह माया में न पड़ो तुम?

जीवन में नैतिकता अपनाओ।
मानवता का पाठ पढ़ाओ।
इसलिए तो बड़े बुजुर्ग कह गए हैं कि
जीवन में रुपैया नहीं, मानवता ही सबसे बड़ी पूंजी है।
जीवन में अपनाओ इसे, कर लो जीवन में साकार।

किसी देश में ग्रंथ बनने तक वैदेशिक भाषा में शिक्षा नहीं होती थी। देश की भाषा में शिक्षा होने के कारण स्वयं ग्रंथ बनते गए हैं।

- साहित्याचार्य रामावतार शर्मा

'कविता लेखन प्रतियोगिता - 2016'

सबसे बड़ा रुपैया

द्वितीय पुरस्कार ('ग' वर्ग)
श्रीमती मालती मुरुगन,
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई

एक मदारी, एक व्यापारी,
हुई इनकी बातें चार
और देने पड़े रुपये हजार।

क्यों दिए पैसे ?
किसने ? किधर ? और कैसे ?
मदारी ने व्यापारी से कहा,
सुनाओ एक झूठा किस्सा,
जिसमें हो 'रुपैया और पैसा'।

व्यापारी ने मानी हार।
मदारी मुस्कराया और बोला-
सुनाता हूँ एक कहानी,
जो है बहुत लुभानी
लेकिन संता की जुबानी।

संता के सपने में रोज स्त्री का आना,
संता का अचरज में पड़ जाना,
हड़बड़ाना और बोलना-
हे प्रिय, क्यों तुमने पहनी साड़ी काली ?
और पहनती नहीं कुछ और निराली ?

स्त्री मुस्कराई, अपना हाथ उठाई,
अभय हस्त से रुपैयों की बौछार आई।
संता हुआ दंग! यह कैसी महामाया।
सिर्फ रुपैयों की है छाया।

फिर बात समझ में आई,
देवी लक्ष्मी की साड़ी थी काली,
क्योंकि देश का काला धन संभाली।

स्विस बैंक में रुपये रखने वालों
लक्ष्मी जी को करो प्रणाम
और गाओ उनके गुणगान।
क्योंकि-डॉलर हो या दिनार,
वही करेगा सबका बेड़ा पार।

मदारी ने डुग-डुगी बजाई
और बोला-
"भगवान बड़ा ने भैया, सबसे बड़ा रुपैया"

जितना और जैसा ज्ञान विद्यार्थियों को उनकी जन्मभाषा में शिक्षा देने से अल्पकाल में हो सकता है; उतना और वैसा पराई भाषा में सुदीर्घ काल में भी होना संभव नहीं है।

- घनश्याम सिंह

सबसे बड़ा रुपैया

तृतीय पुरस्कार ('ग' वर्ग)
सुश्री सरीफा पिनेरो,
प्राथमिक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई

पैसे वालों का अब हर जगह बोल बाला,
पैसा ही है सबका अल्लाह-ताला,
खाली जेब वालों का मुंह काला,
बिन पैसे कोई बात न पूछे राजा।
द होल थिंग इज दैट भैया सबसे बड़ा रुपैया।

पैसे ने अब सबकी जिंदगी बदल डाली,
पैसे वालों के पास हैं मोतियों की माला,
बिन पैसे वालों की किस्मत है मारी,
खाली जेब वालों के पास आंसुओं की माला।
द होल थिंग इज दैट भैया सबसे बड़ा रुपैया।

पैसे वालों के भेष में भगवान,
हर जगह मिलता सम्मान,
बिन पैसे वालों के हैं आंसु हजार,
कब दीया बुझे इसको इंतजार।
द होल थिंग इज दैट भैया सबसे बड़ा रुपैया।

पैसे वालों को है मिलती हर जगह पुलिस की लाल बत्ती,
हर जगह उन्हें मिलती आराम से एंट्री,
बिन पैसे वालों पर तो यही पुलिस बरसाती लाठी,
गरीबों को हाथ दिखाएं सामने खड़े संतरी,
द होल थिंग इज दैट भैया सबसे बड़ा रुपैया।

पैसे वालों को झुकके सलाम,
बढ़िया है उनकी कब्रों का इंतजाम,
अगर खाली हाथ तू मरा रे भैया,
तो न जमीं छूयेगी ना मिलेगी धरती मैया।
द होल थिंग इज दैट भैया सबसे बड़ा रुपैया।

पैसे वालों का ताव जिंदगी इनाम,
जगह-जगह है हर प्रकार के आराम,
बिन पैसे वालों के आंसु हजार,
खाली जेब वालों की है जिंदगी हराम।
द होल थिंग इज दैट भैया सबसे बड़ा रुपैया।

पैसे वालों को रिश्ते बनाने की आदत,
हर-दिन उनकी जय-जयकार,
बिन पैसे वालों के लिए यही रिश्ते बनते आफ़त,
खाली हाथ वालों के रिश्ते हो जाते तार-तार।
द होल थिंग इज दैट भैया सबसे बड़ा रुपैया।

तो क्या है नेशन, क्या है धरती मैया,
न रुपैया न पैसा तो डूब जाए तेरी नैया,
द होल थिंग इज दैट भैया सबसे बड़ा रुपैया।

* * * * *

मैं महाराष्ट्रीयन हूँ, परंतु हिन्दी के विषय में मुझे उतना ही अभिमान है जितना किसी हिन्दी भाषी को हो सकता है।

- माधवराव सप्रे

'कविता लेखन प्रतियोगिता - 2017'

हमसे ना टकराना - भारत-चीन डोकलाम विवाद

प्रथम पुरस्कार ('क' वर्ग)
श्री राहुल सोनी
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक
प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई

हिमगिरी पर अनायस ही, मौसम फिर घनघोर हुआ,
एक पड़ोसी घुसपैठिया, ड्रैगन आदमखोर हुआ।
कालदूत के काल की मानिन्द, जिसकी काली साया है,
विश्वशांति के अग्रदूत पर, फिर संकट घिर आया है ।।

लपेट तिरंगा भारत में, भेज रहा जो जूते है,
राष्ट्र विरोधी गतिविधियों की, ये सारी करतूतें हैं।
पाकिस्तानी आतंकियों के, गुनाह छिपाता है ड्रैगन,
'एनएसजी' के मुद्दे पर रोड़े अटकाता है ड्रैगन ।।

महादेव के कैलाश को कब्जाया ड्रैगन ने,
'अक्साई चीन' पर हक से इठलाता ड्रैगन है।
विश्व पटल पर भारत को, नित झुठलाता ड्रैगन है।
'दलाई लामा' के आने पर, आँख दिखाता ड्रैगन है ।।

ब्रह्मपुत्र का पानी रोक रहा जो अपने सूबों से,
हिन्दसागर पर डेरा डाला है गंदे मंसूबो से ।
सिक्किम और अरूणाचल का, नाम बदलकर दिखलाता है,
सीमाओं को मानचित्र पर, अपना हिस्सा बतलाता है ।।

यह नकली सामान, बनाने वाला एक व्यापारी है,
भारत को केवल बाजार, समझने वाला कारोबारी है ।
रग-रग में मक्कारी, इसकी खुदगर्जी पर लानत है,
इस ड्रैगन की दुनिया में, दो कौड़ी की इज्जत है ।।

परमाणु शक्ति है ये, बासठ का हिन्दुस्तान नहीं,
गीदड़ धमकी पर डर जाए, ये भारत की पहचान नहीं ।
दुनिया के नक्शे पर, पहचान बनाता है भारत,
कदमों संग दुनिया के, ताल मिलाता है भारत,
विश्व पटल के मानचित्र पर, लोहा मनवाता है भारत ।।

अहिंसा के अनुयायी, हमने दुनिया को शांति संदेश दिया,
चालाकी, मक्कारी से तुमने, बासठ वाला युद्ध दिया ।
पंचशील के समझौते को, जो ताक में रखकर छलता है,

मैकमोहन रेखा लांघने की कोशिश करता है ।
सम्पूर्ण विश्व को आहत करता खून सना कबीला है,
सत्रह देशों की सीमा डसता, ये ड्रैगन जहरीला है ।।

डोकलाम पर क्षितिज चीन की, पूर्व नियोजित साजिश थी,
अमरीका, इजराइल रिश्ते ही तो असली रंजिश थे।
भूटान नया तिब्बत बन जाये, ये ड्रैगन का सपना था,
अकड़ दिखा कर सड़क बना ले, मानो सब कुछ अपना था ।।

सीमा पर तने शेरों ने, औकात दिखा दी ड्रैगन को,
डोकलाम में मारा थप्पड़, देखो चीनी सेना को ।
सत्तर दिनों तक, बीजिंग से मिमियाती रही बिल्ली,
मौन साधे सीमा पर, जस की तस रही दिल्ली ।।

तीखे तेवर ढ़ीले पड़ गये, कसने लगे शिकंजे से,
डोकलाम में ड्रैगन हारा, शेर के खूनी पंजे से ।
तुर्रम खान समझने वाला, आज दुनिया में शर्मिंदा है,
डोकलाम में ड्रैगन भारत की कूटनीति से हारा है ।।

मक्कारी से नहीं कभी विजय अभियान हुआ करते,
हथियारों के बूतों पर, नहीं देश महान हुआ करते ।
ये भारत की माटी, माँ के माथे का चंदन है ।
इस सुधा की वसुधा को, करते हम प्राणों से वंदन है ।।

हमसे ना टकराना - भारत-चीन डोकलाम विवाद

द्वितीय पुरस्कार ('क' वर्ग)
श्रीमती सुनीता रानी कुलपति,
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई

भारत के पहरेदारों ! तुमको शत-शत नमन ।
सूझबूझ और कूटनीति से छाँट दिए संकट के घन ।
पंचशील के हम अनुयायी, चाइना को यह दिखा दिया।
गिद्ध-दृष्टि मत डालो किसी पर, शंखनाद यह फूँक दिया ।।
हमसे मत टकराना चीन, हम भारत के वज्र नवल ।
हमको मत धमकाना चीन, हम धीर-वीर-गंभीर अचल ।।

राम-कृष्ण-गौतम-गांधी की धरती के रखवाले हैं ।
वीर शिवाजी-राणा प्रताप के वंशजों ने हमें पाला है।
बुरी नजर हम पर जो डाले, उसको देंगे जवाब प्रबल ।
हमसे मत टकराना तुम चीन, हम भारत के वज्र नवल ।।

त्याग-एकता, सत्य-अहिंसा की बहती अविरल धारा है ।
प्रेम-सद्भाव बसा जन-जन में, चारों ओर भाईचारा है ।
दुश्मन की हर एक चाल को, कर देंगे हम पूर्ण विफल ।
हमसे मत टकराना तुम चीन, हम भारत के वज्र नवल ।।

विश्व बंधुत्व-वसुधैव कुटुंबकम को मन में हम पाले हैं ।
अपने पड़ोसी देशों के सुख-दुख के हम रखवाले हैं ।
भुटान की रक्षा की खातिर, डोकलाम में दिया दखल ।
हमसे मत टकराना तुम चीन, हम भारत के वज्र नवल ।।

अरे चीनियों ! याद रखो अब,
सन् 62 में हथियाया था,
भारत के पावन हिस्सों को ।
अब कभी न छूने देंगे, भारत माता के आँचल को।
हमसे मत टकराना तुम चीन, हम भारत के वज्र नवल ।।

जिस दिन से चाइना ने डोकलाम में सेना भिजवाई थी ।
सिर पर कफन बाँध, हमने रण की कर ली तैयारी थी ।
अस्त्र-शस्त्र से हुए सुसज्जित, खड़े हुए हैं हम अविचल ।
हमसे मत टकराना तुम चीन, हम भारत के वज्र नवल ।।

हम प्रहरी ऊँचे हिमाद्रि के, खाक में तुम्हें मिला देंगे ।
भारत की धरती हो या डोकलाम, पैर नहीं देंगे रखने ।
अपने प्राणों की बलि देकर, कर देंगे भारत को सबल ।
हमसे मत टकराना तुम चीन, हम भारत के वज्र नवल ।।

छल-कपट से दुनियाभर में तुमने धाक जमाई है ।
कुत्सित व्यापारी बनकर घर-घर में तुमने आग लगाई है ।
ईंट का जवाब पत्थर से देकर, कर देंगे तुम्हारी नीति विफल ।
हमसे मत टकराना तुम चीन, हम भारत के वज्र नवल ।
हमको मत धमकाना चीन, हम धीर-वीर-गंभीर अचल ।।

मनुष्य सदा अपनी मातृभाषा में ही विचार करता है। इसलिए अपनी भाषा सीखने में जो सुगमता होती है दूसरी भाषा में हमको वह सुगमता नहीं हो सकती।

- डॉ. मुकुन्दस्वरूप वर्मा

'कविता लेखन प्रतियोगिता - 2017'

हमसे ना टकराना - भारत-चीन डोकलाम विवाद

तृतीय पुरस्कार ('क' वर्ग)
श्रीमती अंजना माझी
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई

भू-लोक का गौरव गान,
सदियों की पहचान है ।
अपनी संस्कृति और सभ्यता,
भारत का अभिमान है ।

जीयों और जीने दो का संदेश,
और बाँटते सबको प्यार ।
किन्तु स्वाभिमानता के मूल्य पर,
नहीं सहेंगे अत्याचार ।

अरे, चीनियों जरा संभालों,
अपने देश और द्वार ।
हमने भृकुटि टेढ़ी की तो,
सह न सकोगे वार ।

बहुत हो चुकी भाषणबाजी,
अब मुद्दे की बात करो-
भारत से टकराकर क्या तुम,
झेल पाओगे प्रहार यह बात कहो ?

रोजी-रोटी हमसे चलती,
मत भूलो औकात को,
फैला सारा व्यापार यहाँ पर,
बचा लो अपनी साख को ।

तीन देशों की साझा सड़क ये
डोकलाम कहलाती है ।
वैसे तो भूटान का हिस्सा-
हिन्द-चायना को मिलाती है ।

डोकलाम के मार्ग से आकर,
भारत पर कब्जा कर लेंगे ।
मंशा तुम्हारी बड़ी गलत है,
कभी न पूरी होने देंगे ।

सीमा पर बढ़ते तनाव का,
चारों ओर है असर हो रहा-
चीनी सामानों की बिक्री रोको,
लोगों में संदेश जा रहा ।

चारों ओर है नारेबाजी-
चीनी-सामान का बहिष्कार करो ।
कहने भर से कुछ न होगा,
साथ चाहिए सरकार का ।

चीनी सामान के विज्ञापनों से
भरे हुए हैं टी.वी.चैनल,
इन पर रोक लगानी होगी,
तभी स्वदेशी मंत्रा होगा ।

बीत गए सन् पैंसठ वाले,
नए भारत का आह्वान करो,
युग-निर्माता भारत है,
ये सच्चाई को स्वीकार करो ।

आखिर उनकी समझ में आयी,
व्यर्थ की तकरार है,
विश्व विजेता भारत है,
किसकी ये सरकार है ?

शुभ-दिन बना अट्ठाईस अगस्त,
चीनियों के हुए हौंसले पस्त,
दोनों ने सेनाएँ हटाई,
समझौते की याद दिलाई ।

सदा रखेंगे ऊँची मशाल,
चाहे कितनी भी कठिन डगर,
ऊर्जा और उत्साह में भरकर,
चलते होकर हम निडर ।

भारत फिर होगा विश्व गुरू,
सब कदमों को चूमेंगे,
अपनी धरती और मान,
हम कभी न बिकने देंगे ।

आशाओं के दीप जलाकर,
भारत का करते गुणगान हम।
पृथ्वी से लेकर आकाश तक,
नित बढ़ाते देश का मान हम।

एकता और सद्भाव

प्रथम पुरस्कार ('ख' वर्ग)
श्रीमती चैताली लोहार,
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई

एकता तो बहुत है हम में,
पर सद्भाव कुछ कम होने लगा है ।
फेसबुक पर तो बहुत मित्र हैं हमारे,
पर घर का बंधुत्व कम होने लगा है ।।

टी.वी. पर देखी औरत की कहानी
आँखों में आँसू का बादल छाया ।
घर की औरत का क्या हाल है,
ये अंदाजा भी नहीं आया ।

समझदार तो बहुत हैं हम,
पर अपनों को समझना कम होने लगा है ।।
एकता तो बहुत है हम में,
सद्भाव कुछ कम होने लगा है ।।

आरक्षण के लिए हो एक झगड़ते हैं हम,
पर अन्याय हो कहीं पर तो बस सांत्वना देते हैं ।
कुछ नहीं कर बस दोष न्याय व्यवस्था को देते हैं,
किसी के न्याय के लिए क्या हम मदद कर पाते हैं?

किसी भी पार्टियों में शामिल होता है इन्सान,
पर सामाजिक कार्यों से दूर भागने लगा है ।।
एकता तो बहुत है हम में,
सद्भाव कुछ कम होने लगा है ।।

सद्भाव तो इतना दूर हो गया,
कि 'सद्भावना दिवस' मनाने लगे ।
एकता तो थी वही मौजूद सभी में,
सद्भाव दिखाने की कोशिश जताने लगे ।

इतनी खुबसूरत है संस्कृति हमारी,
पर संस्कार का महत्व कम होने लगा है ।।
एकता तो बहुत है हम में,
सद्भाव कुछ कम होने लगा है ।।

पत्थर दिल तो हम अब भी नहीं है,
अनेकता में एकता नारा है हमारा ।
भूकंप हो या सुनामी या हो बम विस्फोट,
इसी देश का इन्सान सहारा है हमारा ।।

हम सब एक हैं, दुनिया को दिखलाते हैं,
चलो सद्भाव का महत्व खुद को समझाते हैं ।।
यहीं जीवन, यहीं मृत्यु, सब कुछ यहीं है,
यह संसार का नियम खुद को बताने लगेंगे ।।

अपने-पराये सभी से प्यार से करो बर्ताव,
ऐसे अपने बच्चों को विरासत में मिलते रहेंगे एकता और सद्भाव।।

****

अंग्रेजी सीखकर जिन्होंने विशिष्टता प्राप्त की है, सर्वसाधारण के साथ उनके मत का मेल नहीं होता। हमारे देश में सबसे बढ़कर भेद वही है।

- रवीन्द्रनाथ ठाकुर

'कविता लेखन प्रतियोगिता - 2017'

एकता और सद्भाव

द्वितीय पुरस्कार ('ख' वर्ग)
श्री विश्वास माने
प्राथमिक अध्यापक,
प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई

उनका काफिला निकला जीत का, देख रहा हूं मैं,
न कुछ सुन रहा हूं, न कुछ बोल रहा हूं मैं ।

शोर, शराबा चला संसद में, देखकर परेशान हो रहा हूं मैं,
न कुछ बोल रहा हूं, न कुछ सुन रहा हूं मैं ।

आवाजों में दब गया सच, संवाद कहीं खो गया
फेक न्यूज की कड़ी में जाने सब कुछ उलझ गया,
इसलिए मौन हो रहा हूं,
न कुछ बोल रहा हूं, न कुछ सुन रहा हूं मैं ।

ऐसे में, कैसे कहूं मन की बात, कौन सुनेगा मेरी फरियाद,
एकता, भाईचारा खो रहा है, देखकर हैरान हो रहा हूं,
न कुछ बोल रहा हूं, न कुछ सुन रहा हूं मैं ।

धर्मनिरपेक्षता, भाईचारा अब ढोंग हैं कह रहे हैं वो
एक दूसरे को दुश्मन समझ रहे हैं वो,
इस तरह अकेला पड़ गया हूं मैं
न कुछ बोल रहा हूं, न कुछ सुन रहा हूं मैं ।

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
शांति और सद्भाव आपस में रखना
ये कहते-कहते चुप हो रहा हूं मैं,
न कुछ बोल रहा हूं, न कुछ सुन रहा हूं मैं ।

एकता और भाईचारा, शांति और सद्भाव
यही हमारी शान हैं बुद्ध की इस धरती पर
मेरा देश महान है । यही संविधान की पहचान है ।
यही संविधान की पहचान है ।

तृतीय पुरस्कार ('ख' वर्ग)
श्रीमती आमला पंडित
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई

(खण्ड-क)

एक बार की बात है यारों,
दो चरहा रहते थे वन में ।
एक रोटी के टुकड़े की खातिर,
लड़ पड़े दोनों आपस में ।।

मौका परस्त वानर ने इसका,
पूरा-पूरा लाभ उठाया ।
छीना टुकड़ा उन लोगों से,
बंदर बांट प्रचलन में आया ।।

पंचतंत्र की यह कथा है प्राचीन,
सामयिक लगती है अब भी,
एकता सद्भाव के अभाव में,
दिल टूटे, टूटे राष्ट्र भी ।।

(खण्ड-ख)

एक समय था जब भारत ने,
एकता सद्भाव का बिगुल बजाया ।
वसुधैव कुटुम्बकम् के नारे से,
अपना विश्व में परचम फहराया ।।

आज क्यों स्थिति विपरीत हो गयी ?
आधुनिकता ने कैसा पहना चोला ?
एकता सद्भाव विलुप्त हो गए,
राम-रहीम बंट गए ।

दादा-दादी दूर की बात है,
भाई न चाहे भाई का साथ ।
न रहा कहीं अपनापन,
संयुक्त परिवार का टूटा रिवाज ।।

इस विघटन ने इस समाज पर
ऐसा रंग आज है फेरा ।।
धन लोलुपता और क्षुद्र स्वार्थ से,
राम-रहीम बंट गए ।

एकता के बल पर ही,
गांधी ने देश को स्वतंत्र कराया ।
उसी देश में हिंसा ने अब,
धर्म के नाम पर उत्पात मचाया ।।

संशय और नफरत के बादल,
प्रतिदिन गहरे होते जाते ।
अपने पराये की ऊँची दीवारें,
कलुषित मन ने तोड़े नाते ।।

(खण्ड-ग)

सद्भावना वह दिव्य मंत्र है,
एकता को जो रखे पिरोए ।
इसी एकता की पृष्ठभूमि पर
मानवता के बीज थे बोए ।।

इसी मंत्र का लेकर सहारा,
भारत विश्व में सिरमौर बना ।
इसी मंत्र बल पर ही तो,
मुंबई भारी बारिश में बचा ।।

अनगिनत जानें थी गईं बचाई,
बिना धर्म का फर्क किए ।
मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे सब,
मानव की शरणस्थली बने ।।

जब हम जानें इसकी ताकत,
आपस में क्यों लड़ते हो भाई ?
रहो अब सब मिलजुलकर,
समझो सबको अपना ही भाई ।।

न हो हिन्दू, न हो मुसलमान,
न हो सिख, न कोई इसाई ।
मानवता से जोड़ ले नाता,
सद्भाव ही हो हमारा सांई ।।

(खण्ड-घ)

दीप जलाएं हम प्रेम के
घर-घर में उजियारा हो ।
सद्भाव हमारा हो धर्म अब,
एकता ही हमारा नारा हो ।।

मानव को मानव से जोड़े,
संकीर्णता को अब हम छोड़ें ।
निर्माण करें हम विश्वास पुलों का,
नफ़रत की दीवारें तोड़ें ।।

ऐसा निर्माण करें इस जग का,
जहाँ हर हो अपना, न कोई हो बेगाना।
सद्भाव ही हो धर्म हमारा,
एकता ही हमारा नारा हो ।।

भारत-पाक क्यों आपस में रूठे,
हिंद-चीन क्यों नहीं बन जाते भाई ।
पंचशील के कायल हैं हम,
अपने झगड़े सुलझा लो भाई ।।

पंचतंत्र की इस गाथा से,
यही एक सीख सिखानी है ।
ऊपर ऊठो, अपने स्वार्थ से,
विश्व को अखंडित बनाना है ।

बंदर-बांट न होने देंगे,
न कोई भेद, न कोई बेगाना हो,
सद्भाव ही हो धर्म हमारा,
एकता ही हमारा नारा हो ।।

'कविता लेखन प्रतियोगिता - 2017'

बेटियाँ

प्रथम पुरस्कार ('ग' वर्ग)
श्रीमती भारती एस.
प्राथमिक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई

सुंदर कोमल इक कली की तरह,
एक एहसास हैं बेटियाँ,
निश्चल मन परी का रूप लिए
कड़कती धूप में शीतल छाया की तरह,
उदासी को मिटा दें ऐसी दवा हैं बेटियाँ ।
घर की रौनक, चिड़ियाँ की तरह,
अंधेरे से उजाला लाती हैं बेटियाँ,
सुबह के सूरज की किरणों जैसी,
चंचल सुमन मधुर आभा हैं बेटियाँ ।
इन्द्रधनुष के सात रंगो की तरह,
कभी माँ, कभी बहन होती हैं बेटियाँ,
मिश्री सी मीठी, शहद की तरह,
ससुराल में घुल मिल जाती हैं बेटियाँ ।
पिता की उलझन सुलझा कर, नासमझ की तरह,
पिता की पगड़ी, गर्व सम्मान होती हैं बेटियाँ ।
पिता और पति दोनों घरों की लाज रखती हैं बेटियाँ,
दिल कठोर रख कर, चेहरे पर मुस्कान लाती हैं बेटियाँ ।
असीम दुलार की हकदार हैं बेटियाँ,
समझो ईश्वर का वरदान हैं बेटियाँ,
मानव कल्याण के निर्माण में धरती पर उतरती हैं बेटियाँ,
बड़े पुण्य करने पर ही जन्म लेती हैं बेटियाँ ।
हे पालकों ! मेरा तुमसे बस इतना ही है कहना,
बेटियों को बोझ न समझो ।
ईश्वर के इस वरदान का तिरस्कार न करना,
न जाने कब इनमें से कोई दुर्गा और सीता बन जाए,
धरती इन विदूषियों से वंचित न रह जाए ।

द्वितीय पुरस्कार ('ग' वर्ग)
श्रीमती शोभना डी पनिकर
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
प.ऊ.शि.सं., मुंबई

पंख फैलाके उड़ ले तू, नीले आसमान को छू ले जरा,
खुलकर जी ले अपनी जिन्दगी, खुद को संभालना सीख ले तू ।
बिटियाँ न घबराना तू, ऊँची उड़ाने भर ले जरा,
रूकना नहीं तू, गिरना नहीं, गिद्धों की नजरों से बच ले तू ।।1।।

बेटों से न कम है तू, बिटियाँ ये समझ ले जरा,
पापा का सहारा बनना तू, मम्मी से फ्रेंडशिप कर ले जरा ।
स्वर्ग को घर ले आयी तू, घर को रोशन कर ले जरा,
अपने वजूद को जान ले तू, सुंदर श्रृष्टि रच ले जरा ।।2।।

कठिनाईयों से न घबराना तू, हर मुश्किल से संघर्ष कर ले जरा,
अबला नहीं, न निर्बल तू, सम्मान से जीना सीख ले जरा।
स्वावलंबी बन कर रहना तू, अपनी अहमियत पहचान जरा,
संस्कारों से न मुकरना तू, नव युग का निर्माण कर ले जरा ।।3।।

नन्ही परी बन कर उड़ ले तू, नीले गगन को छू ले जरा ।।

बेटियाँ

तृतीय पुरस्कार ('ग' वर्ग)
सुश्री सरीफा पिनेरो
प्राथमिक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई

बेटी! बेटी! बेटी! हर किसी को है बेटी,
रोती! रोती! रोती है हर एक की बेटी ।

भगवान का दिया वरदान हैं बेटियाँ,
हर पिता का आत्म-सम्मान हैं बेटियाँ,
सुना है धूप में ठंडी छाँव हैं बेटियाँ।

पर सम्मान समाज में बेटों का होता,
अगर बेटा कुल-दीपक है घर का,
तो दो घर रोशन करती दीप हैं बेटियाँ ।

फिर क्यों होता अपमान बेटियों का,
जब करती घर रोशन सारा,
जल्लाद हैं वे लोग जो करते उसके खात्मा,
भूलों मत, हर घर-परिवार की नींव हैं बेटियाँ।

मांगी जाती हैं बेटों की मन्नतें,
लेकिन घर-घर में संगीत लाती हैं बेटियाँ,
विदा होने के बाद, बाबुल का आंगन,
तब याद आती हैं बेटियाँ ।

हमें तो बेटियाँ भगवान का आशीर्वाद लगतीं,
फिर क्यों बाँह पसारे प्यार मांगती,
अरे! गर्भ से इन पर है तलवार लटकी,
जन्म से ही अकेली रोती हैं बेचारी बेटियाँ ।

हर घर-परिवार बसाती,
प्रसव-वेदना, दु:ख-दर्द सहती हैं बेटियाँ,
कभी माँ, कभी बेटी,
तो कभी पत्नी का रोल निभाती हैं बेटियाँ ।

अगर न बचा सके इन्हें,
तो खत्म हो जाएगीं लोरियाँ,
अरे, स्वार्थी ! मातृशक्ति से ही तो चलती दुनिया,
इसलिए तो अनमोल होती हैं बेटियाँ ।

****

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

- मैथिलीशरण गुप्त

'निबंध लेखन(शिक्षक) प्रतियोगिता-2016'

प्रदूषण समस्याएँ एवं समाधान

प्रथम पुरस्कार ('क' वर्ग)
श्रीमती अमृत मल्होत्रा
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई

प्रदूषण का शिकार है हर मानव।
विश्व का ये सबसे बड़ा दानव।
प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है
ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ा रहा है।।

प्रकृति ने मनुष्य को एक सुंदर, सुखद अनमोल आवरण प्रदान किया है पर जैसे-जैसे विज्ञान के उपकरणों का विकास होता जा रहा है मनुष्य अपने भौतिक सुखों की होड़ में प्रकृति को प्रदूषित करता जा रहा है। अंधाधुंध वृक्षों को काटता चला जा रहा है। आलीशान मकान, चौड़ी-चौड़ी सड़कें, तीव्रगामी वाहन, द्रुतगामी गाड़ियों की चाह में पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है। ऐसे में करें तो क्या करें, जाएं तो जाएं कहाँ ?

प्रदूषण का अर्थ

प्रदूषण का अर्थ है प्राकृतिक वातावरण या वायुमंडल को प्रदूषित करना। दैनिक कार्यों से लेकर बड़ी से बड़ी चीज़ों में प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। मनुष्य के तीन मुख्य प्राण तत्व हैं- जल, भूमि और वायु। जब यही प्रदूषित हों तो मनुष्य का जीना तो दूभर होगा ही। आज प्रदूषण सुरसा की भांति हमारी प्रकृति को निगलने की कोशिश कर रहा है।

प्रदूषण के परिणाम

- शुद्ध जल न मिलना
- शांत वातावरण न मिलना
- शुद्ध वायु न मिलना
- शुद्ध खाद्य न मिलना

इसी आधार पर-

प्रदूषण के प्रकार

1. जल प्रदूषण
2. वायु प्रदूषण
3. भूमि प्रदूषण
4. ध्वनि प्रदूषण

1. जल प्रदूषण:

अशुद्ध जल का हाल तो देखो।
प्रकृति को बेहाल तो देखो।
दूषित जल ने कर दिया विनाश।
रोके बिना न होगा विकास।।

'जल ही जीवन है', 'गंगा तेरा पानी अमृत' ये वाक्य एक ख्वाब बनकर रह गए हैं। नदियों में गंदे नालों का पानी मिलने के कारण पानी काला दिखाई देता है। कारखानों का अवशिष्ट, पानी में मिलने के कारण वह लाल और काला दिखाई देता है। कई बार तो पीने के पानी में सीवेज़ का पानी मिल जाता है। जो कई बीमारियों को जन्म देता है। धार्मिक और सामाजिक अनुष्ठान भी प्रदूषण का कारण हैं जैसे- जल में शवों या हड्डियों को प्रवाहित करना, तेल व घी के दिए छोड़ना, फूल आदि बहाना।

2. वायु प्रदूषण:

न शुद्ध जल बचे
न शुद्ध वायु बचे।
धरा पर फसल न उपजे
हर ओर हाहाकार मचे।।

मनुष्य जीवित रहने के लिए ऑक्सीजन ग्रहण करता है तथा कार्बन-डाइ-ऑक्साइड छोड़ता है। ये कार्य हमारे वृक्ष बखूबी करते हैं पर अफसोस अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए इन वृक्षों का सफाया किया जा रहा है। 'वन रहेंगे तो हम रहेंगे' जबकि वनों को नष्ट किया जा रहा है। कोयला व वनों के जलने से प्रदूषण फैल गया है। कारखानों की

जहरीली गैसें वायुमंडल में व्याप्त हैं जिससे सांस लेना मुश्किल हो गया।

जब मनुष्य वृक्षों को काटता है तो वृक्ष बेचारे, निरीह व मूक बनकर तमाशा देखते हैं क्योंकि वे लाचार होते हैं लेकिन जब प्रकृति अपने प्रकोप दिखाती है तो मनुष्य लाचार और मजबूर हो जाता है।

वायु प्रदूषण वहाँ अधिक होता है जहाँ वृक्ष कम होते हैं आबादी अधिक होती है, कारखाने अधिक होते हैं।

3. भूमि प्रदूषण:

धरा जो उगलती थी सोना जिसकी बड़ी थी शान।
उसी धरती माँ को प्रदूषण ने बना दिया है वीरान।।

बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि धरती जो हमारी माँ समान है उसी को हम मैला कर रहे हैं। उपजाऊ भूमि पर इमारतें खड़ी कर रहे हैं। राख, कचरे या मलबे को यूं ही फेंक रहे हैं खुले में शौच जा रहे हैं। खुली हवा में ठोस कचरा फेंक रहे हैं। प्लास्टिक की थैलियों का अत्यधिक प्रयोग कर रहे हैं। कीटनाशक का प्रयोग बहुत ज्यादा कर रहे हैं जिसके कारण भूमि प्रदूषित होती जा रही है। कृषि के लिए उर्वर भूमि ढूंढना मुश्किल हो गया है हरियाली न के बराबर है। जिधर नजर दौड़ाओ बहुमंजिला इमारतें ही दिखाई देती हैं। वाकई यह एक गंभीर समस्या है।

4. ध्वनि प्रदूषण:

चारों तरफ शोर ही शोर। शुद्ध नहीं अब सुबह की भोर।
प्रदूषण है कण-कण में, बीमारी है जन-जन में।।

मनुष्य शांत वातावरण में रहना चाहता है लेकिन गाड़ियों की तेज आवाज, वाहनों की कर्कश ध्वनि, शादी, क्लबों व समारोहों की चिल्लपों, हथौड़े, बुलडोजर की कर्णभेदक ध्वनि माहौल को प्रदूषित कर रही है। इमारतें, सड़कें बनाते समय व हाईवे बनाते समय जिन विस्फोटों का प्रयोग किया जाता है वे तो कान बंद करने पर मजबूर कर देते हैं। इस ध्वनि प्रदूषण में- रेडियो, टेपरिकार्डर, लाउडस्पीकर की ऊंची आवाज भी शामिल है। इस प्रदूषण से कई बीमारियाँ होती हैं जैसे- मानसिक तनाव, बहरापन, हृदयघात, उच्च रक्तचाप, ब्रेन-हैमरेज आदि।

उपर्युक्त 4 मुख्य प्रदूषणों के अतिरिक्त 3 और प्रदूषण हैं जो माहौल खराब करते हैं-

1. रासायनिक प्रदूषण
2. प्रकाश प्रदूषण
3. रेडियोधर्मी प्रदूषण

1. **रासायनिक**-ये प्रदूषण कीटनाशक व रोगनाशक के अत्यधिक प्रयोग से होता है।
2. **प्रकाश**- विद्युतीय चीजों का बहुत अधिक इस्तेमाल करने पर जैसे- उच्च तापमान के बल्ब जलाने पर।
3. **रेडियोधर्मी**-परमाणु विस्फोट से रेडियोधर्मी पदार्थ वायुमंडल में व्याप्त हो जाता है। ठंडा होने पर बूंदों का रूप ले लेता है तथा वायु के झोकों से संपूर्ण पर्यावरण में फैल जाता है।

प्रदूषण के प्रमुख कारण

1. अत्यधिक जनसंख्या होना
2. लोगों का अशिक्षित होना
3. अंधविश्वासी होना
4. देश में गरीबी व भुखमरी
5. शहरीकरण व औद्योगिकीकरण
6. प्लास्टिक थैलियों का अधिक प्रयोग
7. वातानुकूलन व फ्रिज के लिए क्लोरो-फ्लोरो-हाइड्रो कार्बन का अत्यधिक प्रयोग
8. कारखानों के अवशिष्ट का सही निष्कासन नहीं होना।
9. खुले में ठोस कचरा फैलाना
10. वृक्षों की अंधाधुंध कटाई
11. कीटनाशक दवाइयों का अत्यधिक प्रयोग
12. शौचालयों की कमी

प्रदूषण के उपर्युक्त कारणों से अनेक घातक परिणाम होते हैं जिनका मानव जाति पर बुरा असर पड़ता है। वे दुष्परिणाम निम्नलिखित हैं-

'निबंध लेखन(शिक्षक) प्रतियोगिता-2016'

प्रदूषण के दुष्परिणाम

1. तापमान में अचानक वृद्धि होना
2. सूखा, अकाल, बाढ़ व भूस्खलन का प्रकोप
3. महामारी फैलना
4. अस्थमा, दमा, कैंसर, हृदयघात आदि भयंकर बीमारियां होना
5. अतिवृष्टि, अनावृष्टि व अल्पवृष्टि होना
6. उपजाऊ भूमि न मिलना
7. सांस लेने में परेशानी
8. त्वचा संबंधी रोग होना
9. दैनिक जीवन अस्त-व्यस्त होना

प्रदूषण समस्या के समाधान

हम सबको मिलकर कदम बढ़ाना है।
प्रकृति को (पर्यावरण को) प्रदूषण मुक्त बनाना है।
जब तक प्रदूषण दूर होगा नहीं
देश उन्नति की ओर अग्रसर होगा नहीं।।

वास्तव में प्रकृति ने मनुष्य को भरपूर नियामतें दी हैं। प्रकृति जीवनदायिनी है अत: इसका संरक्षण हमारा कर्तव्य है। अगर हम इस दिशा में कार्य नहीं करेंगे तो वर्तमान के साथ-साथ अपने भविष्य को भी गर्त में डूबो देंगे। निम्नलिखित छोटे-छोटे समाधानों व उपायों से हम प्रदूषण को काफी हद तक रोक सकते हैं-

1. जनसंख्या पर नियंत्रण किया जाए।
2. देश की भुखमरी, गरीबी दूर करने का प्रयास किया जाए।
3. प्लास्टिक थैलियों का कम से कम प्रयोग किया जाए।
4. वृक्षों को न काटा जाए। अगर एक काटा जाए तो दो वृक्ष लगाये जाएं।
5. कारखानों से निकलने वाले अवशिष्ट को भूमिगत किया जाए।
6. चिमनियों को बहुत ऊंचा बनाया जाए।
7. प्रदूषण की समस्या के प्रति जागरूकता फैलाई जाए।
8. सरकार तथा जनता के बीच सहयोग होना चाहिए।
9. अधिक से अधिक शौचालय बनाए जाएं।
10. तेज संगीत व हॉर्न बजाने पर रोक लगायी जाए।
11. खुले में कचरा न फेंके।
12. जल में शवों व हड्डियों के विसर्जन पर रोक लगे।
13. प्लास्टिक, पुराने कपड़े, धातु, कांच, सिरेमिक तथा अन्य वस्तुओं के निपटारे की उचित व्यवस्था हो।
14. कीटनाशक का उपयोग कम से कम किए जाएं।
15. क्लोरो-फ्लोरो-हाइड्रोकार्बन का कम से कम प्रयोग हो।
16. जल, भूमि, वायु तथा ध्वनि से संबंधित जो अधिनियम बनाए गए हैं उनका कड़ाई से पालन हो।

इस प्रकार यदि हम उपर्युक्त उपायों पर अमल करेंगे तो अवश्य ही प्रदूषण पर नियंत्रण कर सकेंगे-

प्रकृति है हम सबकी शान
हम सभी करें इसका सम्मान।।
पर्यावरण का हम ध्यान रखें
तभी बनेगा देश महान।।

यह खुशी की बात है कि हमारी वर्तमान सरकार इस ओर ध्यान दे रही है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री का स्वच्छता अभियान व गंगा बचाओ अभियान इस दिशा में एक ठोस कदम है।

यदि वास्तव में देश-दुनिया के अस्तित्व को बचाना है तो हमें प्रदूषण को मिटाना ही होगा-

हम सब का एक ही नारा।
प्रदूषण मुक्त हो देश हमारा।।

हम सब की जिम्मेदारी
प्रदूषण मुक्त हो दुनिया सारी।
आओ हम सब कसम खायें
प्रदूषण को दूर भगाएँ।।

*****

प्रदूषण समस्याएँ एवं समाधान

प्रथम पुरस्कार ('ख' वर्ग)
श्रीमती सिसेलिया नेरुलकर
प्राथमिक अध्यापिका
प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई

न पीने का जल बचा,
न बची शुद्ध हवा।
धरा पर अनाज न उपजे,
हर तरफ हाहाकार मचे।

चारों तरफ शोर ही शोर,
कैसे होगी शुद्ध ये भोर।

नदी, तालाब बन गए कूड़ादान,
दूषित रास्ते बन गए श्मशान।
सदाबहार से सजे जंगल हो गए नष्ट,
पर्यावरण तो हो गया भष्म।

आज के वैज्ञानिक युग में प्रदूषण एक बड़ी समस्या है परन्तु यह समस्या सदियों से चली आ रही है। प्राचीन काल से यह समस्या है, परन्तु इसका समाधान अब तक नहीं हो पाया है। मनुष्य जब खानाबदोश था और अपने भोजन की तलाश में इधर-उधर भटकता था तो हर तरफ गंदगी फैलाता था। जंगल की लकड़ी काटना, अन्य प्राणी, जीव को मारकर खाना आदि इसमें शामिल हैं। मनुष्य ने अग्नि का आविष्कार किया और विकास के इस क्रम में गंदगी भी साथ विकसित हुई।

आज मनुष्य विकसित है। वह अच्छा बुरा समझता है। पर क्या कभी मनुष्य ने प्रदूषण रोकने की कोशिश की? नहीं, बल्कि प्रदूषण और अधिक बढ़ता गया और अब इसे रोकना लगभग नामुमकिन है।

आपने प्राचीन काल के सिंधु घाटी और मोहनजोदड़ों सभ्यता के बारे में तो सुना व पढ़ा होगा? उन्होंने उस प्राचीन काल में भी कितना ध्यान दिया था सफाई पर। घर बनाते समय ड्रेनेज, कूड़ादान, गंदे पानी के नाले, ढ़कने की व्यवस्था थी। स्नान गृह घर से दूर और साफ पानी भरने की व्यवस्था इतनी अच्छी तरह से की गई थी कि उसे ग्रेट बाथ का नाम दिया गया था। आज भी इतिहास में हड़प्पा और मोहनजोदड़ों सभ्यता के बारे में पढ़कर पता चलता है कि पर्यावरण को सुंदर रखने का प्रयास हमारे पूर्वजों ने कितनी अच्छी तरह से किया था।

प्रदूषण एक बीमारी है जिसे नहीं रोका गया तो यह फैलती चली जायेगी। प्रदूषण के कई प्रकार हैं:

1. जल प्रदूषण
2. वायु प्रदूषण
3. थल प्रदूषण
4. ध्वनि प्रदूषण

आज के वैज्ञानिक युग में और दो प्रकार के प्रदूषणों की बढ़ोत्तरी हुई है, वे हैं:

1. रासायनिक प्रदूषण
2. प्रकाश प्रदूषण

1. **<u>जल प्रदूषण</u>**: जल ही जीवन है। जल के बिना हम जीवित नहीं रह सकते। परन्तु हम नित्य प्रदूषित जल पीते हैं। जल प्रदूषित होने के कई कारण हैं। गाँव, कस्बों में लोग नदी, तालाब के किनारे कपड़े, जानवर आदि धोते हैं जिससे जल प्रदूषित होता है।

   - कारखानों के रसायनिक पदार्थ नदी, तालाब में छोड़ दिए जाते हैं जिससे वे प्रदूषित हो जाते हैं।
   - गाँवों, कस्बों का शहरों और महानगरों में रूपांतरण।
   - धार्मिक क्रियाओं के कारण।
   - शव और अस्थियाँ बहाने के कारण।

'निबंध लेखन(शिक्षक) प्रतियोगिता-2016'

2. **वायु प्रदूषण**: हमें जीवित रहने के लिए साँस लेना जरूरी है परन्तु प्रदूषित हवा में हम साँस कैसे ले सकते हैं? स्वस्थ रहने के लिए शुद्ध ऑक्सीजन की आवश्यकता है। परन्तु वातावरण में हानिकारक गैसों की मात्रा प्रदूषण के कारण अधिक है। वायु प्रदूषण से कई बीमारियाँ फैलती हैं।

वायु प्रदूषण के कारण:

- कारखानों से निकलता हुआ धुआँ
- कोयले का जरूरत से ज्यादा उपयोग
- लकड़ियाँ जलाना
- वाहनों से निकलता हुआ धुआँ

3. **थल प्रदूषण**: हम जिस धरती पर रह रहे हैं, उसी को हम दूषित कर रहे हैं। विकसित होने के बावजूद अगर हम यह न समझ सके तो क्या फायदा ऐसे विकास का।

थल प्रदूषण के कारण :

- गाँवों और कस्बों का नगरों और महानगरों में रूपांतरण
- कृषि के गलत तरीके अपनाना
- अंधाधुंध जंगलों को काटना
- प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग करना

4. **ध्वनि प्रदूषण**:ध्वनि प्रदूषण एकमात्र ऐसा प्रदूषण है जो प्राचीन काल से नहीं अपितु आधुनिक काल से शुरू हुआ है। मनुष्य जीवन तब सुगम होगा जब हमें बोलने और सुनने में कोई तकलीफ न हो। ध्वनि प्रदूषण के कारण :

- लाऊड स्पीकर ऊंची आवाज में बजाना
- वाहनों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि
- अनावश्यक हॉर्न बजाना
- रेडियो, मोबाइल, टी.वी. ऊंजी आवाज में चलाना।

प्रदूषण के प्रकार तो हमने देखे.....
एक नजर उनके समाधान पर डालें-

1. भारतीय संविधान के 42वें संशोधन के अनुच्छेद 48(ए) के अनुसार पर्यावरण, वन और जीवों का संरक्षण राज्य सरकार करेगी।
2. केन्द्रीय प्रदूषण निवारण बोर्ड ने यह कानून बनाया है कि पर्यावरण, नदी, तालाब आदि गंदा करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई हो।
3. पर्यावरण निवारण समिति भी यह प्रयास कर रही है कि प्रदूषण खत्म किया जाए। इसके लिए एक अलग समिति काम कर रही है जो पर्यावरण की छोटी-बड़ी समस्याओं पर ध्यान देती है।
4. हमारे प्रधानमंत्री स्वयं 'स्वच्छ भारत' अभियान के माध्यम से गंदगी, प्रदूषण को खत्म करने के प्रति प्रयासरत हैं।

हम यह संकल्प करें कि हम अपने घर, ऑफिस से स्वच्छता की शुरूआत करें। अपने भारत को स्वच्छ भारत बनाएं।

सच्ची अहिंसा मृत्युशैया पर भी मुस्कराती रहेगी। 'अहिंसा' ही वह एकमात्र शक्ति है जिससे हम शत्रु को अपना मित्र बना सकते हैं और उसके प्रेमपात्र बन सकते हैं।

- महात्मा गांधी

प्रदूषण समस्याएँ एवं समाधान

प्रथम पुरस्कार ('ग' वर्ग)
श्रीमती अपर्णा टी. बालाजी
प्राथमिक अध्यापिका
प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई

आज का युग विज्ञान का युग है। आज मनुष्य ने पृथ्वी, आकाश और जल पर अपना अधिपत्य जमा लिया है। मनुष्य ने अपनी सुख-सुविधाओं के लिए अनेक प्रकार की मशीनों और आविष्कारों को जन्म दिया है। विज्ञान की सुंदर नगरी में मनुष्य को जहां कई वरदान मिले हैं, वहां कुछ अभिशाप भी हैं। 'प्रदूषण' एक ऐसा अभिशाप है जो विज्ञान की कोख में जन्मा है और जिसे झेलने के लिए हम सब मजबूर हैं।

'प्रदूषण' का अर्थ है- प्राकृतिक संतुलन को असंतुलित करना, न शुद्ध वायु मिलना, न शुद्ध जल मिलना और न शांति मिलना।

जनसंख्या वृद्धि के कारण वनों की तेजी से कटाई हुई और उद्योग-धंधों का विस्तार हुआ। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से प्राकृतिक संतुलन बिगड़ गया है। वर्षा, जल, वायु तथा भूमि पर इसका दुष्प्रभाव पड़ा है। प्रदूषण एक अत्यंत भयंकर समस्या बन चुकी है।

प्रदूषण कई प्रकार के होते हैं - वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण।

वायु प्रदूषण :

महानगरों और शहरों में यह प्रदूषण अधिक है। यहाँ चौबीसों घंटे कारखानों और मिलों की चिमनियों से निकलने वाले धुँए से, बस-ट्रकों आदि वाहनों से निकलने वाले धुँए से, गली-चौराहों पर कूड़ा-कचरा जलाने से निकलने वाले धुँए से वातावरण प्रदूषित हो रहा है। स्वस्थ हवा में साँस लेना यहाँ दुर्लभ हो गया है। धुँए में जहरीले पदार्थ होते हैं जो हमारे साँस द्वारा हमारे फेफड़ों तथा शरीर में प्रवेश करते हैं, जो अत्यंत हानिकारक है। इससे कई बिमारियाँ फैलती हैं जैसे अस्थमा (दमे की बिमारी) जिससे साँस लेने में तकलीफ होती है और खासकर बच्चे इसका शिकार जल्दी हो जाते हैं।

जल प्रदूषण :

'जल' हमारे जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। परन्तु कारखानों के व्यर्थ पदार्थ और कूड़ा, जहरीलें रासायनिक पदार्थ झील, झरणों, सागरों, नदियों और जलाशयों में फेंक दिए जाते हैं। इससे पानी प्रदूषित हो जाता है। जिससे अनेक प्रकार के रोगों का जन्म होता है। कभी जीवनदायनी कही जाने वाली 'गंगा' आज जहरीली हो चुकी है।

ध्वनि प्रदूषण :

मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए शांत वातावरण की जरूरत है। वाहनों के शोर, लाऊड स्पीकरों के शोर, बड़ी-बड़ी मशीनों के शोर, शादी-समारोह, सार्वजनिक उत्सवों जैसे गणेशोत्सव, नवरात्री आदि अवसरों पर चलाए जाने वाले डी.जे. के शोर से लोगों की सुनने की क्षमता कम होती जा रही है। ध्वनि प्रदूषण से मानसिक तनाव उत्पन्न होता है जिससे हृदयविकार भी हो सकता है। इससे बहरापन, अशांति, चिंता जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

आधुनिक विज्ञान के इस जगत से प्रदूषण को पूरी तरह मिटाना सीधी ऊंगली से घी निकालने जैसी बात है। अनेक सरकारी अथवा गैर-सरकारी उपाय असफल सिद्ध हुए है। परन्तु हर समस्या का हल होता है और इस समस्या का हल सिर्फ एक ही है, वो है 'हम'। हर कोई ये न सोचे कि सिर्फ मेरे अकेले से क्या होगा, बल्कि हर व्यक्ति को इस नेक काम में अपना हाथ बटाना चाहिए।

"प्रकृति का न करो हरण, आओ बचाओ पर्यावरण।
पर्यावरण पर दो ध्यान, तभी बनेगा देश महान।।"

विभिन्न प्रकार के प्रदूषण को रोकने के लिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए। वनों की कटाई पर रोक लगा दी जानी चाहिए। वृक्षारोपण पर बल दिया जाना चाहिए। इससे प्रदूषण काफी मात्रा में कम होगा क्योंकि वृक्ष प्रदूषित वायु को स्वच्छ वायु में परिवर्तित करते हैं। हर व्यक्ति को वृक्ष लगाने चाहिए और वृक्ष बढ़ाने चाहिए।

'निबंध लेखन(लिपिक/अधिकारी) प्रतियोगिता-2016'

" हम सबकी है ये जिम्मेदारी, प्रदूषण मुक्त बनाएं दुनिया"

हर व्यक्ति को यह ध्यान देनी चाहिए कि उनके परिसर में कूड़ा-कचरा, गंदगी इकट्ठा न हो। कोयला व पेट्रोलियम पदार्थों का प्रयोग कम करें और सौर-ऊर्जा, एल.पी.जी., सी.एन.जी., वायु ऊर्जा, जल विद्युत जैसे वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का प्रयोग अधिकाधिक करें। इन उपायों को अपनाने से वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण काफी हद तक घटा सकते हैं।

ध्वनि प्रदूषण घटाने के लिए हमें स्वयं ठोस एवं सकारात्मक कदम उठाने चाहिए। रेडियो, टी.वी., ध्वनि प्रसारक यंत्रों को नीची आवाज में बजाना चाहिए। लाऊड स्पीकरों के आम उपयोगिता पर रोक लगानी चाहिए। घरेलू उपकरणों को हमें इस तरह उपयोग करना चाहिए जिससे कम से कम ध्वनि उत्पन्न हो।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि प्रदूषण मिटाने का कारगर उपाय है-सामाजिक जागरूकता। प्रचार माध्यमों का उपयोग करके इस विषय संबंधी सूचनाएँ और जानकारी सब लोगों तक पहुंचानी चाहिए। सामूहिक प्रयास से ही इस विश्वव्यापी प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सकता है। हर व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह इस मिशन में साथ दें और इसको पूरा करने में अपना सहयोग दें।

आजकल हर व्यक्ति अच्छी चीजों में पैसा खर्च न करके, प्रदूषण फैलाने वाली चीजों को खरीदने में पैसा व्यर्थ कर रहा है। हर किसी को अपनी सुविधाओं के अनुसार जीने का हक है, परन्तु प्रकृति को संभाले रखने की जिम्मेदारी भी हमारी ही है। आजकल हममें से अधिकांश लोग फल, हरी सब्जियाँ खरीदने से ज्यादा दवाईयाँ खरीदने पर पैसा खर्च कर रहे हैं। जब तक हर व्यक्ति स्वयं इस प्रदूषण को रोकने के लिए अपना कदम नहीं बढ़ायेगा तब तक यह प्रदूषण नामक दीमक हमें खाता रहेगा।

वातावरण को दूषित करके, स्वस्थ कैसे रह पाओगे,
स्वच्छ हवा न ले पाए तो, घुट-घुट कर मर जाओगे,
आओ मिलकर हम कसम ये खाएं, प्रदूषण मुक्त दुनिया बनाएं
वातावरण से गंदगी हटाकर, वातावरण को सुंदर बनाएँ

आधुनिक भारत की नारी

प्रथम पुरस्कार ('क' वर्ग)
श्रीमती रूपा मंगेश सावंत
प्रवर श्रेणी लिपिक
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

आज के आधुनिक भारत की नारी पुरूष के कदम से कदम मिलाकर चलती है। नारी घर के काम-काज और बाहर भी दफ्तरों में काम करती है। साथ ही बच्चों को भी संभालती है और घर-परिवार का ध्यान भी रखती है। आधुनिक भारत की नारी किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं है। फिर भी हमारे समाज में पुरूष का दर्जा नारी से दो कदम आगे है।

नारी की पहचान आज भी पुरूष के नाम से जोड़कर की जाती है। शादी से पहले लड़की अपने पिता का नाम लगाती है और शादी के बाद पति का नाम लगाती है। उसका अपने नाम का अस्तित्व जैसे कहीं खो गया है। फिल्मों में शुरूआत में जब नाम दिखाते है तो हीरो का नाम पहला और बाद में हिरोइन का नाम आता है। लेडीज फर्स्ट कहीं-कहीं कहने तक ही सीमित है।

आज की आधुनिक भारत की नारी चाँद पर भी जा पहुँची है। इसका उदाहरण कल्पना चावला है। खेल-कूद में भी भारत की नारी आगे रही है। हाल ही में ओलंपिक खेलों में भारत की नारी ने रजत पदक जीता है। भारत की नारी आज हर क्षेत्र में अपना कदम बढ़ा रहीं हैं।

आज की भारत की नारी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश भी जाती है। इसका एक कारण यह हो सकता है कि प्राचीन काल में नारी की शिक्षा व्यर्थ मानी जाती थी। प्राचीन काल में नारी को सिर्फ घर के काम-काज और बच्चे सँभालने के कार्य तक ही समझा जाता था।

पहले नारी घर की चार दीवारों में सीमित रहती थी। आज बाहर निकलकर खुलकर ठंडी हवा में साँस लेती है। घर के बाहर काम कर

'निबंध लेखन(लिपिक/अधिकारी) प्रतियोगिता-2016'

आधुनिक भारत की नारी

प्रथम पुरस्कार ('ख' वर्ग)
श्रीमती संध्या आंब्रे
सहायक
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

हाल ही में अपने व्हॉट्स ऐप मैसेन्जर पर मैंने एक मैसेज देखा जिसमें एक स्त्री की दस भुजाओं वाली तस्वीर थी और वह हर भुजा से कुछ ना कुछ काम कर रही थी। जैसे बच्चे को दूध पिलाना, खाना बनाना, बीमार वृद्ध की सेवा करना, पुस्तक पढ़ना, फोन पर बात करना, खेलना, घर संवारना इत्यादि अनेक प्रकार के काम करते हुए वह दिखाई गई है। तब मन में यही विचार आया- आज के भारत की नारी और अपने नारी होने पर गर्व महसूस होने लगा। कितनी सच बात है कि आज भारत जैसे लोकशाही मूल्य के रक्षणकर्ता देश में नारी अपनी महत्वाकांक्षाओं और मेहनत से हर क्षेत्र में चमकते हुए अपना प्रभाव दिखा रही है।

प्राचीन भारत में नारी को पुरूष के मुकाबले हर क्षेत्र में कमजोर ही माना जाता था और दुय्यम स्थान दिया गया था। पुरूषों की सहायता के बिना महिलाओं का कोई भी काम सफल नहीं होता था बल्कि उन्हें स्वयं कुछ करने की इजाजत ही नहीं थी। समाज के पारंपरिक ढ़ाचे में ही उसकी जिंदगी गुजरती थी। घर, बच्चे, रसोई इसमें ही उसका जीवन सिमटा हुआ था। नारी को भी ऐसा लगता था कि यही उनके जीवन की मंजिल है। इन चीज़ों से बाहर की दुनिया का उसे आभास ही नहीं था।

परन्तु धीरे-धीरे समय बदला। महात्मा श्री ज्योतिबा फुले और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सावित्री बाई फुले जैसे असामान्य लोगों ने स्वयं कष्ट उठा के नारी को शिक्षा का मार्ग दिखा दिया और शिक्षा से समृद्ध जीवन की तरफ नारी की यात्रा शुरू हो गई। नारी शिक्षा का विरोध करने वाले पैसा कमाकर घर के परिवारिक जीवन में हाथ बटाती है तथा अपने बच्चों को पढ़ाती भी है और अच्छे संस्कार भी देती है। बच्चे माँ-बाप से दो कदम आगे चलें और नाम कमायें इसके लिए अपना जीवन नि:स्वार्थ जीती है।

आज के आधुनिक भारत की नारी भले ही आगे बढ़ रही है लेकिन भारत में ऐसे अनेक गाँव या जगह हैं जहाँ नारी आज भी पीछे है। उन्हें आगे बढ़ने से रोका जाता है या फिर उनकी मजबूरी या परिस्थितियां उन्हें आगे बढ़ने से रोकती हैं। आज भी ऐसे कई गाँव हैं जहाँ लड़की को कम उम्र में या फिर जैसे ही 18 साल की हो गयी शादी कर देते हैं। माँ-बाप जैसे-तैसे बस अपनी जिम्मेदारी निपटाना चाहते हैं। वे ये नहीं सोचते कि लड़की पहले शिक्षा प्राप्त करे और अपने पैरों पर खड़ी हो जाए फिर शादी करे।

आज की नारी को अगर बढ़ना है तो हमारे समाज की सोच भी थोड़ी बदलनी होगी। समय के साथ सोच में भी बदलाव आना बहुत जरूरी है। बदलाव का यह मतलब नहीं कि पुरूष जाति को पीछे रखकर नारी जाति को आगे बढ़ाना है बल्कि साथ-साथ चलना है।

******

ऐसे आदमी आज भी हमारे देश में मौजूद हैं जो समझते हैं कि शिक्षा को मातृभाषा के आसन पर बिठा देने से उसकी कीमत ही घट जाएगी।

- रवीन्द्रनाथ ठाकुर

'निबंध लेखन(लिपिक/अधिकारी) प्रतियोगिता-2016'

समाज को भी यह एहसास हो गया कि नारी शिक्षा के जरिए ही समाज का विकास संभव है। धीरे-धीरे नारी शिक्षा का मार्ग सुगम हुआ और वह नए-नए शिखर छूने में सक्षम होती गई।

अपनी मेहनत और निष्ठा से आज राष्ट्र के सशक्त निर्माण में महिलाएँ अपना योगदान दे रही हैं और पूरे विश्व में ख्याति अर्जित कर रही हैं। हाल ही में रिओ-दि-जनेरो-2016 ओलम्पिक स्पर्धा में आंध्र प्रदेश की पी.वी. सिंधू ने रजत पदक जीता और हरियाणा की साक्षी मलिक ने कांस्य पदक जीतकर पूरे भारतवासियों का सिर गर्व से ऊँचा किया। अपने काम के प्रति पूरी निष्ठा और खुद पर विश्वास होने से ये दोनों सभी भारतीयों का सपना सच कर सकीं। पुरूषों के दबदबे वाले रेसलिंग और बैडमिंटन जैसे खेलों में दोनों ने महिला शक्ति का प्रभाव दिखाया है।

आज हर क्षेत्र में भारत की नारी अपनी मेहनत और लगन से तरक्की कर रही हैं। पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर जिम्मेदारियाँ निभा रही हैं। राजनैतिक क्षेत्र में भी जयललिता, मायावती, महबूबा जैसे कितने नाम हैं जो अपने कर्तव्यनिष्ठा से अपने-अपने राज्य की जिम्मेदारियाँ खूब निभा रहीं है। अपने कामों से पूरे राष्ट्र का विकास करने में योगदान दे रही है।

इतना सब करते हुए, नई उड़ानें भरते हुए भी वह अपना घर और अपने लोगों की तरफ भी अपनी परिवारिक जिम्मेदारियाँ निभा रही है। अपने बच्चों की तरफ ध्यान देना, उनके खान-पान संबंधी सभी मांगे पूरी करना, बिमारियों में संभालना यह तो अपनी आंतरिक ऊर्जा से वह कर ही देती है जिसके लिए उसको एक समाधान भी मिलता है। आधुनिक भारत की नारियाँ अपने कर्तव्य और जिम्मेदारियाँ संभालकर भी घर के बाहर का कारोबार संभाल रही है। इतना सब करते हुए उसे सिर्फ सम्मान की चाह है न कि तारीफों की।

स्त्री को क्षण की पत्नी और अनंत काल की माता कहा गया है। इस वाक्य को वह सार्थक बना रही है। परिवार में नारी समर्थ हो तो वह अपने घर को स्वर्ग बना लेती है सिर्फ उसे उसके तरीके से काम करने की इजाजत मिलनी चाहिए।

आज की नारी अपने प्रभाव से समाज में परिवर्तन ला सकती है। भ्रष्टाचार और गरीब मुक्त भारत का निर्माण करने में आज की भारतीय नारी अपना योगदान दे रही है। विश्व में भारत का नाम ऊँचा हो रहा है। यह सब संभव हुआ है शिक्षा की वजह से। शिक्षा की वजह से ही समाज को नारी के सामर्थ्य और साहस का अंदाजा हुआ है।

नई पीढ़ी की नारी को अपने संस्कार और मर्यादा का अनुपालन करते हुए नए क्षेत्र में उज्ज्वल भविष्य बनाना मुमकिन है। नारी के योगदान से भारत बलशाली राष्ट्र बन रहा है।

******

वही भाषा जीवित और जाग्रत रह सकती है जो जनता का ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व कर सके। और हिन्दी इसमें समर्थ है।

- पीर मुहम्मद मूनिस

'निबंध लेखन(लिपिक/अधिकारी) प्रतियोगिता-2016'

आधुनिक भारत की नारी

प्रथम पुरस्कार ('ग' वर्ग)
श्रीमती पुष्पा भास्कर चन्दन
स्टेनो,
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

भारतीय संस्कृति में नारी को प्राचीन काल से महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वह शिव भी है और शक्ति भी। प्राचीन युग में नारी को सज्जन, सम्मान और शक्ति का प्रतीक माना गया है। शास्त्र से लेकर साहित्य तक नारी को महत्वपूर्ण दर्जा दिया गया है। कहावत है:

"यस्य पूज्यते नार्यस्तु, तत्र रमन्ते देवता"

भावार्थ - जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता बसते हैं।

प्राचीन युग में भारत की नारी को आधुनिक नारियों की तरह समाज में काम करने की अनुमति नहीं थी, पर इतिहास गवाह है कि उस युग में भी भारतीय नारी ने भारत देश में अपना मुकाम बनाया। आजादी के दौर में भारत की महिलाओं में जागरूकता आई और उन्होंने पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर आजादी के आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान दिया। सरोजनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, सावित्री बाई फुले, रमादेवी इत्यादि स्वतंत्रता सेनानियों व समाज सुधारकों ने घर से निकलकर देश हित में अपना योगदान दिया। आजादी के बाद नारियों के हित के लिए कई कानून बनाए गये जिसके कारण स्त्रियों को अपना कार्य-कौशल दिखाने के अवसर बढ़े। नारियों ने अपनी कार्य-कुशलता से न सिर्फ घर पर बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में पुरुषों के मुकाबले बखूबी प्रदर्शन किया है। शिक्षा, चिकित्सा, मनोरंजन, खेल, साहित्य, उद्योग, कला आदि के क्षेत्र में अपना नाम रोशन किया है। विवेकानंद जी ने कहा है-

"जब तक स्त्रियों की दशा में सुधार नहीं होता,
तब तक संसार की समृद्धि संभव नहीं है।"

इस बात को आधुनिक भारतीय नारियों ने सच कर दिखाया है। आज लड़कियाँ माध्यमिक परीक्षा, उच्च माध्यमिक परीक्षा, प्रतियोगिताओं में लड़कों से आगे बाजी मार रही हैं। महिलाओं ने पुलिस, सेना, वायुसेना, नौसेना आदि में अपनी पहचान स्थापित कर दी हैं। आधुनिक भारत की महिलाएँ अपनी प्रतिभा का उपयोग कर जमीं से अंतरिक्ष तक जा पहुंची हैं। हमारे देश की **कल्पना चावला और सुनीता विलियम्स ने** अंतरिक्ष की सैर कर देश का नाम अमेरिका जैसे बड़े देशों से तुलना में ला खड़ा कर दिया है। भारत विकसित तभी बन सकता है जब देश में नारी को बराबरी का दर्जा मिले और उसे तरक्की के अवसर मिलें।

मनोरंजन के क्षेत्र में -

सुब्बालक्ष्मी, रमादेवी हंगल, शमशाद बेगम, लता मंगेसकर, आशा भोसले, श्रेया घोषाल, सुनिधि चौहान इत्यादि गायिकाओं ने देश का नाम रोशन किया। मीना कुमारी, वहीदा रहमान, माला सिन्हा, ऐश्वर्या राय बच्चन, करीना कपूर, दीपिका, प्रियंका चोपड़ा जैसी अभिनेत्रियों ने मनोरंजन के क्षेत्र में महिला शक्ति का प्रदर्शन किया है।

खेल के क्षेत्र में -

हमारे देश में महिलाओं के लिए खेलों के क्षेत्र में अच्छा माहौल न होते हुए भी सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, मल्लेश्वरी और हाल ही में हुए रियो ओलंपिक में पी.वी.सिंधू, दीपा करमाकर, साक्षी मलिक ने तो पदक हासिल करके हमारे देश में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में भारत का नाम रोशन किया है। ये सभी महिला खिलाड़ी सशक्त होती आधुनिक भारतीय नारी की झलक हैं।

राजनीति के क्षेत्र में -

इंदिरा गांधी, प्रतिभा पाटिल, सुषमा स्वराज, स्मृति ईरानी, मायावती, ममता बनर्जी इत्यादि महिलाओं ने राजनीति में अपना बहुमूल्य योगदान देकर हमारे देश की प्रगति में चार चाँद लगा दिए हैं।

'निबंध लेखन(शिक्षक) प्रतियोगिता-2017'

साहित्य के क्षेत्र में -
महिला साहित्यकारों ने नारी सामर्थ्य का लोहा मनवाया है।

वाणिज्य के क्षेत्र में -
वित्तीय संस्थानों में शीर्ष पदों के उत्तरदायित्वों को महिलाओं ने बखूबी निभाया है।

इस प्रकार देखा जाए तो नामों की लंबी सूची बन जाएगी। आज हर भारतीय नारी को शिक्षित करने के लिए योजनाएं बनायी गई हैं। महिलाओं की सुरक्षा के लिए महिला आयोग ने भी कदम उठाये हैं। आधुनिक भारत की नारी अब अपना कार्य-कौशल सिर्फ घर पर ही नहीं, अपितु संसार के हर क्षेत्र में बड़ी कुशलता से दिखा रही हैं। कहा जाता है जीवन रूपी रथ के पुरुष और नारी दो पहिए हैं। अगर एक भी रुक गया तो रथ नहीं चलेगा। पुराने युग में भी सबल नारियाँ थीं पर उनको घर के बाहर अपना कौशल दिखाने की उतनी आजादी नहीं थी जितनी आज आधुनिक युग में है। वे रूढ़ियों-रिवाजों, प्रथाओं आदि के नाम पर शिकार होती रहीं हैं। वर्तमान युग में नारी अपनी मुखरता और सूझ-बूझ से इन सब से जूझते हुए आगे बढ़ रही है।

आधुनिक भारत की नारी का रूप देखकर कवि मैथिलीशरण गुप्त की यह पंक्तियाँ पुरानी प्रतीत हो रही हैं:

"अबला नारी! हाय, तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध, आँखों में पानी।"

यह भाव पुराना और झुठलता नजर आता है। आज की नारी हर अवरोध से निपटने में समर्थ है।

नारी सशक्तिकरण के लिए आधुनिक युग बेहद सफल रहा है। जरूरत है इसी गति को बनाये रखने की। साथ ही नारी को भी - माँ, बहन, पत्नी, बहू, बेटी आदि रूपों की महिमा और गरिमा को बनाये रखना है। यह संतुलन बनाये रखा गया तो नारी को उसका मुकाम हासिल करने से कोई नहीं रोक सकता।

"आधुनिक भारत की नारियों! तुम्हें मेरा नमन।"

विमुद्रीकरण (नोटबंदी) - कालाधन पर लगाम हेतु कितना कारगर'

प्रथम पुरस्कार ('क' वर्ग)
श्री योगेन्द्र कुमार शास्त्री
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक,
प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई

प्रस्तावना : विमुद्रीकरण शब्द 'वि' उपसर्ग एवं 'मुद्रीकरण' मूल शब्द से मिलकर बना है जिसका अर्थ होता है- मुद्रा का चलन से बाहर करना अर्थात् वह मौद्रिक फैसला जिसके तहत मुद्रा की किसी इकाई को कानून के तहत अमान्य घोषित कर दिया जाता है ।

मुद्रा का परिवर्तन कोई नई बात नहीं है । यह प्रक्रिया सदियों पुरानी है जो प्राचीन काल से ही प्रचलित है । यदि हम इतिहास उठाकर देखें तो पता चलता है कि अनेक राजाओं, महा-राजाओं ने भी यह नियम अपनाया है। प्राचीन इतिहास में जब एक राजा के स्थान पर दूसरा राजा पदग्रहण करता था तो वह अपने नाम से नये सिक्के छपवाकर पुराने चल रहे सिक्कों का प्रचलन स्थगित करवा देता था । इस तरह नया राजा अपने यश की भी प्राप्ति कर लेता था तथा साथ ही पुराने सिक्कों पर कब्ज़ा जमाकर बैठे भ्रष्टाचारियों पर अंकुश भी लग जाता था । इसका एक बड़ा फायदा यह होता था कि सभी अन्य अधिकारीगण जानते थे कि नया राजा पुराने पैसों का बदलाव करेगा । अत: वे अत्यधिक अनावश्यक धन इकट्ठा नहीं किया करते थे।

विमुद्रीकरण के कारण : विमुद्रीकरण के अनेक कारण हैं । सर्वप्रथम तो यही है कि अनावश्यक धन को अपनी तिजोरियों में कालेधन के रूप भरकर बैठे कुछ लोगों की व्यर्थ की सामर्थ्य पर प्रतिबन्ध लगाना । जब कोई नया राजा राजपद ग्रहण करता है तो वह किसी से बिना वाद-विवाद किये, भ्रष्ट लोगों की कुटिल मानसिकताओं पर कैसे अंकुश लगाये इसके लिए विमुद्रीकरण ही एक ऐसा हथियार है जो बिना कलह किये राज्य को भ्रष्ट होने से बचा सकता है । पत्थरबाज, नक्सलवाद, आतंकवाद और देश में नकली नोटों के प्रचलन को समाप्त करना भी विमुद्रीकरण का एक अहम

कारण है । **भारत की आजादी के पश्चात् की बात करें तो स्वतंत्र भारत के चौथे प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई ने 1978 में विमुद्रीकरण का फैसला लिया था जिसमें 1000, 5000 और 10,000 के नोटों को बन्द किया गया था ।**

विमुद्रीकरण के लाभ : विमुद्रीकरण से होने वाले लाभ निम्नलिखित हैं:

(1) **कालाधन पर अंकुश**: विमुद्रीकरण से कालेधन का संरक्षण करना अत्यंत कठिन हो जाता है । उदाहरणत: भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी जी ने 8 नवम्बर, 2016 को 500 और 1000 के नोटों के विमुद्रीकरण की घोषणा की । इससे ऐसे भ्रष्ट राजनेताओं, अधिकारियों व पूँजीपतियों जिन्होंने अपने घरों में, घरों की दीवारों में, बिस्तरों आदि में बहुत सा कालाधन इकट्ठा कर रखा था वे विमुद्रीकरण से असहाय हो गये । वे न तो इतनी बड़ी रकम को कहीं खर्च कर पा रहे थे और न ही आदान-प्रदान कर सकते थे । इससे घरों में छिपा कालाधन सरकार की तिजोरी में आने की संभावना बन गई ।

(2) **राष्ट्र रक्षा व देशभक्ति**: विमुद्रीकरण से राष्ट्ररक्षा में भी सुगमता आती है । विमुद्रीकरण से देश के दुश्मन, घुसपैठी आतंकवादी जो अनावश्यक धन इकट्ठा करके दुश्मन देशों की मदद से भारत को बर्बाद करने में संलिप्त हैं यदि नोट ही बन्द हो जाए तो उनके पास रखे करोड़ों रूपये एक रद्दी के अलावा कुछ नहीं होंगे क्योंकि इन रुपयों को वे ना तो किसी बैंक में जमा करवा सकते हैं और न ही क्रय-विक्रय कर सकते हैं ।

(3) **युवाओं को नौकरी के अवसर**: इस प्रक्रिया से युवाओं को नौकरी का सुनहरा अवसर प्राप्त होगा । अभी 8 नवम्बर, 2016 से 31 दिसम्बर, 2016 तक देखा गया कि पुराने 500 और 1000 रूपये के नोटों के रखरखाव के लिए बैंकों के पास स्टाफ की भारी कमी देखी गई थी । इस प्रकार बैंकों में नौकरी के नए अवसर सृजित हो सकते हैं।

वस्तुत: विमुद्रीकरण के अनेक लाभ हैं।

विमुद्रीकरण से हानियाँ: जैसा कि हम जानते हैं कि किसी भी प्रक्रिया से लाभ-हानि दोनों ही होते हैं । इसी प्रकार विमुद्रीकरण से जहाँ अनेक लाभ हैं वहीं इससे कुछ हानियाँ भी हैं :

(1) **समय की बर्बादी**: विमुद्रीकरण से लोगों की समय की बर्बादी होती है । निर्धारित समय सीमा के अन्दर नोट बदलने व इसे बैंक में जमा करने के लिए अनेक दिनों तक बैंक के चक्कर लगाने तथा बैंक की पंक्ति में खड़ा होने में लोगों को अपना मूल्यवान समय व्यर्थ में बर्बाद करना पड़ता है ।

(2) **मानसिक तथा शारीरिक समस्या**: विमुद्रीकरण से जहाँ समय की बर्बादी होती है वहीं हर छोटे-बड़े व्यक्ति को मानसिक व शारीरिक परेशानी होती है। घंटों बैंक के सामने लाइन में खड़े होकर नोट बदलवाने में लोगों को शारीरिक परेशानी तो हुई ही साथ में बैंक कर्मी को भी इस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा।

(3) **ज्ञान का अभाव**: लोगों को ऑनलाईन बैंकिंग की जानकारी नहीं होने के कारण काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। ऑनलाईन बैंकिंग एवं डेबिट या क्रेडिट कार्ड से रुपये स्थानांतरण करने, खरीददारी करने आदि की सुविधाएं सभी लोगों की जानकारी में नहीं होने के कारण भी उनको परेशानी का सामना करना पड़ा।

(4) **विमुद्रीकरण से सामान्य लोगों के जीवन में उथल-पुथल**: विमुद्रीकरण का प्रभाव सामान्य लोगों के जीवन को अस्त-व्यस्त कर देता है। बड़े व्यापारियों पर इसका विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि वे अधिकांशत: एटीएम का ही उपयोग करते हैं। इससे सबसे ज्यादा नुकसान किसान वर्ग को होता है क्योंकि वे न तो एटीएम का प्रयोग करना जानते है और न ही अपना पैसा बैंकों में जमा करके रखते हैं। किसान वर्ग अपनी रोजमर्रा की जरूरतों, फसलों आदि में किये जाने वाले विविध खर्च के लिए अपना पैसा घरों में ही रखते हैं। विमुद्रीकरण के कारण उनको इन पैसों के उपयोग व चलन में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा ।

उपसंहार: विमुद्रीकरण का फैसला देश के संवर्धन, सुरक्षा व संरक्षा, विकास इत्यादि के लिए एक सकारात्मक एवं सराहनीय कदम है। यदि प्रति दस वर्ष में यह प्रक्रिया अपनायी जाए तो देश से आतंकवाद, पत्थरबाज, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार, कालाधन इत्यादि जैसे अपराधों को जड़ से समाप्त किया जा सकता है।

'निबंध लेखन(शिक्षक) प्रतियोगिता-2017'

विमुद्रीकरण (नोटबंदी) - कालाधन पर लगाम हेतु कितना कारगर

प्रथम पुरस्कार ('ख' वर्ग)
श्रीमती ममता मिश्रा
प्राथमिक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई

आजकल सभी जगह काले धन की बड़ी चर्चा होती है। टीवी पर लगातार चर्चाएं होती हैं। आखिर ये काला धन है क्या ? काला धन वह छुपाया हुआ या अप्रकट धन है जिस पर सरकार को कोई कर नहीं चुकाया गया होता। यह धन अधिकतर मुद्रा के रूप में छुपाकर रख लिया जाता है। काला धन न केवल मुद्रा बल्कि हीरे-जवाहरातों, प्लाट, मकान आदि के रूप में भी जमा किया जाता है। सरकार को इस धन पर कोई कर नहीं दिया जाता। इसलिए सरकारी एजेंसियों की नज़रों से बचने के लिए अधिकतक गैर-कानूनी कार्य काले धन की मदद से किए जाते हैं। इस धन का कोई रिकार्ड भी नहीं होता। यह काला धन देश की अर्थ-व्यवस्था के समानांतर अर्थ व्यवस्था खड़ी कर देता है जो देश की अर्थ व्यवस्था के लिए अहितकर है। किसी भी देश की अर्थ व्यवस्था के लिए काला धन विनाशकारी होता है।

काले धन से निजात पाना बहुत कठिन है। किसी एक प्रक्रिया से इसे खत्म करना नामुमकिन है। जब किसी देश में कालाधन हद से अधिक जमा हो जाता है तो सरकार अपने चलन में लायी जानी वाली मुद्रा को बंद करके नई मुद्रा परिचालित करती है। इसे विमुद्रीकरण या साधारण भाषा में नोटबंदी कहते हैं। इसप्रकार विमुद्रीकरण से वर्तमान में प्रचलित नोटों को बंद करके नए नोट का चलन शुरु होता है। बंद किए गए नोटों का इस्तेमाल किसी भी कार्य के लिए नहीं किया जा सकता और इसका इस्तेमाल गैर-कानूनी हो जाता है।

हमारे देश में समय-समय पर नोटबंदी किया गया है। परंतु 8 नवंबर, 2016 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने उस समय प्रचलित 500 और 1000 के नोटों को मध्यरात्रि से अमान्य घोषित कर दिया। यह एक महत्वपूर्ण फैसला था जिसने देश को हिला दिया। नोटबंदी करने का मुख्य मकसद काले धन को समाप्त करना था। इस फैसले से काले धन के जमाखोरों में अफरा-तफरी मच गई। लोगों के घरों में से करोड़ों के नोट 500 और 1000 रूपये के थे वे कागज के ढेर में बदल गए। हालांकि सरकार ने रियायत भी दी कि अपनी आय को घोषित करें और टैक्स भरें और गरीब कल्याण गतिविधियों में लगायें। कुछ लोगों ने अपनी अघोषित आय घोषित की और कर भरा। इससे सरकारी खजाने में इजाफा हुआ और काला धन कुबेरों पर कुछ हद तक नकेल कसने में सरकार सफल रही।

काले धन के आलावा देश में जाली नोटों का एक साम्राज्य खड़ा हो गया था। देश में जाली नोट की बडी संख्या 500 व 1000 रूपये के नोटों के रूप में मौजूद थे। नोटबंदी के कारण इन जाली नोटों का भी चलन बंद हो गया। इन नोटों से देश में आपराधिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलता था। आतंकवाद, नक्सलवाद, नशा कारोबार, हवाला कारोबार, काले धन और जाली नोटों के कारण फल-फूल रहे थे। विमुद्रीकरण से इन गतिविधियों पर रोक लगी।

भारतीय रिजर्व बैंक के मुताबिक देश में 86 फीसदी नोट 500 व 1000 रुपये के नोट में थे। इस प्रकार नोटबंदी से काले धन पर गहरी चोट हुई है। कहा जा सकता है कि प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा लिया गया विमुद्रीकरण का फैसला काफी हद तक सफल रहा।

विमुद्रीकरण से भले ही काले धन के कुबेरों पर प्रहार हुआ है पर वे अभी भी ताकतवर हैं। काला धन केवल नोटों की गड्डियों के रूप में नहीं है। यह बेनामी संपत्तियों, हीरे जवाहरातों, विदेशी बैंकों में जमाओं के रूप में भी मौजूद है। सरकार ने बेनामी संपत्ति अधिनियम लाकर इस दिशा में उचित कदम उठाया है।

यद्यपि सरकार के विमुद्रीकरण से काले धन पर लगाम लगा है, परंतु काले धन की ललक अत्यधिक लोभ से ही होती है। यदि हम सब यह समझ लें कि धन केवल हमारी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जरूरी है तो काला धन एकत्र करने की होड़ ही न लगे। इसलिए महत्वपूर्ण है कि हम अपने बच्चों को स्कूली शिक्षा के साथ-साथ नैतिक मूल्यों से संचित कर उन्हें एक नेक और सजग नागरिक बनाएं।

विमुद्रीकरण (नोटबंदी) - कालाधन पर लगाम हेतु कितना कारगर

प्रथम पुरस्कार ('ग' वर्ग)
श्रीमती भारती एस. कुमार,
प्राथमिक अध्यापिका,
प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई

विमुद्रीकरण एक प्रकिया है जिसमें वर्तमान मुद्रा को कानूनी तरीके से बाहर किया जाता है और नए नोट व सिक्कों को प्रचलन में लाया जाता है। इसका मकसद भ्रष्टाचार, काले धन, आतंकवादी संगठनों पर अंकुश लगाना होता है। भारत में पहले भी काला बाजारी, नकली मुद्रा से मुक्ति के लिए विमुद्रीकरण प्रक्रिया अपनाई गयी है। 8 नवंबर, 2016 को भारत के प्रधानमंत्री द्वारा नोटबंदी की घोषणा के पीछे का उद्देश्य काले धन, भ्रष्टाचार, नकली मुद्रा आदि की समस्या को उखाड़ देना है।

विमुद्रीकरण के तहत निर्धारित अवधि के अंदर 1000 व 500 के पुराने नोट बैंकों में जमा करने थे। विमुद्रीकरण की योजना इतने गोपनीय तरीके से तैयार की गई कि प्रधानमंत्री के अलावा बहुत ही कम लोगों को इसकी जानकारी थी। इससे नक्सलवाद और आतंकवाद को गहरा धक्का लगा। इसका असर छोटे व्यापारियों और मजदूरों पर भी पड़ा और उनका जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। काला धन रखने वाले लोग किसी न किसी तरीके से अपने काले धन को ठिकाने लगाने लगे। कोई मंदिर में दान-पेटी में डाल रहा था तो कोई नदियों में बहा रहा या जला रहा था। तमाम परेशानियों के बावजूद देश की जनता ने इसे ऐतिहासिक फैसला माना और अच्छे परिवर्तन के लिए परेशानियों को स्वीकारा। आज इस ऐतिहासिक फैसले का असर नहीं दिखेगा, किंतु आने वाले दिनों में देश की अर्थ व्यवस्था में सुधार आयेगा और भारत विकास की ओर बढ़ेगा। दूसरी बात, विदेशों में अभी भी देश का काफी धन काले धन के रूप में जमा है वह भी वापस आना चाहिए। लेकिन हर अच्छे काम के लिए समय तो लगता ही है यह भी सच है।

नोटबंदी का सबसे बड़ा फायदा कश्मीर में दिखा। कश्मीर में नोटबंदी के दौरान पत्थरबाजी की घटनाएं काफी हद तक रुक गईं और वहां अमन-चैन कायम हुआ। विदेशों में भी नोटबंदी के सरकार के इस फैसले को सराहा गया। डिजीटल लेन-देन भी बढ़ा है।

****

भारतेंदु और द्विवेदी ने हिन्दी की जड़ें पाताल तक पहुँचा दी हैं, उसे उखाड़ने का जो दुस्साहस करेगा वह निश्चय ही भूकंपध्वस्त होगा।

- शिवपूजन सहाय

'निबंध लेखन(लिपिक/अधिकारी) प्रतियोगिता-2017'

स्वच्छ भारत

प्रथम पुरस्कार ('क' वर्ग)
श्रीमती रूपा सावंत
प्रवर श्रेणी लिपिक
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

स्वच्छ भारत को स्वच्छ भारत अभियान या क्लीन इंडिया ड्राइव भी कहा जाता है। स्वच्छ भारत एक राष्ट्रीय अभियान है। इस अभियान को भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर, 2014 को गांधीजी की 145 वीं वर्षगांठ के दिन राजघाट, नई दिल्ली से शुरू किया था जिसमें कम से कम 30 लाख विद्यालय, कालेजों, सरकारी कर्मचारियों ने भाग लिया। स्वयं प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी ने सफाई करके अभियान का शुभारंभ किया। सफाई के प्रति जागरुकता के लिए जगह-जगह पोस्टर्स लगवाए गए। अभियान के तहत सार्वजनिक स्थानों जैसे पार्क, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, बाजार, अस्पताल आदि जगहों पर शौचालयों का निर्माण किया गया। गांवों में जागरुकता फैलाई जाती है कि वे खुले में शौच न करें और इसके लिए शौचालयों का प्रयोग करें और घरों में शौचालयों का निर्माण करें।

विद्यालय और कॉलेज के छात्रों ने स्वच्छ भारत अभियान में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। सड़कों, गलियों को कूड़े-कचरे से मुक्त करने के लिए लोग जी-जान से सम्मिलित हुए हैं। स्लोगन दिए गए हैं, पोस्टर्स लगवाए गए हैं और आम जनता को स्वच्छता की महत्ता बताई गई है। अधिकांश बीमारियाँ गंदगी के कारण होती हैं। यदि ये गंदगी न होगी तो ये बीमारियाँ अपने आप भाग जायेंगी। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने अपनी-अपनी टोली बनाकर और झाड़ू लेकर सड़कें, पार्क, बस स्टैंड, अस्पताल आदि साफ किए हैं।

सरकारी कर्मचारियों ने भी स्वच्छ भारत अभियान में अपना योगदान दिया है। अपने काम करने की जगह, अपने निवास के आस-पास सफाई कर अभियान में योगदान किया है।

महात्मा गांधी का यह सपना था कि भारत स्वच्छ हो। इस सपने को पूरा करने के क्रम में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने 2 अक्टूबर, 2014 को शुरूआत की। अभियान को पूरा करने का लक्ष्य 5 वर्ष है अर्थात वर्ष 2019 में महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में स्वच्छ भारत की छवि प्रस्तुत करनी है।

भारत सरकार की कचड़ा प्रबंधन नीति भी कारगर रही है। नई प्रौद्योगिकी की मदद से स्वच्छता अभियान को रफ्तार मिली है।

भारत को स्वच्छ और स्वस्थ राष्ट्र बनाने के लिए भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के स्वच्छ-भारत के सपने को साकार करने में प्रत्येक भारतीय का योगदान अपेक्षित है।

हर इंसान में कोई न कोई प्रतिभा है लेकिन वो अक्सर इसे दूसरों के जैसा बनने में नष्ट कर देतें हैं

- अज्ञात

'निबंध लेखन(लिपिक/अधिकारी) प्रतियोगिता-2017'

स्वच्छ भारत

प्रथम पुरस्कार ('ख' वर्ग)
श्री किरण सुतार
अवर श्रेणी लिपिक
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

'स्वच्छ' यह शब्द सुनकर ही मन प्रसन्न हो जाता है। स्वच्छता का अपने आप में एक अहम स्थान है। जहां पर स्वच्छता होती है वहां रहने वाले लोगों को अनेक प्रकार के फायदे होते हैं, जैसे कम बाल मृत्यु दर, अच्छी सेहत, अधिक आय के साधन आदि। स्वच्छता को अपनाने से स्वास्थ्य तो अच्छा रहता ही है डॉक्टर के चक्कर भी नहीं काटने पड़ते। इससे पैसे और समय की भी बचत होती है। स्वास्थ्य अच्छा रहने से उत्साह बढ़ जाता है और ज्यादा देर तक काम करने को मन करता है जिससे आय भी बढ़ती है। आय बढ़ने से जीवन स्तर में सुधार होता है और खुशियां बढ़ती हैं।

स्वच्छता का महत्व समझते हुए भारत सरकार ने 2 अक्टूबर, 2014 को महात्मा गांधी के 145वें जन्म-दिवस के अवसर पर राजघाट, दिल्ली से स्वच्छ भारत अभियान की औपचारिक रूप से शुरूआत की और 02 अक्टूबर, 2019 यानि महात्मा गांधी के 150वें जन्म-दिवस तक संपूर्ण भारत स्वच्छ करने का लक्ष्य रखा है। इस अभियान के तहत कार्यालयों, सार्वजनिक स्थलों, गलियों-सड़कों की स्वच्छता तथा हर घर में शौचालय का निर्माण कार्यक्रम चल रहे हैं।

इस अभियान के उद्घाटन के अवसर पर विद्यालय तथा महाविद्यालयों के 30 लाख से अधिक विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा सरकारी कर्मचारियों ने अपना योगदान किया। इस समय देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्वयं झाड़ू उठा सड़क साफ करके और बड़ी हस्तियों को ब्रांड एम्बेसडर बनाकर अधिक से अधिक नागरिकों को सहभागी होने के लिए प्रेरित किया।

स्वच्छता का यह अभियान राजनीति से मुक्त अभियान है। इसमें हर कोई सहभागी हो सकता है। बल्कि यह प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी होनी चाहिए। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी पूरी करे तो भारत का स्वच्छ राष्ट्र बनना तय है।

केवल स्वच्छता चिल्लाने से देश का विकास नहीं होगा। हमारा देश भाषा-वाद, प्रांत-वाद, जाति-वाद में बंटा हुआ है। इसी बंटे आधार पर स्वच्छता को देखेंगे तो इस अभियान का कोई अर्थ ही नहीं रहेगा। बाहरी स्वच्छता के साथ-साथ मानसिक स्वच्छता अति आवश्यक है। लोगों को आपस में प्रेम, सद्भावना रखनी चाहिए। सभी मत-भेदों को भूलकर मानवता की भलाई के लिए स्वच्छ भारत अभियान जैसे अभियानों से जुड़ना चाहिए।

विकसित राष्ट्र बनने के लिए स्वच्छता अहम घटक है। इसे ध्यान में रखते हुए कड़े कदम उठाने होंगे। साथ ही यह संदेश भी देना होगा कि स्वच्छता किसी धर्म, जाति, भाषा या प्रांत से संबंधित नहीं है। इसलिए प्रत्येक नागरिक खुले दिल से स्वच्छ भारत अभियान से जुड़ें और राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दें। इस भावना से यदि हम सब काम करेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा भारत विश्व पटल पर छा जायेगा।

****

अगर आप समय पर अपनी गलतियों को स्वीकार नहीं करते हैं तो आप एक और गलती कर बैठते हैं। आप अपनी गलतियों से तभी सीख सकते हैं जब आप अपनी गलतियों को स्वीकार करते हैं।

- अज्ञात

'निबंध लेखन(लिपिक/अधिकारी) प्रतियोगिता-2017'

स्वच्छ भारत

प्रथम पुरस्कार ('ग' वर्ग)
श्रीमती शोभना डी. पनीकर
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

स्वच्छता मानव जीवन की आधारशिला है जिस पर मनुष्य की प्रगति निर्भर करती है। शारीरिक, मानसिक व सामाजिक स्वच्छता बहुत जरूरी है। स्वच्छता में देवत्व है। स्वच्छ मन ईश्वर के समान है। जैसे घर की साफ-सफाई की जिम्मेदारी घर के प्रत्येक सदस्य की होती है उसी प्रकार से सार्वजनिक स्थलों की साफ-सफाई की जिम्मेदारी प्रत्येक नागरिक की है।

स्वच्छता खान-पान से लेकर वेश-भूषा में भी होनी चाहिए। अपना घर और परिसर साफ रखने से न सिर्फ वातावरण खुशगवार बनता है बल्कि मन भी प्रसन्न रहता है। स्वच्छ वातावरण से हमारा जीवन स्वस्थ बनता है। 'गीता' में बताया गया है कि जैसे शरीर की स्वच्छता के लिए प्रतिदिन पानी से स्नान करते हैं उसी प्रकार से 'गीता' का पाठ करने से मन का मैल साफ होता है और मानव को मुक्ति की प्राप्ति होती है। किसी देश के नागरिकों का स्वास्थ्य उस देश की प्रगति को दर्शाता है।

देखा गया है कि कुछ लोग अपने घर तो साफ करते हैं लेकिन एकत्र कचड़े को सड़क पर फैंक देते हैं जो कि सही नहीं है। इससे सड़क तो गंदी होती ही है बल्कि उस पर चलने वाले राहगीरों को भी असुविधा होती है।

भारत को महान देश कहा जाता है। इसे महान बनाए रखना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। इसी जिम्मेदारी को याद दिलाने के लिए भारत सरकार ने 2 अक्टूबर, 2014 को 'स्वच्छ भारत' अभियान की शुरुआत की है। इसके अंतर्गत 2 अक्टूबर, 2019 जब महात्मा गांधी की 150वीं जयंती होगी, तक संपूर्ण भारत को स्वच्छ करने का लक्ष्य रखा गया है।

अभियान के तहत खुले में शौच से मुक्ति, हाथों से मैला उठाने से मुक्ति, सिर पर मैला ढोने से मुक्ति, कचड़े का उचित निपटारा आदि को ध्यान में रखते हुए अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इन सब कार्यक्रमों से भारत की एक स्वच्छ छवि विकसित होगी जो देश के विकास में महत्वपूर्ण होगी। इस मुहिम में जन भागीदारी शामिल करने के लिए स्लोगन, पोस्टर, कविताओं, विज्ञापनों, लघु नाटकों आदि का सहारा लिया जा रहा है। भारत के विकास के साथ-साथ भारतीय पर्यटन उद्योग के लिए यह अभियान वरदान साबित हो रहा है। स्वच्छ भारत अभियान की देखरेख स्वयं भारत गणराज्य के प्रधानमंत्री करते हैं जो भारत को गांधी जी के सपनों का स्वच्छ भारत बनाने के लिए सजग हैं।

भारत के एक नागरिक होने के नाते हमारी भी जिम्मेदारी बनती है कि हम इस अभियान का हिस्सा बनकर इसे सफल बनाए और आने वाली पीढ़ी को एक स्वच्छ भारत दें।

आओं, चलें हम सब मिलकर,
बनाए स्वच्छ भारत, श्रेष्ठ भारत।

विज्ञान के बहुत से अंगों का मूल हमारे पुरातन साहित्य में निहित है और हमारा श्रेष्ठतम साहित्य हिन्दी में सुरक्षित है।

- पं. सूर्यनारायण व्यास

हिंदी पखवाड़ा -2016

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित किए गए प्रमुख कार्यक्रमों की एक झलक

हिंदी दिवस के अवसर पर परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में 22-08-2016 से 16-09-2016 के बीच "हिंदी पखवाड़ा" का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत निबंध प्रतियोगिता, हिंदी भाषण प्रतियोगिता, हिंदी व्याकरण,वर्तनी एवं अनुवाद प्रतियोगिता, काव्य पाठ प्रतियोगिता, मौलिक कविता लेखन प्रतियोगिता, पोस्टर एवं स्लोगन प्रतियोगिता, टंकण प्रतियोगिता तथा राजभाषा रोलिंग शील्ड का आयोजन किया गया। 22.08.2016 को अध्यापक/ अध्यापिका एवं सभी अधिकारी एवं लिपिकों के लिए पोस्टर एवं स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 29.08.2016 को तीनों क्षेत्र के भाषा-भाषियों के लिए कविता पाठ का आयोजन किया गया। 01.09.2016 को तीनों वर्ग के भाषियों के लिए मौलिक कविता लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 26.08.2016 को तीनों वर्ग के भाषा-भाषियों (अधिकारियों/ कर्मचारियों एवं शिक्षकों) के लिए हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 14.09.2016 को तीनों क्षेत्र के भाषा-भाषियों के लिए हिंदी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 24.08.2016 को तीनों भाषा-भाषियों (शिक्षक व लिपिक / अधिकारी) के लिए हिंदी व्याकरण, वर्तनी एवं अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 16.09.2016 को सभी लिपिक / अधिकारी / शिक्षकों के लिए हिंदी टंकण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

राजभाषा रोलिंग शील्ड प्रदान करने के उद्देश्य हेतु अनुभागों में राजभाषा हिन्दी के आदेशों के कार्यान्वयन की स्थिति का निरीक्षण किया गया। इस वर्ष **हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु लेखा अनुभाग को राजभाषा रोलिंग शील्ड (विजेता) और स्थापना अनुभाग को राजभाषा रोलिंग शील्ड (उप विजेता) प्रदान की गई।**

प्रतियोगिताओं के शीर्षक

हिंदी भाषण	
वर्ग	**शीर्षक**
'क'	ओलंपिक खेलों में भारत का प्रदर्शन
'ख'	योग और स्वस्थ जीवन
'ग'	इंटरनेट का महत्त्व

हिंदी मौलिक कविता लेखन	
वर्ग	**शीर्षक**
'क'	कल, आज और कल
'ख'	सामाजिक भारत - सांस्कृतिक भारत
'ग'	सबसे बड़ा रुपैया

हिंदी निबंध लेखन	
वर्ग	**शीर्षक**
शिक्षक वर्ग	प्रदूषण समस्याएँ एवं समाधान
कार्यालयी अधिकारी/कर्मचारी/ लिपिक वर्ग	आधुनिक भारत की नारी

पोस्टर एवं स्लोगन	
वर्ग	**शीर्षक**
कला शिक्षक वर्ग 'क' हेतु	बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
अन्य सभी प्रतिभागियों वर्ग 'ख' हेतु	स्वच्छ भारत

हिंदी पखवाड़ा-2016 के अंतर्गत आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों की सूची

प्रतियोगिता	आयोजन दिनांक एवं स्थल	वर्ग	क्र. सं.	विजेता प्रतिभागी	विद्यालय	स्थान
पोस्टर एवं स्लोगन	22-08-16 प.ऊ.कें.वि.-2	कला शिक्षक	1	श्री महेंद्र दामोदर बोरकर	प.ऊ.कें.वि. -06	प्रथम
			2	श्री रघुनाथ बरुआ	प.ऊ.कें.वि. -05	द्वितीय
			3	श्री भानुदास रंधवा	प.ऊ.कें.वि. -03	तृतीय
		अन्य शिक्षक	4	श्री विश्वास माने	प.ऊ.कें.वि. -04	प्रथम
			5	सुश्री बबीता उंदीरवाडे	प.ऊ.कें.वि. -02	द्वितीय
			6	सुश्री सरीफा पिनेरो	प.ऊ.कें.वि. -02	तृतीय
काव्य-पाठ	29-08-16 प.ऊ.कें.वि.-1	क	7	श्रीमती सीमा अग्रवाल	प.ऊ.कें.वि. -04	प्रथम
			8	श्रीमती अमृत मल्होत्रा	प.ऊ.कें.वि. -02	द्वितीय
			9	श्री राहुल सोनी	प.ऊ.कें.वि. -01	द्वितीय
			10	श्री सी.एल.शर्मा	प.ऊ.कें.वि. -03	तृतीय
		ख	11	श्री विश्वास माने	प.ऊ.कें.वि. -04	प्रथम
			12	श्रीमती रजनी अग्निहोत्री	प.ऊ.कें.वि. -01	द्वितीय
			13	श्रीमती ममता मिश्रा	प.ऊ.कें.वि. -05	तृतीय
		ग	14	श्रीमती भारती एस.	प.ऊ.कें.वि. -04	प्रथम
			15	श्रीमती मालती मुरुगन	प.ऊ.कें.वि. -04	द्वितीय
			16	श्रीमती आशा नायर	प.ऊ.कें.वि. -06	तृतीय
कविता लेखन	01-09-16 प.ऊ.कें.वि.-4	क	17	श्री राहुल सोनी	प.ऊ.कें.वि. -01	प्रथम
			18	श्रीमती मुदिता वाजपेयी	केंद्रीय कार्यालय	द्वितीय
			19	श्रीमती अमृत मल्होत्रा	प.ऊ.कें.वि. -02	तृतीय
		ख	20	श्रीमती चैताली लोहार	प.ऊ.कें.वि. -04	प्रथम
			21	श्रीमती आमला पंडित	प.ऊ.कें.वि. -06	द्वितीय
			22	श्री विश्वास माने	प.ऊ.कें.वि. -04	तृतीय
		ग	23	श्रीमती भारती एस.	प.ऊ.कें.वि. -04	प्रथम
			24	श्रीमती मालती मुरुगन	प.ऊ.कें.वि. -04	द्वितीय
			25	सुश्री सरीफा पिनेरो	प.ऊ.कें.वि. -02	तृतीय

प्रतियोगिता	आयोजन दिनांक एवं स्थल	वर्ग	क्र. सं.	विजेता प्रतिभागी	विद्यालय	स्थान
निबंध लेखन (शिक्षक वर्ग)	26-08-16 प.ऊ.कें.वि.-5	क	26	श्रीमती अमृत मल्होत्रा	प.ऊ.कें.वि. -02	प्रथम
			27	श्री राहुल सोनी	प.ऊ.कें.वि. -01	द्वितीय
			28	श्रीमती सुनीता रानी कुलपति	प.ऊ.कें.वि. -04	तृतीय
		ख	29	श्रीमती सिसेलिया नेरुलकर	प.ऊ.कें.वि. -02	प्रथम
			30	श्रीमती रजनी अग्निहोत्री	प.ऊ.कें.वि. -01	द्वितीय
			31	श्रीमती मंजरी पालकर	प.ऊ.क.म.वि.	तृतीय
		ग	32	श्रीमती अपर्णा बालाजी	प.ऊ.कें.वि. -04	प्रथम
			33	श्रीमती साईश्री मेनन	प.ऊ.कें.वि. -06	द्वितीय
			34	सुश्री सरीफा पिनेरो	प.ऊ.कें.वि. -02	तृतीय
निबंध लेखन (लिपिक वर्ग)	26-08-16 केंद्रीय कार्यालय	क	35	श्रीमती रूपा मंगेश सावंत	कार्मिक एवं गोपनीय	प्रथम
		ख	36	श्रीमती संध्या आंब्रे	क्रय एवं सा. प्रशासन	प्रथम
			37	श्री राजन गायकवाड	क्रय एवं सा. प्रशासन	द्वितीय
			38	सुश्री छाया माधव दिघे	स्थापना अनुभाग	तृतीय
		ग	39	श्रीमती पुष्पा भास्कर चन्दन	केंद्रीय कार्यालय	प्रथम
			40	श्रीमती प्रीती कुमार	केंद्रीय कार्यालय	द्वितीय
हिंदी भाषण	14-09-16 प.ऊ.कें.वि.-6	क	41	श्रीमती अमृत मल्होत्रा	प.ऊ.कें.वि. -02	प्रथम
			42	श्रीमती सोनिया कपूर	प.ऊ.कें.वि. -02	द्वितीय
			43	श्री नीरज कुमार बलाहटिया	प.ऊ.कें.वि. -01	तृतीय
		ख	44	श्रीमती आमला पंडित	प.ऊ.कें.वि. -06	प्रथम
			45	श्री सुधीर खुल्लर	प.ऊ.क.म.वि.	द्वितीय
			46	श्री विश्वास माने	प.ऊ.कें.वि. -04	तृतीय
		ग	47	श्रीमती वासंती पुरुषोत्तम	प.ऊ.कें.वि. -06	प्रथम
			48	श्री के. जे. जॉय	प.ऊ.क.म.वि.	द्वितीय
			49	श्रीमती भारती एस.	प.ऊ.कें.वि. -04	तृतीय
व्याकरण, वर्तनी एवं अनुवाद (शिक्षक वर्ग)	24-08-16 प.ऊ.कें.वि.-3	क	50	श्रीमती कामाक्षी चौबे	प.ऊ.कें.वि. -03	प्रथम
			51	श्रीमती अमृत मल्होत्रा	प.ऊ.कें.वि. -02	द्वितीय
			52	श्री गिरेन्द्र पाल शर्मा	प.ऊ.क.म.वि.	तृतीय

प्रतियोगिता	आयोजन दिनांक एवं स्थल	वर्ग	क्र. सं.	विजेता प्रतिभागी	विद्यालय	स्थान
व्याकरण, वर्तनी एवं अनुवाद (शिक्षक वर्ग)	24-08-16 प.ऊ.कें.वि.-3	ख	53	श्रीमती आमला पंडित	प.ऊ.कें.वि. -06	प्रथम
			54	श्रीमती ममता मिश्रा	प.ऊ.कें.वि. -05	द्वितीय
			55	श्रीमती मंजीत कौर	प.ऊ.कें.वि. -02	तृतीय
		ग	56	श्रीमती अपर्णा बालाजी	प.ऊ.कें.वि. -04	प्रथम
			57	श्रीमती विमला मेनन	प.ऊ.कें.वि. -03	द्वितीय
			58	श्रीमती भारती एस.	प.ऊ.कें.वि. -04	तृतीय
व्याकरण, वर्तनी एवं अनुवाद (लिपिक वर्ग)	24-08-16 केंद्रीय कार्यालय	क	59	श्रीमती सुखविंदर कौर सैनी	कार्मिक एवं गोपनीय	प्रथम
			60	श्रीमती रूपा मंगेश सावंत	कार्मिक एवं गोपनीय	द्वितीय
		ख	61	श्रीमती संध्या आंब्रे	क्रय अनुभाग	प्रथम
			62	श्रीमती श्वेता कांबले	सचिव का कार्यालय	द्वितीय
			63	गोपीनाथ जयवंत कोलते	लेखा अनुभाग	द्वितीय
			64	श्रीमती शकुंतला प्रकाश जलगांवकर	लेखा अनुभाग	तृतीय
			65	श्री जयप्रकाश गणेश तुर्भेकर	केंद्रीय कार्यालय	तृतीय
		ग	66	श्रीमती नर्मदा सु.बैरालू	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई	प्रथम
			67	श्रीमती प्रीती कुमार	मु.प्र.अधि. का कार्यालय	द्वितीय
			68	श्रीमती अंबिका एस नायर	स्थापना अनुभाग	तृतीय
			69	श्रीमती पुष्पा भास्कर चन्दन	अध्यक्ष का कार्यालय	तृतीय
हिंदी टंकण	16-09-16 केंद्रीय कार्यालय	शिक्षक	70	श्रीमती साक्षी शिंगटे	प.ऊ.कें.वि.-1	प्रथम
			71	श्री कृष्ण कुमार पी.के.	केंद्रीय कार्यालय	द्वितीय
			72	श्री सी.एल.शर्मा	प.ऊ.कें.वि. -03	तृतीय
		लिपिक	73	सुश्री छाया माधव दिघे	स्थापना अनुभाग	प्रथम
			74	श्रीमती अनुजा दीपेश आंबेतकर	कार्मिक एवं गोपनीय	द्वितीय
			75	श्रीमती श्वेता कांबले	सचिव का कार्यालय	तृतीय
राजभाषा रोलिंग ट्रॉफी	केंद्रीय कायार्लय, प.ऊ.श.सं. के अनुभाग	लागू नहीं	76	लेखा अनुभाग		विजेता
			77	स्थापना अनुभाग		उपविजेता

हिंदी पखवाड़ा- 2016 समापन व पुरस्कार वितरण

28 सितंबर, 2016 को बैडमिंटन हॉल, न्यू कम्यूनिटी सेन्टर, अणुशक्तिनगर, मुंबई में पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की शुरुआत माननीय अतिथि गणों के करकमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुई। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री रजनीश प्रकाश, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था रहे और कार्यक्रम की अध्यक्षता सचिव, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था ने की। श्री रजनीश प्रकाश, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था और सचिव, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था ने कार्यक्रम में उपस्थित हिंदी प्रेमियों को संबोधित किया और प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार धनराशि और प्रमाणपत्र प्रदान किये। अध्यक्ष और सचिव महोदय ने हिंदी के प्रचार एवं प्रसार हेतु कार्यालयीन कार्य में हिन्दी को बढ़ावा देने पर जोर दिया।लेखा अनुभाग को राजभाषा रोलिंग शील्ड (विजेता) तथा स्थापना अनुभाग को राजभाषा रोलिंग शील्ड (उप विजेता) प्रदान की गई।

अध्यक्ष, प.ऊ.शि.सं. लेखा अनुभाग, प.ऊ.शि.सं. को राजभाषा रोलिंग शील्ड (विजेता) प्रदान करते हुए

सचिव, प.ऊ.शि.सं. स्थापना अनुभाग, प.ऊ.शि.सं. को राजभाषा रोलिंग शील्ड (उपविजेता) प्रदान करते हुए

मंचासीन गणमान्य

कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारी, शिक्षक व कर्मचारी

हिंदी पखवाड़ा -2017

हिंदी दिवस के अवसर पर परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में 23-08-2017 से 08-09-2017 के बीच "हिंदी पखवाड़ा" का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत निबंध प्रतियोगिता, हिंदी व्याकरण, वर्तनी एवं अनुवाद प्रतियोगिता, काव्य पाठ प्रतियोगिता, मौलिक कविता लेखन प्रतियोगिता, पोस्टर एवं स्लोगन प्रतियोगिता, टंकण प्रतियोगिता तथा राजभाषा रोलिंग शील्ड का आयोजन किया गया।

अध्यापक/अध्यापिका एवं सभी अधिकारी एवं लिपिकों के लिए 23.08.2017 को हिंदी निबंध प्रतियोगिता, 24.08.2017 को पोस्टर एवं स्लोगन प्रतियोगिता, 31.08.2017 को हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता, 07.09.2017 को हिंदी टंकण प्रतियोगिता, 08.09.2017 को हिंदी कविता लेखन प्रतियोगिता आयोजन किया गया।

राजभाषा रोलिंग शील्ड प्रदान करने के उद्देश्य हेतु अनुभागों में राजभाषा हिन्दी के आदेशों के कार्यान्वयन की स्थिति का निरीक्षण किया गया। इस वर्ष **हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु पेंशन एवं वेतन अनुभाग को राजभाषा रोलिंग शील्ड (विजेता) और स्थापना अनुभाग को राजभाषा रोलिंग शील्ड (उप विजेता) प्रदान की गई।**

हिंदी स्लोगन और पोस्टर प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करते कार्मिक

हिंदी स्लोगन और पोस्टर प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करते कार्मिक

हिंदी निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करते कार्मिक

हिंदी पखवाड़ा-2017 के अंतर्गत आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों की सूची

प्रतियोगिता	आयोजन दिनांक एवं स्थल	वर्ग	क्र. सं.	विजेता प्रतिभागी	विद्यालय	स्थान
निबंध लेखन (शिक्षक वर्ग)	23-08-17 प.ऊ.कें.वि.-5	क	1	श्री योगेन्द्र कुमार शास्त्री	प.ऊ.कें.वि.-04	प्रथम
			2	श्री राहुल सोनी	प.ऊ.कें.वि.-01	द्वितीय
			3	श्रीमती सुनीता रानी कुलपति	प.ऊ.कें.वि. -04	तृतीय
		ख	4	श्रीमती ममता मिश्र	प.ऊ.कें.वि.-05	प्रथम
			5	श्री विनोद सोनावने	प.ऊ.कें.वि.-05	द्वितीय
			6	श्री विश्वास माने	प.ऊ.कें.वि.-02	तृतीय
		ग	7	श्रीमती भारती एस.	प.ऊ.कें.वि. -04	प्रथम
			8	श्रीमती वासंती पुरुषोत्तम	प.ऊ.कें.वि. -06	द्वितीय
			9	सुश्री सरीफा पिनेरो	प.ऊ.कें.वि. -02	तृतीय
निबंध लेखन (अधिकारी/ लिपिक वर्ग)	23-08-17 केंद्रीय कार्यालय	क	10	श्रीमती रूपा मंगेश सावंत	कार्मिक एवं गोपनीय	प्रथम
		ख	11	श्री किरण सुतार	स्थापना अनुभाग	प्रथम
			12	सुश्री छाया माधव दिघे	स्थापना अनुभाग	द्वितीय
			13	श्रीमती रेशमा वेंगुर्लेकर	कार्मिक एवं गोपनीय	द्वितीय
			14	श्रीमती अनुजा दीपेश आंबेतकर	कार्मिक एवं गोपनीय	तृतीय
		ग	15	श्रीमती शोभना डी. पनीकर	स्थापना अनुभाग	प्रथम
			16	श्रीमती प्रीती कुमार	केंद्रीय कार्यालय	द्वितीय
पोस्टर एवं स्लोगन	24-08-17 प.ऊ.कें.वि.-4	कला शिक्षक	17	श्री महेंद्र दामोदर बोरकर	प.ऊ.कें.वि. -06	प्रथम
			18	श्रीमती विद्या बांकर	प.ऊ.कें.वि. -05	द्वितीय
			19	श्रीमती दोला बिरुवा	प.ऊ.कें.वि. -04	तृतीय
		अन्य शिक्षक	20	सुश्री सरीफा पिनेरो	प.ऊ.कें.वि. -02	प्रथम
			21	सुश्री बबीता उंदीरवाडे	प.ऊ.कें.वि. -02	द्वितीय
			22	श्रीमती रेनू रावत	प.ऊ.कें.वि. -05	तृतीय
काव्य-पाठ	31-08-17 प.ऊ.कें.वि.-2	क	23	श्रीमती नीरजा त्रिपाठी	प.ऊ.कें.वि. -01	प्रथम
			24	श्रीमती सुनीता रानी कुलपति	प.ऊ.कें.वि. -04	द्वितीय
			25	श्री राहुल सोनी	प.ऊ.कें.वि. -01	तृतीय

प्रतियोगिता	आयोजन दिनांक एवं स्थल	वर्ग	क्र. सं.	विजेता प्रतिभागी	विद्यालय	स्थान
काव्य-पाठ	31-08-17 प.ऊ.कें.वि.-2	ख	26	श्रीमती आमला पंडित	प.ऊ.कें.वि. -06	प्रथम
			27	श्री विश्वास माने	प.ऊ.कें.वि.-02	द्वितीय
			28	सुश्री श्रुती सिध्दोधन फुलपगार	प.ऊ.कें.वि.-1	तृतीय
		ग	29	श्रीमती मालती मुरुगन	प.ऊ.कें.वि. -02	प्रथम
			30	श्रीमती भारती एस.	प.ऊ.कें.वि. -04	द्वितीय
			31	श्रीमती शोभना डी. पनीकर	स्थापना अनुभाग	तृतीय
हिंदी टंकण	07-09-17 प.ऊ.क.म.वि.	शिक्षक	32	श्रीमती साक्षी शिंगटे	प.ऊ.कें.वि.-1	प्रथम
			33	सुश्री श्रुती सिध्दोधन फुलपगार	प.ऊ.कें.वि.-1	द्वितीय
			34	श्री सी.एल.शर्मा	प.ऊ.कें.वि.-3	तृतीय
		लिपिक	35	सुश्री छाया माधव दिघे	स्थापना अनुभाग	प्रथम
			36	श्रीमती रूपा मंगेश सावंत	कार्मिक एवं गोपनीय	द्वितीय
			37	श्री आदित्य कालेकर	पेंशन एवं वेतन	तृतीय
कविता लेखन	08-09-17 प.ऊ.कें.वि.-1	क	38	श्री राहुल सोनी	प.ऊ.कें.वि. -01	प्रथम
			39	श्रीमती सुनीता रानी कुलपति	प.ऊ.कें.वि. -04	द्वितीय
			40	श्रीमती अंजना मांझी	प.ऊ.कें.वि. -06	तृतीय
		ख	41	श्रीमती चैताली लोहार	प.ऊ.कें.वि. -04	प्रथम
			42	श्री विश्वास माने	प.ऊ.कें.वि. -02	द्वितीय
			43	श्रीमती आमला पंडित	प.ऊ.कें.वि. -06	तृतीय
		ग	44	श्रीमती भारती एस.	प.ऊ.कें.वि. -04	प्रथम
			45	श्रीमती शोभना डी. पनीकर	स्थापना अनुभाग	द्वितीय
			46	सुश्री सरीफा पिनेरो	प.ऊ.कें.वि. -02	तृतीय
राजभाषा रोलिंग ट्रॉफी	केंद्रीय कार्यालय, प.ऊ.श.सं. के अनुभाग	लागू नहीं	47	पेंशन एवं वेतन अनुभाग		विजेता
			48	स्थापना अनुभाग		उपविजेता

हिंदी पखवाड़ा-2017 समापन व पुरस्कार वितरण

12 अक्टूबर, 2017 को बैडमिंटन हॉल, न्यू कम्यूनिटी सेन्टर, अणुशक्तिनगर, मुंबई में पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की शुरुआत माननीय अतिथि गणों के करकमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुई। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री रजनीश प्रकाश, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था रहे और कार्यक्रम की अध्यक्षता सचिव, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था ने की। श्री रजनीश प्रकाश, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था और सचिव, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था ने कार्यक्रम में उपस्थित हिंदी प्रेमियों को संबोधित किया और प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार धनराशि और प्रमाणपत्र प्रदान किये। अध्यक्ष और सचिव महोदय ने हिंदी के प्रचार एवं प्रसार हेतु कार्यालयीन कार्य में हिन्दी को बढ़ावा देने पर जोर दिया। पेंशन एवं वेतन अनुभाग को राजभाषा रोलिंग शील्ड (विजेता) तथा स्थापना अनुभाग को राजभाषा रोलिंग शील्ड (उप विजेता) प्रदान की गई।

अध्यक्ष, प.ऊ.शि.सं. पेंशन एवं वेतन अनुभाग, प.ऊ.शि.सं. को राजभाषा रोलिंग शील्ड (विजेता) प्रदान करते हुए

अध्यक्ष, प.ऊ.शि.सं. स्थापना अनुभाग, प.ऊ.शि.सं. को राजभाषा रोलिंग शील्ड (उपविजेता) प्रदान करते हुए

मंचासीन गणमान्य

मई, 2016 में आयोजित हिंदी पारंगत पाठ्यक्रम परीक्षा में सम्मिलित कर्मचारी/अधिकारी

2016 के अंतर्गत हिंदी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे 15 प्रशिक्षार्थी मई, 2016 में आयोजित हिंदी पारंगत पाठ्यक्रम परीक्षा में सम्मिलित हुए जिनके परिणाम निम्नवत् हैं-

क्र.सं.	कर्मचारियों के नाम	पदनाम	विद्यालय/ कें. कार्यालय	परिणाम
1.	श्रीमती अक्षदा तोडणकर	अवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई	उत्तीर्ण
2.	श्री बालकृष्ण सावंत	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई	उत्तीर्ण
3.	श्रीमती माधवी तलाशिलकर	अवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई	उत्तीर्ण
4.	श्रीमती सुजाता प्रशांत तावडे	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई	उत्तीर्ण
5.	श्रीमती वीणा राउल	अवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई	उत्तीर्ण
6.	श्रीमती सायली उतेकर	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई	उत्तीर्ण
7.	श्री किरण सुतार	अवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.क.म.वि., मुंबई	उत्तीर्ण
8.	श्री प्रदीप खंडागले	वरिष्ठ लिपिक	प.ऊ.शि.सं., मुंबई	उत्तीर्ण
9.	श्रीमती सुनीता कोर	लेखाकार	प.ऊ.शि.सं., मुंबई	उत्तीर्ण
10.	श्रीमती अश्विनी सावंत	अवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.शि.सं., मुंबई	उत्तीर्ण
11.	श्री देवेंद्र कदम	अवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.शि.सं., मुंबई	उत्तीर्ण
12.	श्रीमती विद्या बोबले	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.शि.सं., मुंबई	उत्तीर्ण
13.	श्रीमती कोमल जयप्रकाशन	अवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.शि.सं., मुंबई	उत्तीर्ण
14.	श्रीमती मीनाक्षी होटकर	अवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.शि.सं., मुंबई	उत्तीर्ण
15.	श्रीमती स्मिता शिर्के	अवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.शि.सं., मुंबई	उत्तीर्ण

जुलाई, 2017 में आयोजित हिंदी पारंगत पाठ्यक्रम परीक्षा में सम्मिलित कर्मचारी/अधिकारी

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था से **हिंदी पारंगत पाठ्यक्रम जुलाई-2017** के अंतर्गत हिंदी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे 17 प्रशिक्षार्थियों में से 15 प्रशिक्षार्थी (2 प्रशिक्षार्थी चिकित्सा/निजी कारणों से अनुपस्थित) नवंबर, 2017 में आयोजित हिंदी पारंगत पाठ्यक्रम परीक्षा में सम्मिलित हुए जिनके परिणाम निम्नवत् हैं-

क्र.सं.	कर्मचारियों के नाम	पदनाम	विद्यालय/ कें. कार्यालय	परिणाम
1.	श्रीमती वाई. वासंती पुरुषोत्तम	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई	उत्तीर्ण
2.	श्री कृष्णकुमार पी.के.	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक	शै.इ., केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	अनुपस्थित
3.	श्री भानुदास झुंबर रंधवान	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई	उत्तीर्ण
4.	सुश्री प्रिया प्रमोद पिंपलकर	प्राथमिक अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-3, तारापुर	उत्तीर्ण
5.	कु. प्रिती वी. रोहरा	प्रेप. अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई	अनुपस्थित
6.	श्रीमती पुष्पा भास्कर चंदन	स्टेनो	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	उत्तीर्ण
7.	श्रीमती अंबिका सुंदरेशन नायर	सहायक	स्थापना अनुभाग, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	उत्तीर्ण
8.	श्रीमती विशाखा विलास पवार	प्रवर श्रेणी लिपिक	लेखा अनुभाग, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	उत्तीर्ण
9.	श्रीमती नीता सुधीर रावराणे	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई	उत्तीर्ण
10.	श्री महेश एम. वालेन्द्र	प्रयोगशाला सहायक	प.ऊ.कें.वि.-1, तारापुर	उत्तीर्ण
11.	श्री राजन भानुदास गायकवाड	भंडार सहायक	क्रय अनुभाग, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	उत्तीर्ण
12.	श्रीमती सुजाता बी. सावंत	अवर श्रेणी लिपिक (ग्रेड-।।)	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई	उत्तीर्ण
13.	श्री सुरेन्द्र वि. सोनवणे	अवर श्रेणी लिपिक (ग्रेड-।।)	प.ऊ.क.म.वि., मुंबई	उत्तीर्ण
14.	श्रीमती निर्मला पी. रेड्डी	अवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई	उत्तीर्ण
15.	श्रीमती प्रीति नितिन काजवे	अवर श्रेणी लिपिक	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	उत्तीर्ण
16.	श्री अदित्य कालेकर	अवर श्रेणी लिपिक	लेखा अनुभाग, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	उत्तीर्ण
17.	श्रीमती संध्या आंब्रे	सहायक	का. एवं गो. अनुभाग, मुंबई	उत्तीर्ण

एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला

आयोजन स्थल-परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-5, मुंबई

दिन एवं तारीख - शनिवार, 13 अगस्त, 2016

प्रशिक्षित कर्मचारियों/शिक्षकों/अधिकारियों की संख्या-60

क्र.सं.	सत्र	विषय	संसाधक
1	प्रथम सत्र	राजभाषा नीति एवं पत्राचार	श्री अचलेश्वर सिंह उपनिदेशक (राजभाषा), प.ऊ.वि.
2	दूसरा सत्र	वार्षिक कार्यक्रम, तिमाही रिपोर्ट और प्रोत्साहन योजना	श्री नरसिंह राम उपनिदेशक (राजभाषा), नि.से.सं.प्र.नि.
3	तीसरा सत्र	कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य	श्रीमती रिमझिम गुप्ता वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, क्रय एवं भण्डार निदेशालय, मुंबई
4	चौथा सत्र	परमाणु ऊर्जा और समाज में व्याप्त भ्रांतियाँ	श्री स्वप्नेश कुमार मल्होत्रा सचिव, प.ऊ.शि.सं., मुंबई एवं राजा रमन्ना फैलो, प.ऊ.वि.
5	प्रमाणपत्र वितरण एवं राष्ट्रगान के साथ समापन		

मंचासीन गणमान्य और आमंत्रित ज्ञान स्त्रोत

हिंदी कार्यशाला के सहभागी

एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला

आयोजन स्थल - परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था, केंद्रीय कार्यालय, अणुशक्तिनगर, मुंबई

दिन एवं तारीख - बुधवार, 10 जनवरी, 2018

प्रशिक्षित कर्मचारियों/शिक्षकों/ अधिकारियों की संख्या -50

क्र.सं.	सत्र	विषय	संसाधक
1	प्रथम सत्र	दीप प्रज्जवलन उपस्थित गणमान्यों द्वारा और मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री जी.एस.आर.के.वी. सर्मा द्वारा गणमान्यों का पुष्प गुच्छ से स्वागत	
		स्वागत संबोधन- सचिव, प.ऊ.शि.सं. द्वारा	
		अध्यक्षीय संबोधन, अध्यक्ष, प.ऊ.शि.सं. द्वारा और हिंदी पारंगत के प्रमाणपत्रों का वितरण	
2		विश्व पटल पर हिंदी	प्रो. दामोदर खड़से सदस्य, संयुक्त हिंदी सलाहकार समिति, प.ऊ.वि. एवं अंतरिक्ष विभाग
3	दूसरा सत्र	राजभाषा नीति, नियम एवं पत्राचार	श्री अचलेश्वर सिंह संयुक्त निदेशक (राजभाषा), प.ऊ.वि.
4	प्रमाणपत्र वितरण एवं राष्ट्रगान के साथ समापन		

ऑनलाइन हिंदी प्रश्नोत्तरी (वॉट्सऐप माध्यम से)

विश्व हिंदी दिवस-2018 के उपलक्ष्य में परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था द्वारा अपने प.ऊ.कें.वि./ क.म.विद्यालयों के कार्मिकों के लिए हिंदी भाषा ज्ञान, राजभाषा नियम और प.ऊ.वि. की यूनिटों से संबंधित सामान्य ज्ञान पर आधारित हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता का संचालन मुंबई स्थित केंद्रीय कार्यालय से दिनांक 6 जनवरी, 2018 को किया गया। **वॉट्सऐप** मोबाइल नेटवर्क के माध्यम से आयोजित की गई प्रतियोगिता के लिए प्रतिभागियों की ओर से उनकी बड़ी संख्या के रूप में जोरदार समर्थन व सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-

(1) भाग लेने के लिए कर्मचारी पहचान संख्या, वॉट्सऐप मोबाइल नंबर, विद्यालय का नाम, वर्ग के साथ इच्छुक कर्मचारियों / अधिकारियों का पूर्व पंजीकरण कराया गया।

(2) सभी विद्यालयों/ केंद्रीय कार्यालय में एक साथ वॉट्सऐप नेटवर्क के माध्यम से तय तिथि व समय अर्थात 6 जनवरी, 2018 को अपराह्न 1.00 बजे ऑनलाइन किया गया।

(3) सभी कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए एक खुली प्रतियोगिता के रूप में 'क', 'ख' व 'ग' वर्ग में आयोजित की गई।

(4) प्रश्न बहु-विकल्पीय प्रकार के थे और हिंदी भाषा माध्यम से कुल 20 प्रश्न निश्चित अंतराल पर प्रतिभागियों से पूछे गए।

(5) निर्धारित अवधि के अंदर प्राप्त प्रश्नों के उत्तरों का मूल्यांकन कर परिणाम घोषित किया गया।

(6) कुल 155 ('क'-84, 'ख'-29 व 'ग'-42) कार्मिकों का पंजीकरण हुआ जिनमें से 117 प्रतिभागियों ने निर्धारित तिथि व समय पर सक्रिय रूप से भाग लिया।

ऑनलाइन हिंदी प्रश्नोत्तरी
एक प्रतिभागी के वॉट्सऐप का स्क्रीनशॉट

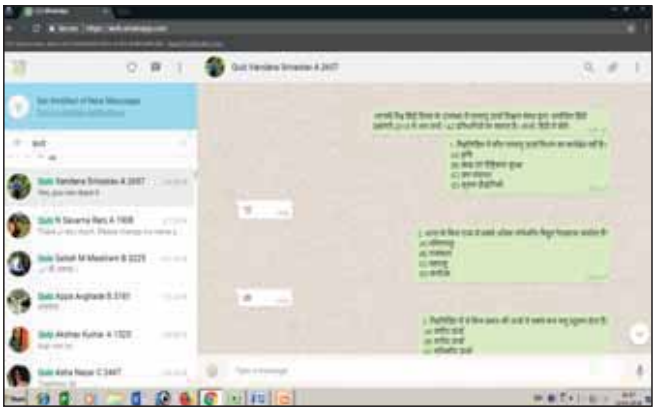

संघ की राजभाषा नीति के सुचारू एवं प्रभावी कार्यान्वयन हेतु निदेश

परमाणु ऊर्जा विभाग और इसकी सभी संघटक यूनिटों में सरकार की राजभाषा नीति के सुचारू एवं प्रभावी कार्यान्वयन के लिए निम्नलिखित निदेश जारी किए जाते हैं-

1. सभी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया जाए और समिति की अध्यक्षता कार्यालय प्रमुख (यूनिट प्रधान) द्वारा की जाए। समिति की बैठकें प्रत्येक तिमाही में नियमित रूप से आयोजित की जाएं।

2. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में कार्यालय प्रमुख (यूनिट प्रधान) अनिवार्य रूप से भाग लें।

3. कार्यालय द्वारा जारी सभी विज्ञापन (निविदा सूचना सहित) द्विभाषी रूप में जारी किए जाएं और विज्ञापनों पर खर्च की गई कुल राशि का 50% केवल हिंदी विज्ञापनों पर और शेष 50% अंग्रेजी एवं क्षेत्रीय भाषाओं पर खर्च किया जाए और इसमें भी क्षेत्रीय भाषाओं को वरीयता दी जाए।

4. मुख्यालय द्वारा अपने अधीनस्थ कार्यालयों के प्रशासनिक, आंतरिक लेखा परीक्षा, तकनीकी या अन्य निरीक्षणों की रिपोर्ट हिंदी में तैयार की जाए और निरीक्षणों की रिपोर्ट हिंदी में तैयार की जाए और निरीक्षण रिपोर्ट में राजभाषा संबंधी अनुदेश दिए जाएं।

5. फाइलों पर अधिकतर टिप्पणियां हिंदी में लिखें और यह सुनिश्चित करें कि यह संख्या वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों से कम न हो। कार्यालय प्रमुख के रूप में अधिकांश टिप्पणियां हिंदी में लिखें और कार्यालय के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करें।

6. कार्यालय द्वारा भेजे जाने वाले अधिक से अधिक पत्र हिंदी में लिखें और यह सुनिश्चित करें कि यह संख्या वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों से कम न हो। कार्यालय प्रमुख के रूप में अधिक से अधिक पत्र हिंदी में लिखें और कार्यालय के लिए उदाहरण प्रस्तुत करें।

7. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) में उल्लिखित दस्तावेजों को अनिवार्यत: द्विभाषी रूप में जारी किया जाए। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 6 के अनुसार ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारियों का यह उत्तरदायित्व है कि वे यह सुनिश्चित करें कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों में तैयार कर जारी किए जाएं।

8. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त सभी पत्रों का उत्तर अनिवार्यत: हिंदी में दिया जाए।

9. जिन कार्यालयों के 80% प्रतिशत कर्मचारियों/अधिकारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएं। 80% कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद भी यदि कोई कार्यालय अधिसूचित नहीं हुआ है तो उस कार्यालय द्वारा तुरंत कार्रवाई की जानी चाहिए।

10. सभी अधिसूचित कार्यालयों के प्रमुखों द्वारा राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के अनुसार अपने अधीन कार्यरत प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों/अधिकारियों को व्यक्तिगत रूप से अपना विनिर्दिष्ट कार्य हिंदी में करने के लिए आदेश दिए लाएं। यह भी सुनिश्चित किया जाए कि इन आदेशों का शत-प्रतिशत अनुपालन हो।

11. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार राजभाषा नीति के सामान्य अनुपालन का उत्तरदायित्व यूनिट प्रधान का है अत: नियमों के अनुपालन हेतु निरीक्षण एवं मानीटरिंग की एक सुदृढ़ व्यवस्था तैयार की जाए।

12. 'क' और 'ख' क्षेत्र स्थित सभी कार्यालयों द्वारा 'क' और 'ख' क्षेत्र स्थित केंद्र और राज्य सरकार के कार्यालयों/संस्थानों से प्राप्त अंग्रेजी के पत्रों का उत्तर भी हिंदी में दिया जाए।

13. सभी कम्प्यूटरों (प्रचालन हेतु उपयोग में आने वाले कम्प्यूटरों को छोड़कर) पर हिंदी में काम करने की सुविधा होनी चाहिए। इन

14. कार्यालय के सभी कर्मचारियों / अधिकारियों को शब्दकोष / शब्दावली तथा सहायक साहित्य उपलब्ध कराया जाए ताकि वे अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में कर सकें।

15. पुस्तकालय के लिए निर्धारित कुल बजट (जर्नल व मानक संदर्भ ग्रंथों को छोड़कर) का 50 प्रतिशत हिंदी पुस्तकों की खरीद पर व्यय किया जाए।

16. कार्यालय में प्रयोग में आने वाले सभी फार्म/मानक मसौदे द्विभाषी हों।

17. सभी भर्ती/पदोन्नति परीक्षाओं में हिंदी माध्यम का विकल्प भी दिया जाए और इसकी सूचना शुरू में ही विज्ञापन अथवा परिपत्र में दी जाए। सभी साक्षात्कारों में भी हिंदी में उत्तर देने की छूट दी जाए और इसकी सूचना अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के लिए भेजे गए पत्रों में दी जाए।

18. सेवा अभिलेखों/सेवा पुस्तिकाओं में हिंदी में प्रविष्टियाँ की जाए।

19. कार्यालय की वेबसाइट द्विभाषी हो और इसे समय-समय पर अद्यतन किया जाए।

20. सभी लिपिक/आशुलिपिक हिंदी टंकण/हिंदी आशुलिपि में प्रशिक्षित हों और अपना अधिकतर कार्य हिंदी में करें।

21. विभागीय बैठकों की कार्यसूची और कार्यवृत्त द्विभाषी रूप से जारी करें।

22. कर्मचारी हिंदी में काम करने से संबंधित प्रोत्साहन योजनाओं में अधिक से अधिक संख्या में भाग लें।

23. प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाए और कार्यशाला में प्रशिक्षित कर्मचारी अपना अधिक से अधिक काम हिंदी में करें।

24. अधिकारियों/कर्मचारियों की मनोवृत्ति बदलने हेतु समय-समय पर संगोष्ठियाँ और समारोहों का आयोजन किया जाए।

25. कार्यालय द्वारा कोई भी प्रकाशन केवल अंग्रेजी में न निकाला जाए। द्विभाषी प्रकाशनों में हिंदी के पृष्ठों की संख्या अंग्रेजी के पृष्ठों से कम न हो।

26. 'क' और 'ख' क्षेत्रों को भेजे जाने वाले पत्रों के लिफाफे पर पते हिंदी में लिखे जाएं।

27. कुल अनुभागों में से कम से कम 50 प्रतिशत (गैर-तकनीकी) अनुभागों को अपना पूरा काम हिंदी में करने के लिए निर्दिष्ट किया जाए। यदि कार्यालय अधिसूचित है तो कम से कम 75 % अनुभागों को हिंदी में काम करने के लिए विनिर्दिष्ट किया जाए।

28. हिंदी दिवस/हिंदी सप्ताह/पखवाड़े/माह का आयोजन करें और इस दौरान हिंदी में टिप्पण/पत्राचार बढ़ाने हेतु विशेष कदम उठाएँ तथा इसकी समीक्षा करें और यह देखें कि इस आयोजन के दौरान हिंदी टिप्पण/पत्राचार में कितने प्रतिशत वृद्धि हुई है।

उपाधियाँ और डिप्लोमा

Bachelor of Business Administration (BBA)	व्यवसाय प्रशासन स्नातक
Bachelor of Adult Education (B.A.Ed.)	प्रौढ़ शिक्षा स्नातक
Bachelor of Agriculture (B. Agri.)	कृषि स्नातक
Bachelor of Applied Arts (B.A.A.)	अनुप्रयुक्त कला स्नातक
Bachelor of Architecture (B. Arch.)	वास्तु-कला स्नातक
Bachelor of Arts (B.A.)	कला स्नातक
Bachelor of Arts (Honours) (B.A. Hons.)	कला स्नातक (प्रवीण)
Bachelor of Arts (Rural Studies) B.A. (R.S.)	कला स्नातक (ग्रामीण अध्ययन)
Bachelor of Arts (Special Education) (B.A. Spl. Ed.)	कला स्नातक (विशेष शिक्षा)
Bachelor of Arts in Music (B.A. (Music))	कला स्नातक (संगीत)
Bachelor of Ayurvedic Medicine & Surgery (B.A.M.S.)	आयुर्वेद कायचिकित्सा तथा शल्य चिकित्सा स्नातक
Bachelor of Business Management (B.B.M.)	व्यवसाय प्रबंधन स्नातक
Bachelor of Chemical Engineering (B.Ch.E.)	रसायन इंजीनियरी स्नातक
Bachelor of Civil Engineering (B.C.E.)	सिविल इंजीनियरी स्नातक
Bachelor of Commerce (B.Com.)	वाणिज्य स्नातक
Bachelor of Mass Communication & Journalism (B.M.C.J.)	जन संचार एवं पत्रकारिता स्नातक
Bachelor of Dance (B. Dance)	नृत्य स्नातक
Bachelor of Dental Surgery (B.D.S.)	दंत शल्य चिकित्सा स्नातक
Bachelor of Education	शिक्षा स्नातक
Bachelor of Fine Arts (B.F.A./B.Fine)	ललित कला स्नातक
Bachelor of Laws (LL.B.)	विधि स्नातक
Bachelor of Library and Information Science (B. Lib. & I.Sc.)	पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान स्नातक
Bachelor of Library Science (BLS)	पुस्तकालय विज्ञान स्नातक
Bachelor of Medicine and Bachelor of Surgery (M.B.B.S.)	आयुर्विज्ञान तथा शल्य-चिकित्सा स्नातक
Bachelor of Physical Education (B.P.Ed.)	शारीरिक शिक्षा स्नातक
Bachelor of Science (B.Sc.)	विज्ञान स्नातक
Bachelor of Teaching (B.T.)	अध्यापन स्नातक
Bachelor of Technology (B. Tech.)	प्रौद्योगिकी स्नातक
Diploma in Health Education (D.E.H.)	स्वास्थ्य शिक्षा डिप्लोमा
Diploma in Painting	चित्रकला डिप्लोमा
Diploma in Physical Education (D.P.E.)	शारीरिक शिक्षा डिप्लोमा
Diploma in Elementary Education (D. El. Ed.)	प्रारंभिक शिक्षा डिप्लोमा
Master of Arts (M.A.)	कला निष्णात
Master of Computer Applications (M.C.A.)	कंप्यूटर अनुप्रयोग निष्णात
Master of Home Science (M.H.Sc.)	गृहविज्ञान निष्णात
Master of Education (M.Ed.)	शिक्षा निष्णात
Post Graduate Diploma in Translation (PGDT)	अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

वाक्यांश और अभिव्यक्तियां

Above mentioned	उपर्युक्त
A brief note is placed below	संक्षिप्त नोट नीचे रखा है
According to the rules in vogue	प्रचलित नियमों के अनुसार
Acknowledge receipt of the letter	पत्र की पावती भेजें
Action may be taken as proposed	यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए
Advise accordingly	तदनुसार सलाह दें
Approval may be accorded	अनुमोदन प्रदान कर दिया जाए
Approved as proposed	यथाप्रस्तावित अनुमोदित
As per details below	नीचे लिखे ब्योरे के अनुसार
As per instruction	अनुदेशानुसार
Balance in hand	हाथ शेष, रोकड़ शेष
Checked and found correct	जांच की और सही पाया
Commutation of pension	पेन्शन का संराशीकरण
Consequent upon	के परिणामस्वरूप
Copy enclosed for ready reference	तत्काल संदर्भ के लिए प्रतिलिपि संलग्न
Delegation of financial powers	वित्तीय शक्तियों का प्रत्यायोजन
Draft reply is put up for approval	उत्तर का प्रारूप अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है
Duly filled in	विधिवत भरा हुआ
Eligible member of family	परिवार का पात्र सदस्य
Expedite action	कार्रवाई शीघ्र करें
Ex-post facto sanction	कार्योत्तर मंजूरी, कार्योत्तर संस्वीकृति
From time to time	समय-समय पर
Funds are available within sanctioned budget	संस्वीकृत बजट में निधि उपलब्ध है
Give details	ब्योरा दें
I am directed to state that	मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि
If approved, a letter will be sent on the above line	यदि अनुमोदन करें तो उपर्युक्त सुझाव के अनुसार पत्र भेजा जाएगा
In compliance with	का पालन करते हुए, के अनुपालन में
In continuation of this office letter no....	इस कार्यालय के पत्र संख्या..... के क्रम में
In favour of	के पक्ष में, के नाम से
In lieu of	के बदले में
In place of	के स्थान में, के स्थान पर
In supersession of	का अधिक्रमण करते हुए
In view of	को ध्यान से देखते हुए
is self-explanatory	स्वतः स्पष्ट है
It has been noticed that	यह देखा गया है कि
Keeping in view	को ध्यान में रखते हुए
Last pay certificate (L.P.C.)	अंतिम वेतन प्रमाणपत्र

Latest by……..	अधिक से अधिक..... तक
Leave travel concession	छुट्टी यात्रा रियायत
Letter of acknowledgement	पावती पत्र
Letter of authority	प्राधिकार-पत्र
Matter is under consideration	मामला विचाराधीन है, विषय विचाराधीन है
May be approved	अनुमोदित किया जाए
May be passed for payment	भुगतान के लिए पास करें
May be treated as urgent	इसे अति आवश्यक समझा जाए
May please see	कृपया देखें
Net qualifying service	निवल अर्हक सेवा
No action required	कोई कार्रवाई नहीं, किसी कार्रवाई की आवश्यकता नहीं
No demand certificate(= no dues certificate)	बेबाकी प्रमाणपत्र
No funds are available	निधि उपलब्ध नहीं है
Non-admissibility of pension	पेन्शन की अस्वीकार्यता
Non qualifying service	अनर्हक सेवा
No objection certificate	अनापत्ति प्रमाणपत्र
Noted for future guidance	भावी मार्गदर्शन के लिए नोट किया गया
On account of	के कारण
On compassionate grounds	अनुकंपा के आधार पर
On due date	नियत तारीख को
On no account	किसी भी अवस्था में नहीं
On or after the day	उस दिन या उसके पश्चात
On receipt of	के मिलने पर
On the subject noted above	उपर्युक्त विषय पर
Option for pension	पेन्शन का विकल्प
Order may be issued	आदेश जारी कर दिया जाए
Otherwise action will be taken against him	अन्यथा उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी
Paper under consideration(P.U.C.)	विचाराधीन कागज
Payable amount of pension	पेन्शन की देय राशि
Payable till death or remarriage whichever is earlier	पुनर्विवाह अथवा मृत्यु जो पहले हो, तक देय
Please acknowledge receipt	कृपया पावती भेजें, कृपया प्राप्ति-सूचना दें
Please comply before due date	कृपया नियत तारीख से पहले इसका पालन किया जाए
Please discuss	कृपया चर्चा कीजिए
Please hand over your charge to Shri……..	कृपया अपना कार्यभार श्री..... को सौंप दें
Please put up with previous papers	कृपया इसे पिछले कागज-पत्रों के साथ प्रस्तुत करें
Please sign in Hindi	कृपया हिंदी में हस्ताक्षर करें
Please submit your explanation on or before	कृपया अपना जबाब तारीख..... को या इससे पहले दें
Proportionate share of pensionary liability	पेन्शन देयता/दायित्व का आनुपातिक भाग/अंश
Pro-rata rate of pension	पेन्शन की यथा अनुपात दर
Quick disposal of claim	दावे का शीघ्र निपटान

Reference is invited to	को देखिए, को देखने का कष्ट करें
Reinstated in service	नौकरी बहाल की गई
Reminder may be sent	अनुस्मारक भेजा जाए
Required information is furnished herewith	अपेक्षित सूचना इसके साथ प्रस्तुत है
Sanctioned as proposed	यथाप्रस्तावित संस्वीकृत
Settlement of pension claim	पेन्शन दावे का निपटारा
Show cause as to why strict action should not be taken	कारण बताएं कि सख्त कार्रवाई क्यों न की जाए
Shri …….is offered a post ……..	श्री..... को ..... पद पर नियुक्ति का प्रस्ताव भेजा जाता है
Specific reason may be given	विशिष्ट कारण दें
Subject to……..	के अधीन, बशर्ते कि
Submitted for approval	अनुमोदनार्थ प्रस्तुत, अनुमोदन के लिए प्रस्तुत
Submitted for information	सूचनार्थ प्रस्तुत
Submitted for perusal	अवलोकनार्थ प्रस्तुत
Such action as may be deemed necessary	ऐसी कार्रवाई जो आवश्यक समझी जाए
Tenders have been invited	निविदाएं आमंत्रित की गई हैं, टेंडर मंगाए गए हैं
The file in question is placed below	अपेक्षित फाइल नीचे रखी है
This has reference to this office earlier correspondence	यह इस कार्यालय के पिछले पत्र-व्यवहार के संदर्भ में है
This is in accordance with the extant rules	यह वर्तमान नियमों के अनुसार है
This is not admissible under the rules	यह नियमों के अधीन स्वीकार्य नहीं है
This is to certify	प्रमाणित किया जाता है
This may please be approved	कृपया इसे अनुमोदित किया जाए
Through proper channel	उचित माध्यम से
Till further orders	अगले आदेश तक
Timely compliance may be ensured	समय पर अनुपालन सुनिश्चित किया जाए
To the best of knowledge and belief	जहां तक पता है और विश्वास है
Under consideration	विचाराधीन
Under his signature and seal	उनके हस्ताक्षर एवं मुहर सहित
Under intimation to this office	इस कार्यालय को सूचित करते हुए
Under suspension	निलंबनाधीन
Under the auspices of	के तत्वाधान में
Unless the context otherwise required	जब तक प्रसंग के अनुसार अन्यथा अपेक्षित न हो
Until further order (s)	अगले आदेश होने तक, दूसरा आदेश मिलने तक
Verification of service	सेवा का सत्यापन
Verified and found correct	पड़ताल की और ठीक पाया
Vide letter no…	पत्रांक....देखिए, पत्र संख्या.... देखिए
We are not concerned with this	इसका हमसे संबंध नहीं है
We need not pursue the matter further	हमें इस विषय पर और कार्रवाई करने की आवश्यकता नहीं है
Whichever is earlier	जो भी पहले हो, जो भी पहले घटित हो
Widow's pension	विधवा पेन्शन
Will you please state	कृपया बताएं

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

1. अध्यक्ष : श्री स्वप्नेश कुमार मल्होत्रा, सचिव, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

2. सदस्य सचिव: श्री जी.एस.आर.के.वी. शर्मा, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, प.ऊ.शि.सं.

सदस्य:

1.	श्री कृष्ण शर्मा के.जे.वी.वी.	प्रधानाचार्य एवं प्रमुख, शै.इ., प.ऊ.शि.सं.
2.	सुश्री मीना हिंगोराणी	प्रशासनिक अधिकारी-।।।, प.ऊ.शि.सं., मुंबई
3.	श्री लोकेश जोशी	प्रधानाचार्य, प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई
4.	श्री सी.एन. श्रीनिवासा राघवन	उप-प्रधानाचार्य, प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई
5.	श्री प्रसाद गोखले	उप-प्रधानाचार्य, प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई
6.	श्रीमती ज्योति अविनाश पेंटे	लेखा अधिकारी, प.ऊ.शि.सं.
7.	श्री ए. गणेसन	प्रशासनिक अधिकारी-।।, प.ऊ.शि.सं., मुंबई
8.	श्री पी. रवि बाबु	सहायक लेखा अधिकारी, प.ऊ.शि.सं., मुंबई
9.	श्रीमती शोभना डी. पनीकर	सहायक प्रशासनिक अधिकारी, प.ऊ.शि.सं., मुंबई
10.	श्रीमती भानुमति गणेसन	सहायक लेखा अधिकारी, प.ऊ.शि.सं., मुंबई
11.	श्री पी. रवि बाबु	सहायक लेखा अधिकारी, प.ऊ.शि.सं., मुंबई
12.	श्रीमती ऊषा वल्लभन	मुख्याध्यापिका, प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई
13.	श्रीमती रजनी अग्निहोत्री	मुख्याध्यापिका, प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई
14.	श्रीमती डी.वी.एस. पद्मलता	मुख्याध्यापिका, प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई
15.	श्रीमती सुनीता रानी कुलपति	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका, प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई
16.	श्री रमेश चंद	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक, प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई
17.	श्री बद्री प्रसाद	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक, प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई
18.	श्रीमती सावित्री तिवारी	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका, प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई
19.	श्री विजय राम	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक, प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई
20.	श्री नूतन मिश्रा	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक, प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई
21.	श्री योगेन्द्र कुमार	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक, प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई
22.	श्रीमती अमिता प्रधान	प्राथमिक अध्यापिका, प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई
23.	श्रीमती मंगला दिलीप खंडीझोड़	प्राथमिक अध्यापिका, प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई
24.	श्री श्याम बाबू	कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, प.ऊ.शि.सं., मुंबई
25.	श्री दिलीप कुमार दास	कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, प.ऊ.शि.सं., मुंबई

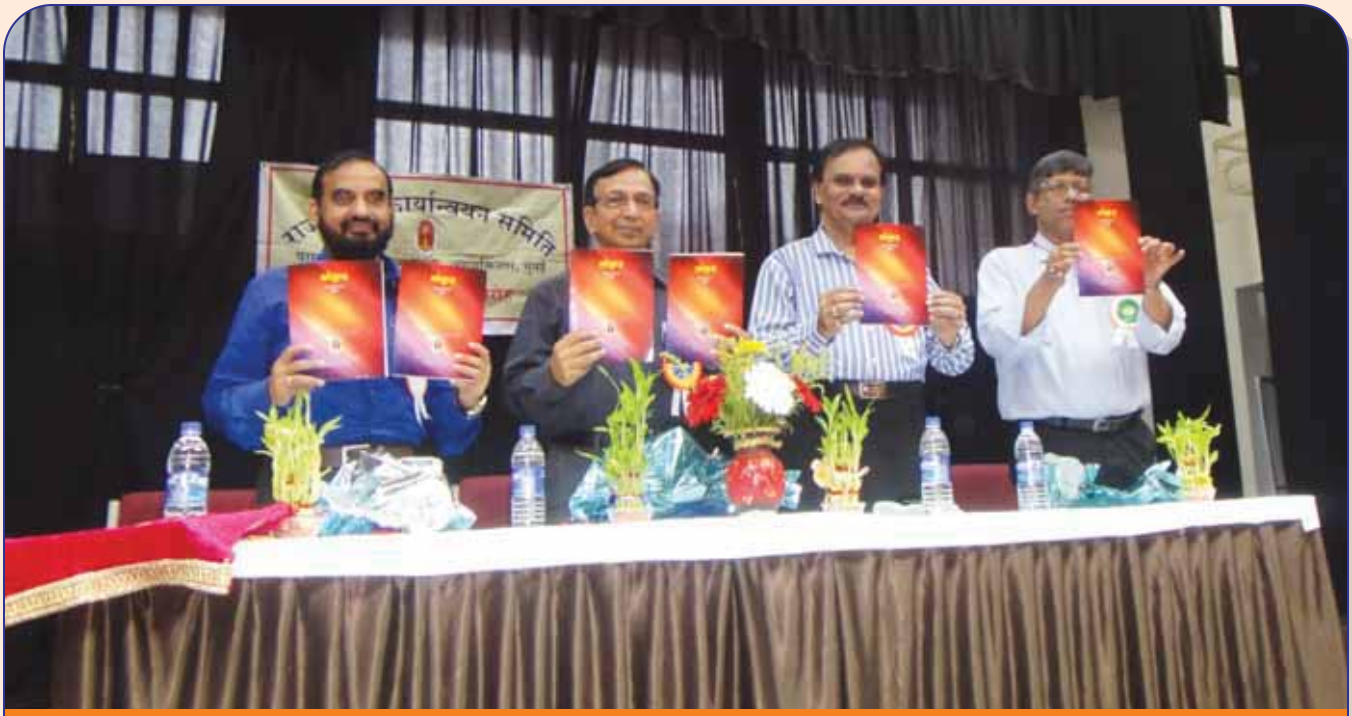

'अंकुर' आठवां अंक का विमोचन करते गणमान्य

हिंदी पखवाड़ा समापन और पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में उपस्थित सहभागी

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था, मुंबई द्वारा प्रकाशित
केंद्रीय कार्यालय, वेस्टर्न सेक्टर, प.ऊ.कें.वि.-6, अणुशक्तिनगर, मुंबई-400094
दूरभाष नं.: 2556 5049 / 2550 3328 / 2557 1501 / 2550 3310
वेबसाइट : www.aees.gov.in
ईमेल : chairman-aees@nic.in, secretary-aees@nic.in
cao-aees@nic.in, rajbhasha-aees@nic.in